

अक्टूबर 2023 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 01 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत



व्यक्ति और समाज
संतुलन सफलता का राज



अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी
का 110 वां जन्म दिवस

अणुव्रत दिवस



15 नवम्बर 2023 | कार्तिक शुक्ला द्वितीया

संयम के प्रतीक स्वरूप

उपवास

आइए! इस दिन उपवास रखकर
संयम को अपने जीवन में प्रतिष्ठापित करें।



अणुव्रत विश्व
भारती सोसायटी
www.anuvibha.org

इस अभियान से जुड़ने के लिए सम्पर्क सूत्र



+91- 91166 34512, +977 984-2055685



अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

(21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024)

अक्टूबर 2023 में

अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों के लिए करणीय विशेष कार्य

अणुव्रत अधिवेशन में सहभागिता

18 से 20 नवम्बर नंदनवन, मुंबई में आयोजित हो रहे 74वें अणुव्रत अधिवेशन में सहभागिता और आवश्यक तैयारी।

वार्षिक प्रगति-प्रतिवेदन

प्रगति-प्रतिवेदन 15 अक्टूबर तक अणुविभा दिल्ली कार्यालय अवश्य भेज दें। अन्यथा मूल्यांकन सम्भव नहीं।

अणुव्रत दिवस कार्यक्रम

आचार्य श्री तुलसी के 110वें जन्मदिन 15 नवम्बर को संयम के प्रतीक स्वरूप अधिकाधिक उपवास हों, यह सलक्ष्य प्रयास।

पत्रिका प्रसार

अणुव्रत अधिवेशन से पूर्व विशेष योजना का लाभ उठाकर सदस्यता अभियान को गति देना, देखें पृष्ठ सं 51

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट

जिला व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का दिशानिर्देशानुसार आयोजन करना।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

1 से 7 अक्टूबर तक इस महत्वपूर्ण सप्ताह का रचनात्मक व परिणाममूलक कार्यक्रमों के साथ सफल आयोजन करना।

अणुव्रत संकल्प शृंखला

अधिक से अधिक लोगों को अणुव्रत आचार संहिता से परिचित कराते हुए संकल्प पत्र भरवाना।

अणुव्रत गीत महासंगान

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम की रूपरेखा को समझ कर प्रारंभिक तैयारियाँ करना, देखें पृष्ठ सं 53

नियमित प्रकल्प

विभिन्न अणुव्रत प्रकल्पों एवं अमृत महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करना।

अणुव्रत अर्थ संबल अभियान में सहयोग करें



- संयोजक निर्मल गोखरा (9414115066)
- दक्षिणांचल प्रभारी सुरेश दक (9448383315)
- नेपाल प्रभारी ज्योति कुमार बेंगानी (9851020595)
- मध्यांचल प्रभारी संजय जैन (9215517430)
- पूर्वांचल प्रभारी प्रदीप सिंधी (9831085087)
- उत्तरांचल प्रभारी मुकेश भादानी (7639999764)

प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली "अणुव्रत ई-पत्रिका" को अधिक से अधिक व्हाट्सएप ग्रुपों में भेज कर लोगों को अणुव्रत जीवनशैली से जोड़ने का प्रयास करें। "अणुव्रत ई-पत्रिका" निःशुल्क मंगवाने हेतु 9116634512 पर व्हाट्सएप मैसेज करें - "ई-पत्रिका"।



वर्ष 69 • अंक 01 • कुल पृष्ठ 60 • अक्टूबर, 2023

■ ■ ■
 अणुव्रत आंदोलन वास्तव में
 असाम्प्रदायिक आंदोलन है
 और उसको हमारी धर्म निरपेक्ष
 सरकार का भी समर्थन मिलना
 चाहिए। यदि नयी पीढ़ी को
 इस आंदोलन के मूलभूत
 सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाये तो
 वे बहुत अच्छे नागरिक बन
 सकेंगे और वास्तव में विश्व-
 नागरिक कहलाने के
 अधिकारी हो सकेंगे। इस
 प्रकार का आंदोलन राष्ट्रीय
 एकता के ध्येय को अधिक
 शीघ्रतापूर्वक सिद्ध कर
 सकेगा।

-प्रोफेसर एन. वी. वैद्य

■ ■ ■

सम्पादक
संचय जैन

सह-सम्पादक
मोहन मंगलम

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष राय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

{ अविनाश नाहर, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा }

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	- ₹ 60	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
एक वर्षीय	- ₹ 750	केनरा बैंक
त्रैवर्षीय	- ₹ 1800	A/c No. 0158101120312
पंचवर्षीय	- ₹ 3000	IFSC : CNRB0000158
दसवर्षीय	- ₹ 6000	
योगक्षेमी (15 yrs.)	- ₹ 15000	

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::



इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002



anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org

दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512



अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाठ्य

■ समाज संरचना का आधार आचार्य तुलसी	06
■ प्रगति के स्वर्ण सूत्र आचार्य महाप्रज्ञ	10
■ अनुशासन में रहो आचार्य महाश्रमण	14

आलेख

■ सात्त्विक प्रवृत्तियों से जीवन बनाएं सार्थक सुज्ञान मोदी	18
■ अहिंसा का अर्थ... राजेन्द्र बोड़ा	20
■ फूल मुरझा जाते हैं! जतनलाल रामपुरिया	22
■ संस्कार बनाते हैं जीवन... डॉ. शुद्धात्म प्रकाश जैन	24
■ युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'	26
■ The Yoga-Educated Person Dr. Narendra Sharma 'Kusum'	27

कहानी

■ ...बस थोड़ा-सा प्यार एस.भाग्यम शर्मा	30
---	----

कविता

■ प्रार्थना निष्फल न होगी भारती जैन दिव्यांशी	13
--	----

लघुकथा

■ कीमती चीज अखिलेश श्रीवास्तव चमन	25
■ संपादकीय	05
■ बापू की वाणी	16
■ संयम दिवस	34
■ गौरवशाली अतीत के झरोखे से...	35
■ कदमों के निशां	41
■ अणुव्रत बालोदय किडजोन	42
■ एलिवेट संगोष्ठी	43
■ अणुव्रत संकल्प यात्रा	43
■ अणुव्रत चेतना दिवस	43
■ अणुव्रत गीत महासंगान	44
■ पश्चिमांचल अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी	46
■ जीवन विज्ञान कार्यक्रम	47
■ बीकानेर संभाग अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी	48
■ अणुव्रत वाटिका शुभारंभ	49
■ अणुव्रत बालोदय किडजोन शुभारंभ	49
■ अणुव्रत व्याख्यानमाला	50
■ अणुव्रत बालोदय शिविर	52
■ अणुव्रत समाचार	54
■ अणुव्रत की बात	57

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वारस्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। छाट-सेप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।



समाज और इंसान के बीच का छंद

समाज और इंसान
के बीच का द्रन्दू
अन्तर और बाह्य जगत
का तिलस्म
उतना ही चिरन्तन है,
उतना ही पुरातन है
जितनी कि सभ्यता सनातन है।

समाज की मूल संरचना ही
मजबूर करती है
बाहर देखने के लिए
बता कर उसे
वास्तविक जगत
इठलाती है
उसकी चकाचौंध पर,
और रोकती है
भीतर झाँकने से।
झुरलाती है
भीतरी दुनिया के अस्तित्व को
उसके महत्व को।

बाहर और भीतर का
यह संघर्षण
अनवरत जारी है,
परतों में छुपे सत्य को
अनावृत करने का
आकर्षण जारी है!

जिस दिन
बाहर के विकर्षण से
अन्दर का गुरुत्वाकर्षण
जीत जाएगा,
सामाजिकता की
चादर ओढ़ कर सोया
मेरे अन्दर का इंसान
जाग जाएगा,
उस दिन अध्यात्म में
मेरा प्रवेश हो जाएगा,
पर अफसोस!
द्रन्दू दुनिया में
फिर भी जारी रहेगा।

इं

सान समाज की महत्वपूर्ण और केंद्रीय इकाई है। इंसान समाज को बनाता है, चलाता भी है। दूसरी तरफ, इसका विलोम भी उतना ही सत्य प्रतीत होता है - समाज इंसान को बनाता है, चलाता भी है। यही अंतर्निर्भरता और अंतर्विरोध समाज और इंसान के मध्य सम्बन्ध को जटिल बनाते हैं। यह समस्या आज की नहीं है। संभवतः जब से समाज की अवधारणा को पोषण मिला, तब से ही इंसान इस समस्या से दो-चार होता रहा है। इतिहास गवाह है कि जिस व्यक्ति ने इस पहली को सुलझा लिया, उसने स्वयं के जीवन को तो धन्य किया ही, महामानव बन कर समाज के लिए भी पथदर्शक बन गया।

इंसान और समाज के सम्बन्धों की जटिलता का समाधान बहुत अहम है क्योंकि इसके बिना न समाज का ढाँचा सुचारू चल सकता है और न ही इंसान अपने जीवन को सही राह में गतिशील बना सकता है। यह सच है कि महापुरुषों ने अपने अनुभव और ज्ञान के बल पर इस समस्या का समाधान ढूँढ़ा और उसे आमजन को उपलब्ध कराया, लेकिन यह भी एक सच्चाई है कि समाधान को सही परिप्रेक्ष्य में जानना और समझना आसान नहीं है और जान-समझ कर भी उस राह पर चलना तो और भी अधिक दुष्कर है।

आधुनिक युग के सौ-दो सौ सालों को छोड़ दें तो पहले के समाज बहुत छोटे होते थे। एक समाज दूसरे समाज से बहुत अधिक प्रभावित भी नहीं होता था। हर समाज की अपनी समझ होती थी, अपनी सहिता और मूल्य होते थे जिनका जनता पर अपना प्रभाव होता था। भौगोलिक दूरियाँ और ज्ञान का सीमित प्रवाह इन्हें बाहरी प्रभावों से सुरक्षा-कवच प्रदान करते थे। इसीलिए सामाजिक संरचनाएँ छोटे-मोटे आघात झेल कर भी अपना स्वरूप बनाये रखती थीं।

लेकिन आज हम एक वैश्विक समाज में जी रहे हैं। दूरियाँ सिमट गयी हैं और ज्ञान हमारी अंगुलियों पर उपलब्ध है। सामाजिक मूल्य वर्ण-संकर होते चले जा रहे हैं। आपके और आपके पड़ोसी के संस्कारों और मूल्यों में कोई समानता हो, यह अब आवश्यक नहीं रहा। पड़ोस क्यों, एक परिवार में भी अलग संस्कार और अलग मूल्य पनप रहे हों, तो आश्वर्य नहीं होना चाहिए। यह आज की सच्चाई है जिसे स्वीकार करके ही हम समाज और इंसान के मध्य के सम्बन्धों की जटिलताओं को नये परिप्रेक्ष्य में परिभाषित, व्याख्यायित और समाहित कर सकते हैं।

महापुरुष हर युग में जन्म लेते हैं। उनके प्रभाव से समाज और इंसान दोनों अभिप्रेरित होते हैं और समाधान के मार्ग पर चलने को प्रशस्त होते हैं। लेकिन, तेजी से बदलते सामाजिक और इंसानी समीकरण अब किसी भी प्रभाव को सीमित करने को उद्यत रहते हैं। व्यक्ति का अपना विशुद्ध विवेक ही आशा की किरण है जो सभी विपरीत परिस्थितियों और तेज-रफ्तार जिंदगी के बावजूद समाधान ढूँढ़ने में सक्षम है। महापुरुष उसे हिम्मत और रोशनी दे सकते हैं, चलना तो उसे खुद ही पड़ेगा। और ये सक्षमता मिलती है भीतर से। इंसान भीतर झाँकने के लिए जितनी फुर्सत निकाल सके, उतना वह समाधान के निकट खुद को पाएगा। रास्ता विकट नजर आता है लेकिन कदम बढ़ाना यदि स्वभाव बन जाये तो आसान शब्द भी छोटा नजर आता है।

सं. जै.

sanchay_avb@yahoo.com



अणुव्रत | अक्टूबर 2023 | 05

समाज संरचना का आधार

समाज के लिए एक अलग प्रकार के सांचे की जरूरत है। वह सांचा है अणुव्रत आचार सहित। मेरा यह बहुत वर्षों का सपना है। जिस दिन समाज का एक-एक व्यक्ति या एक-एक परिवार अणुव्रती हो जाएगा, उस दिन एक स्वस्थ समाज या अहिंसक समाज की कल्पना साकार हो सकेगी।

व्य कि समाज का घटक तत्व है। समाज की संरचना से राष्ट्र प्रभावित होता है। राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव विश्व पर होता है। इस पूरे विश्व की सबसे छोटी इकाई है व्यक्ति। व्यक्ति स्वस्थ होता है तो समाज की स्वस्थता बढ़ती है। स्वस्थ सामाजिकता से राष्ट्र का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। संसार में जितने राष्ट्र हैं, वे सब स्वस्थ हों तो एक स्वस्थ विश्व की संरचना संभव है। यह बात वैचारिक स्तर पर जितनी सुखद प्रतीत होती है, क्रियात्मक स्तर पर उतनी ही कठिन है। कठिन क्या, असंभव भी मान ली जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अनन्तकाल से चली आ रही विश्व की शृंखला में संभवतः कोई भी समय ऐसा नहीं था, जब इस धरती और आकाश का प्रत्येक अणु स्वस्थ रहा हो। काल का रथ अब भी थमा हुआ नहीं है। उसका अन्तिम छोर कहीं दिखायी ही नहीं दे रहा है। ऐसी स्थिति में निर्वाद सच्चाई यह है कि यह विश्व एक शाश्वत तत्व है। इसमें स्वस्थता और अस्वस्थता की सत्ता सदा रही है। इसी कारण 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'विश्वैकनीडम्' जैसी आकर्षक अवधारणाएं अब तक भी प्रायोगिक रूप नहीं ले पायी हैं। बहुत कठिन है संसार को स्वस्थ करने की बात। इसलिए हम स्वस्थ संसार की संरचना का सपना देखने की भूल नहीं करेंगे।

सफलता का नया मानक

स्वस्थ संसार की संरचना का संकल्प लेकर कोई भी चलता है, वह निराशा के अतिरिक्त कुछ भी हस्तगत नहीं कर सकता क्योंकि यह अतिवाद है। अतिवाद और निराशा का आपस में गहरा गठबंधन है। संसार क्या, किसी राष्ट्र को भी सुचित्तित सांचे में ढाला जा सकता है क्या? यदि ऐसा होता तो बड़ी-बड़ी क्रान्तियां असफल नहीं होतीं। सोवियत संघ के विघटन ने साम्यवादी राष्ट्र व्यवस्थाओं पर जो प्रश्नचिह्न लगाया है, उसका उत्तर खोजने में भी कई दशक बीत जाएंगे। इसलिए मैं किसी स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण का दावा नहीं करता। शहरों और गाँवों के निर्माण की योजनाएं भी चलती हैं, किन्तु उनका सीधा सम्बन्ध बस्तियों, उपनगरों, सड़कों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों आदि की संरचना से है। इस काम में भी कार्यकर्ताओं की प्रामाणिकता प्रश्नों के धेरे में रहती आयी है।

मेरी रुचि स्वस्थ समाज की संरचना में है। इस दृष्टि से मैंने काम शुरू किया। काम आज भी चल रहा है। प्रश्न हो सकता है कि मुझे इस काम में सफलता मिली है क्या? यह सफलता मिलती तो मेरा काम पूरा हो जाता। यदि अब तक सफलता नहीं मिली है तो भविष्य में कभी मिलने की भी नहीं है। ऐसी स्थिति में





संसार में अहिंसा का अस्तित्व है तो हिंसा का भी अस्तित्व है। दोनों साथ-साथ रहते हैं। नितान्त हिंसक या नितान्त अहिंसक समाज की खोज की जाये तो खोजने वाला बहुत बड़ी कठिनाई में आ जाएगा। समाज में अहिंसा का पल्ला भारी हो और हिंसा का पल्ला हल्का हो तो अहिंसा के कार्यक्रम को असफल नहीं मानना चाहिए।

उस दिशा में समय और श्रम लगाने का औचित्य क्या है? इस प्रकार के प्रश्नों का सामना मुझे बार-बार करना पड़ता है। इस सन्दर्भ में मेरा अभिमत यह है कि सौ फीसदी सफलता का रंगीन सपना मेरी आँखों में नहीं है। यदि किसी काम में पचास या पचपन प्रतिशत सफलता भी मिलती है तो उसे असफल कैसे माना जा सकता है? क्योंकि सफलता का पल्ला भारी है। समाज की स्वस्थता और अस्वस्थता के दो पल्लों में जब तक स्वस्थता का पल्ला भारी है, स्वस्थ समाज की संरचना का सपना धूमिल नहीं हो सकता। ऐसा होता तो कोई सपना कभी सफल हो ही नहीं पाता।

इस संसार में अहिंसा का अस्तित्व है तो हिंसा का भी अस्तित्व है। हिंसा और अहिंसा दोनों साथ-साथ रहते हैं। नितान्त हिंसक या नितान्त अहिंसक समाज की खोज की जाये तो खोजने वाला बहुत बड़ी कठिनाई में आ जाएगा। ऐसे कालखण्ड की खोज भी संभव प्रतीत नहीं होती, जिसमें हिंसा या अहिंसा का नामशेष हो जाये। ऐसी स्थिति में अहिंसा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों की सफलता का माप सापेक्ष दृष्टिकोण से ही किया जा सकता है। समाज में अहिंसा का पल्ला भारी हो और हिंसा का पल्ला हल्का हो तो अहिंसा के कार्यक्रम को असफल नहीं मानना चाहिए।

मनुष्य की तीन श्रेणियां

मनुष्य अच्छा या बुरा कोई भी काम करता है, उसके पीछे अभिप्रेक तत्त्व है कामना। कामना न हो तो किसी कार्य में प्रवृत्ति कैसे होगी? यह एक सामान्य बात है कि संसारी प्राणी कामनाओं के जाल से मुक्त नहीं होता। कामना के दो रूप हैं - प्रशस्त और अप्रशस्त। प्रशस्त कामना विकास की सूचक है। जिस व्यक्ति की महत्वाकांक्षा जितनी अधिक बड़ी होगी, वह उतना ही बड़ा काम कर सकेगा। जिसमें कुछ करने या बनने की इच्छा ही नहीं है, वह अपनी कर्मशक्ति को कुठित कर लेता है।

कुछ लोग गीता के निष्काम कर्म की बात करते हैं। जैन दर्शन में भी आकांक्षा रहित करणी को बहुत महत्व दिया गया है। भगवान महावीर ने कहा है - साधक तपस्या या साधना करता है। उसके सामने लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। वह इस लोक और परलोक सम्बन्धी भौतिक लालसाओं के निमित्त साधना न करे। पूजा-प्रतिष्ठा के लिए साधना न करे। साधना के साथ कामना का योग होते ही उसकी उत्कृष्टता के सामने प्रश्नचिह्न लग जाता है, पर ऐसी निष्काम साधना हर व्यक्ति नहीं कर सकता। निष्कामता के शिखर पर वीतराग ही आरोहण कर सकता है। वीतराग वह होता है, जिसके लिए कुछ भी पाना शेष नहीं रहता। और तो क्या, मोक्ष की कामना भी निःशेष हो जाती है। इसीलिए वीतराग को पूर्णकाम कहा जाता है।

कामनाओं का दलदल साधारण व्यक्ति को फँसा लेता है और अकाम वह हो नहीं पाता। ऐसी स्थिति में उसके लिए बीच का मार्ग श्रेयस्कर है। अतिकाम और अकाम - ये दोनों अतियां हैं। अतिकाम बर्बादी का रास्ता है। अकाम विकास में बाधा की स्थिति है। इन दोनों के मध्य में रहने वाला व्यक्ति अल्पकाम होगा। उसकी कामनाएं सीमित और नियंत्रित रहेंगी। ऐसे व्यक्ति के लिए अल्पेच्छ शब्द का प्रयोग आता है। इस भूमिका पर मनुष्य जाति की तीन श्रेणियां होती हैं -

अनिच्छ : जिसकी कोई इच्छा नहीं होती।

महेच्छ : जिसकी इच्छा का कभी अन्त नहीं होता।

अल्पेच्छ : जिसकी इच्छाएं सीमित होती हैं।

जिस व्यक्ति के मन में किसी प्रकार की इच्छा शेष नहीं रहती, वह व्यक्ति महान होता है। ऐसे व्यक्ति के लिए ही हमारे लोक-कवियों ने शाहंशाह शब्द का प्रयोग किया है --

चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह।

जिसको कुछ न चाहिए, सो शाहन के शाह ॥

धरतीपुत्रों में ऐसे व्यक्ति की गणना की जाये तो उनकी संख्या कितनी होगी? बहुत अधिक तो हो ही नहीं सकती। अंगुलियों पर गिने जा सकें, इतने व्यक्ति मिल जाएं तो भी संतोष की बात है। इस कोटि के व्यक्ति ही वीतराग या वीतरागता के साधक हो सकते हैं।

महेच्छ व्यक्तियों की आकांक्षा इतनी विस्तृत होती है कि उनका कोई छोर ही दिखायी नहीं देता। "इच्छा हु आगाससमा



अणंतिया"- यह महावीर वाणी ऐसे व्यक्तियों की ओर ही संकेत कर रही है। घनीभूत इच्छाएं व्यक्ति को मूढ़ बना देती हैं। जितना लाभ होता है, उतना लोभ बढ़ता जाता है। लोभी और कंजूस व्यक्ति वैभव के शिखर पर खड़ा होकर भी भरपेट भोजन नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति निरन्तर संकलेश में जीने के लिए विवश रहता है। जैन दर्शन में ऐसे व्यक्ति को मिथ्यादृष्टि कहा गया है।

वीतरागता हर धार्मिक व्यक्ति का आदर्श हो सकता है, पर उसकी साधना परिपाक तक पहुँचने में बहुत समय ले लेती है। मिथ्या दृष्टिकोण वीतरागता के मार्ग की बाधा है। जब तक व्यक्ति का दृष्टिकोण सही नहीं होता, वह सम्यक् और असम्यक् की समीक्षा नहीं कर पाता। इसलिए सबसे पहले सम्यक् दृष्टि होना जरूरी है। सम्यक् दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति ही अल्पेच्छ हो सकता है। वह जानता है कि संसार में रहते हुए कामनाओं का अन्त नहीं किया जा सकता। किन्तु कामनाएं व्यक्ति पर हावी हो जाएं, इतनी छूट देने का भी क्या अर्थ है? अल्पेच्छ व्यक्ति दुनियावी व्यवहार का लोप नहीं करता, पर व्यवहारों में आने वाली विकृतियों को रोकने का प्रयास करता है।

कामनाओं के विस्तार का परिणाम

मनुष्य प्रवृत्ति करता है। यह उसकी चिन्ता का विषय नहीं है। उसे चिन्ता रहती है परिणाम की। किसी प्रवृत्ति का परिणाम बुरा आता है, तब वह सजग होता है। यदि प्रवृत्ति से पहले उसके परिणाम पर विचार हो जाता तो संभवतः प्रवृत्ति में ही परिष्कार का लक्ष्य बन जाता। किन्तु हाथ से लाव छूट जाने के बाद क्या हो सकता है? कामनाओं का दास बनने वाला व्यक्ति कभी सोच ही नहीं पाता कि सीमाओं के अतिक्रमण का फल क्या होगा? महावीर वाणी में उसकी स्थिति का चित्रण मिलता है - "कामकामी खलु अयं पुरिसे से सोयति जूरति तिष्पति पिङ्गुति परितप्ति" - यह पुरुष कामकामी है - मनोज्ञ शब्द और रूप की कामना करने वाला है। कामकामी पुरुष शोक करता है, खिन्न होता है, कुपित होता है, आँसू बहाता है, पीड़ा और अनुताप का अनुभव करता है।

ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में जीने के कारण व्यक्ति की मनोवृत्ति में आग्रह आ जाता है। आग्रह जब दुराग्रह का रूप लेता है तो कहर बरपा देता है। कौरवों और पाण्डवों के बीच मनोभेद की स्थिति बहुत जटिल हो गयी। उस समय समझौते का दायित्व श्रीकृष्ण ने अपने ऊपर ले लिया। उन्होंने दोनों पक्षों को आमने-सामने बुलाकर कहा- "दुर्योधन! तुम अपने साम्राज्य का विस्तार करो। पाण्डवों को उससे कोई प्रयोजन नहीं है। उन्हें अपने पाँच टिकाने के लिए जमीन चाहिए। तुम केवल पाँच गाँव पाँचों भाइयों को दे दो। इससे सारी समस्या सुलझ जाएगी।"

दुर्योधन को श्रीकृष्ण का सुझाव प्रिय नहीं लगा। उसकी त्यारियां चढ़ गयीं। वह व्यंग्य में बोला- "हम भाइयों की लड़ाई में आपको पंच किसने बना दिया? मुझे आपकी पंचायती मान्य नहीं है। मैं स्पष्ट घोषणा करता हूँ कि लड़ाई के बिना कुछ नहीं दूँगा। मेरी ओर से पांडवों को आमंत्रण है। वे आएं, लड़ें, जमीन जीतें और

अपने भुजबल से गाँव बसाएं।" ऐसे व्यक्ति समाज में हो जाएं तो जब चाहें महाभारत रचा दें और किसी को शांति से जीने ही नहीं दें। पर क्या कहा जाये, ऐसे व्यक्तियों का भी नाम चलता ही है। जब तक महाभारत रहेगा, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर के साथ दुर्योधन का नाम भी रहेगा।

जब होगा संकल्प का परिपाक

यह संसार है। इसमें बुरे व्यक्ति होते हैं तो अच्छे व्यक्तियों की भी कभी कमी नहीं है। भगवान महावीर के श्रावकों की जीवन गाथा पढ़ें तो उनके प्रति श्रद्धा और आदर के भाव जागते हैं। श्रावक आनन्द, कामदेव, चूलणीपिता, सुरादेव, चुल्शतक, कुण्डकौलिक, सद्वालपुत्र, महाशतक, नन्दिनी पिता और लेतियापिता - इन दस श्रावकों के नाम उपासकदशा सूत्र में मिलते हैं। ये महावीर के प्रमुख श्रावक थे। इनके अपने-अपने व्यवसाय थे। करोड़ों की सम्पत्ति के मालिक थे। सैकड़ों व्यक्तियों के साथ रहते थे। हजारों पशु रखते थे। विपुल वैभव के बीच में रहते हुए भी उनकी कामनाएं कितनी सीमित थीं। पहनने के लिए सीमित कपड़े और सीमित भोजन। दिन भर में एक फल से अधिक नहीं खाना। फलों में एक आँवले से अधिक न खाना। एक अंगोष्ठा। एक जोड़ी चप्पल। और तो क्या, दत्तैन तक की सीमा। व्यक्तिगत भोग के लिए कम से कम। शेष सब कुछ समाज के लिए। ये उत्कृष्ट कोटि के श्रावक कहलाये। ऐसे लोगों के जीवन का व्याख्यान किया गया है। लाखों श्रावकों में दस श्रावकों का उल्लेख उनके वैशिष्ट्य का प्रतीक है। वह वैशिष्ट्य कामनाओं को बढ़ाने से नहीं, सीमित करने से आया है। स्वस्थ समाज की संरचना का यह एक महत्वपूर्ण आधार है।

स्वस्थ समाज संरचना के सन्दर्भ में महावीर के प्रमुख श्रावकों की चर्चा एक आदर्श की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करती है। उस आदर्श तक सैकड़ों-हजारों लोग पहुँच जाएं, यह अति कल्पना है। महावीर-युग में भी उस उल्लेखनीय शृंखला में केवल दस कढ़ियां जुड़ पायीं। इस दृष्टि से यह स्वीकार करने में कोई संकेत नहीं है कि उस कोटि के व्यक्ति श्रावक समाज के शीर्ष पर हो सकते हैं, समाज संरचना के सूत्रधार हो सकते हैं, किन्तु पूरे समाज को उस सांचे में नहीं ढाल सकते।

समाज के लिए एक अलग प्रकार के सांचे की जरूरत है। वह सांचा है अणुव्रत आचार संहिता। मेरा यह बहुत वर्षों का सपना है। जिस दिन समाज का एक-एक व्यक्ति या एक-एक परिवार अणुव्रती हो जाएगा, उस दिन एक स्वस्थ समाज या अहिंसक समाज की कल्पना साकार हो सकेगी। अणुव्रत परिवार योजना का प्रारूप भी इसी पृष्ठभूमि पर तैयार किया गया है। एक से दस, दस से सौ, सौ से हजार, हजार से दस हजार और दस हजार से एक लाख - इस प्रकार बढ़ते हुए अंकों की गुणात्मकता के आधार पर स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प फलवान बन सकेगा। एक व्यक्ति का यह संकल्प जिस दिन जन-जन का संकल्प हो जाएगा, उसके परिपाक से लाखों-लाखों लोग लाभान्वित हो सकेंगे। ■■■





अणुव्रत आंदोलन चुनाव शुद्धि अभियान

सही चयन राष्ट्र का सही निर्माण



*I Vote
For A Strong
India*

मतदाता ध्यान दें...

- भय और प्रलोभन में मतदान न करें।
- मद्य एवं मादक द्रव्यों का प्रतिकार करें।
- चरित्र एवं गुणों के आधार पर मतदान का निर्णय करें।
- जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर मतदान न करें।
- अपराधी एवं भ्रष्टाचार में लिस उम्मीदवार को मतदान न करें।
- हिंसात्मक प्रवृत्तियों में लिस उम्मीदवार को मतदान न करें।
- अवैध मतदान न करें।

आपके अमूल्य वोट का अधिकारी कौन?

- जो ईमानदार हो
- जो चरित्रवान हो
- जो सेवाभावी हो
- जो कार्यनिपुण हो
- जो नशामुक्त हो
- जो स्वच्छ छवियुक्त हो
- जो राष्ट्रहित व लोकहित को सर्वोपरि मानता हो
- जो जाति-सम्प्रदाय से बंधा हुआ न हो

मतदान अवश्य करें,
राष्ट्रीय कर्तव्य का
निर्वहन करें



अनुविभा

अणुव्रत विश्व भारती

राष्ट्रहित में प्रसारित



प्रगति के स्वर्ण सूत्र

प्रगति वही कर सकता है जो अपनी उपयोगिता को बढ़ाता है। जो अपनी उपयोगिता को नहीं बढ़ाता, वह पिछड़ जाता है। जो उपयोगिता को अधिक सक्षम बना लेता है, जिसकी उपयोगिता अनिवार्य हो जाती है, वह आगे बढ़ जाता है। इसलिए प्रगति का महत्वपूर्ण सूत्र है - अपनी उपयोगिता को बढ़ाते रहो।

प्रगति का पहला सूत्र है - "अपने आपको देखो।" आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो। स्वयं को देखो। ज्ञात बहुत थोड़ा है, अज्ञात बहुत अधिक है। जो आदमी गहराई में नहीं जाता, उसे समुद्र का अन्तस्तल नहीं मिलता। मूल्यवान मोती समुद्र में गहरी डुबकी लगाने वाले गोताखोर को ही मिल पाते हैं, समुद्र के टट पर सैर करने वाले को नहीं मिल सकते। किसी खदान पर जाओ, वहाँ मिलेगा पत्थर और धूल। हीरा और पत्रा वहाँ प्राप्त नहीं होता। जो व्यक्ति खदान की गहरी खुदाई में चला जाता है वहाँ उसे हीरे, पत्रों प्राप्त हो सकते हैं। समुद्र की गहराई में अमूल्य चीज मिलती है। खदान की गहराई में बहुमूल्य चीज मिलती है। चेतना की गहराई में भी बहुमूल्य चीज मिलती है। जो व्यक्ति अपनी चेतना की गहराई में नहीं जाता, उसे कुछ भी नहीं मिलता। जो चेतना की सतह पर यात्रा करता है, उसे मिलता है क्रोध, अहंकार और वासनाएँ। वहाँ सार की बात नहीं मिलती।

'अपने आपको देखो', इसका अर्थ है - चेतना की गहराई में प्रवेश करो, अन्तस्तल के गहरे में गोते लगाओ और भीतर जो कुछ छिपा पड़ा है, उसे अनावृत करो, बाहर लाओ और उपयोग करो। अपने आपको देखने वाला सचमुच प्रगति के पथ पर आगे बढ़ जाता है।

महानता अन्तस्तल में छिपी रहती है। क्षुद्रता सतह पर तैरती है। प्रत्येक व्यक्ति में महानता होती है, पर वह सदा छिपी रहती है। जो चेतना की गहराई में गोता नहीं लगाता, वह महानता को उपलब्ध नहीं हो सकता। महान व्यक्तित्व उसी को उपलब्ध होता है जो निरन्तर अपने आपको देखता है और अपनी गहराइयों में डुबकियां लगाता है।

महानता के बाधक तत्त्व

जो व्यक्ति अपने आपको नहीं देखता, वह दूसरों को देखता है। दूसरों को देखना महानता की अनुभूति की सबसे बड़ी बाधा है। क्रोध, अहंकार, माया, लोभ, ईर्ष्या, दोषारोपण, कलह, निन्दा - ये सब महानता के बाधक तत्त्व हैं। ये सब तत्त्व दूसरों को देखने से फलित होते हैं। जो दूसरों को कम देखता है, उसे क्रोध कम आएगा। जो दूसरों को अधिक देखता है, उसे क्रोध अधिक आएगा। नौकर ने काम ठीक नहीं किया, क्रोध से तिलमिला उठेगा। पत्नी ने बात नहीं मानी, क्रोध से उबल पड़ेगा। सहयोगी ने काम ठीक नहीं किया, चेहरा तमतमा उठेगा। क्रोध दूसरे को देखने का परिणाम है। अपने आपको देखना शुरू करें, क्रोध विलीन हो जाएगा। क्रोध आएगा ही नहीं। किस पर आएगा क्रोध?





'आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो' - यह एक छोटा-सा सूत्र लगता है, किन्तु यह इतना मठत्वपूर्ण चिकित्सा-सूत्र है कि यदि यह हृदयंगम हो जाता है तो ध्यान समझ में आ जाता है, ज्ञान समझ में आ जाता है, सारी विधाएँ समझ में आ जाती हैं, सारी चिकित्सा पद्धतियाँ हमारे हाथ लग जाती हैं।

अहंकार भी दूसरे को देखने से आता है। जब व्यक्ति दूसरे को अपने से छोटा देखता है, तब अहंकार पैदा होता है। वह अनुभव करता है—इनके पास कुछ भी नहीं है — इनके पास कहाँ है ज्ञान? इनके पास कहाँ है वैभव और सत्ता? इनके पास कहाँ है अधिकार? मेरे पास कितना वैभव और सत्ता है! सदा तुलना में अहंकार का भाव जागता है।

दूसरा पहलू है हीनभावना। आदमी अपने से बड़ों को देखता है, हीनभावना जाग जाती है और अपने से छोटों को देखता है तो अहंभावना जाग जाती है। जो व्यक्ति अपने आपको देखना नहीं जानता, जो व्यक्ति अपने आपको नहीं देखता, वह या तो अहंकार से भर जाएगा या हीनभावना से भर जाएगा। माया भी दूसरों को देखने का परिणाम है। माया अपने आप में तो होती नहीं। किसी को ठगना हो तो माया करनी पड़ती है। ठगने का प्रश्न न हो तो न छल होता है, न प्रवंचना होती है और न कपट होता है। लोभ भी दूसरे के दर्शन से होता है, दूसरे के दर्शन से जागता है। पर-दर्शन के द्वारा ही लोभ का विकास होता है।

अपने आपको देखने वाला कलह नहीं कर सकता, दूसरे को देखने वाला कलह करता है। जो अपने आपको देखता है, वह कलह कैसे करेगा? जब सामने दूसरे को देखता है तब तत्काल

कलह की आग सुलग जाती है। कभी-कभी कलह करने का मन हो जाता है। आक्रोश उभर आता है। प्रतिशोध की भावना जाग जाती है।

प्रतिशोध और कलह - ये भयंकर बीमारियाँ हैं। आज का मनोविज्ञान इस विषय में अनेक स्पष्टताएँ हमारे सामने प्रस्तुत कर रहा है। अनेक शारीरिक बीमारियों का हेतु है - प्रतिशोध की भावना। अनेक बीमारियाँ मानसिक दुर्बलताओं के कारण पनपती हैं। मन की बीमारियाँ अपने आपको न देखने के कारण पैदा होती हैं। 'आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो' - यह एक छोटा-सा सूत्र लगता है, किन्तु यह इतना महत्वपूर्ण चिकित्सा-सूत्र है कि यदि यह हृदयंगम हो जाता है तो ध्यान समझ में आ जाता है, ज्ञान समझ में आ जाता है, सारी विधाएँ समझ में आ जाती हैं, सारी चिकित्सा पद्धतियाँ हमारे हाथ लग जाती हैं।

दूसरों पर आरोप लगाने के भयंकर परिणाम होते हैं। भीतर ही भीतर वह इतनी विकृति पैदा कर देता है कि एक दिन जब विस्फोट होता है तब ज्ञात होता है कि कितना भयंकर परिणाम हुआ है। पैशुन्य - चुगली भी दूसरों को देखने से होती है। आदमी दूसरे को देखता है, कुदड़ता है तब चुगली होती है। अपने आपको देखने वाला किसी की चुगली नहीं कर सकता। निन्दा भी दूसरों को देखने से होती है। जो स्वयं को देखता है, वह किसी की निन्दा नहीं कर सकता। जब-जब आदमी दूसरे को देखता है, दूसरे की कमजोरियों और बुराइयों को देखता है, दूसरे की अल्पताओं और हीनताओं को देखता है, तब तत्काल निन्दा करने लग जाता है।

महानता में बाधा डालने वाले ये तत्त्व पर-दर्शन से प्राप्त होते हैं। यदि आत्म-दर्शन, स्व-दर्शन का अभ्यास बढ़ जाये और पर-दर्शन की बात गौण हो जाये तो ये बाधक तत्त्व अपने आप समाप्त हो जाते हैं। समझदार आदमी इन बीमारियों को, इन विघ्नों को मिटाना चाहता है। कोई भी इन्हें पालना नहीं चाहता, पर ये मिटती नहीं। ये तभी मिट सकती हैं जब स्व-दर्शन का अभ्यास वृद्धिंगत होता है। जब तक अपने आपको देखने में रस या आकर्षण पैदा नहीं हो जाता, रुचि या तल्लीनता उत्पन्न नहीं हो जाती, तब तक ये बीमारियाँ मिटने वाली नहीं हैं। इनको समाप्त करने का एकमात्र उपाय है-आत्म-दर्शन, स्व-दर्शन की भावना को विकसित करना।

आज का आदमी प्रतिबिम्बों से लड़ रहा है। कोई लड़ने वाला सामने नहीं होता है तो वह दूसरे का प्रतिबिम्ब सामने रखकर भी लड़ लेता है। आदमी न जाने कितनी स्मृतियाँ कर बुरी बातें सोचता है। वह स्मृति के प्रतिबिम्बों को सामने खड़ा कर रात-दिन लड़ता रहता है, बेचैन होता है, रात में नींद हराम हो जाती है और दिन में भोजन हराम हो जाता है।

आदमी मन ही मन कल्पना करता है कि यह हो जाएगा, वह हो जाएगा और लड़ाई शुरू हो जाती है। आज सारे विश्व में बड़े-बड़े राष्ट्र आयुधों का भण्डार भर रहे हैं, अस्त्र-शस्त्रों का विकास कर रहे हैं। इन सबके पीछे कल्पना का यह प्रतिबिम्ब ही कारण है कि यदि

हम घातक शस्त्रास्त्रों की दौड़ में पीछे रह गये तो मारे जाएंगे, समाप्त कर दिये जाएंगे। सभी राष्ट्र एक-दूसरे से भयाक्रान्त हैं। सभी अपनी-अपनी कल्पना के प्रतिबिम्ब खड़े करते हैं और शस्त्रों का भण्डार भरने का औचित्य स्थापित करते हैं।

इस सन्दर्भ में हम प्रेक्षाध्यान के मूल सूत्र - आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो का मूल्यांकन करें। हमें ज्ञात होगा कि हमने बीमारी की जड़ को पकड़ लिया है, उसको नष्ट करने का उपाय भी हस्तगत हो गया है।

अपनी क्षमता पर आस्था

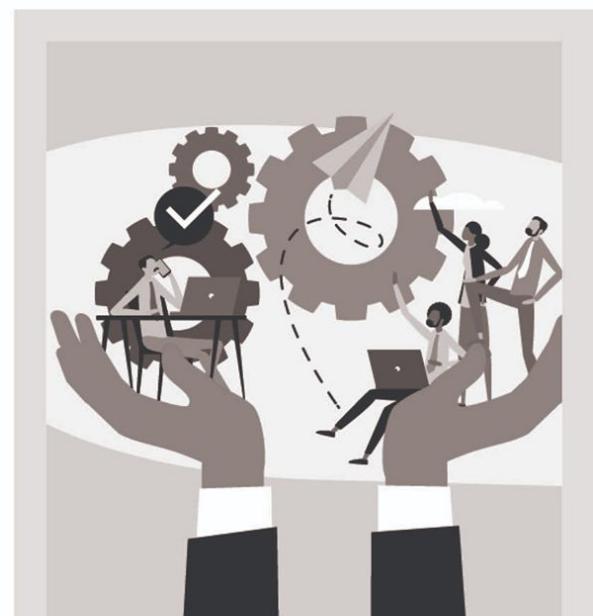
प्रगति का दूसरा सूत्र है - अपनी क्षमता को बढ़ाओ, अपनी उपयोगिता को बढ़ाओ। अक्षम और शक्तिशून्य व्यक्ति कभी आगे नहीं बढ़ सकता। जिसे अपनी शक्ति के विकास में भरोसा नहीं है, जो अपनी शक्ति को नहीं बढ़ाता, उसे स्वयं भगवान् भी यदि सहारा देना चाहें, आगे बढ़ाना चाहें तो भी वह आगे नहीं बढ़ सकता। आगे बढ़ने के लिए स्वयं की शक्ति को विकसित करना ही पड़ता है। कोई चाहे कि वह कलेक्टर बने, मुख्यमन्त्री बने, मुख्य सचिव बने, तो कोई भी बन सकता है, किन्तु वही व्यक्ति बन सकता है जिसने अपनी शक्ति का विकास कर लिया है। जिसमें शक्ति नहीं है, अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं है, वह चाहने पर भी कुछ नहीं कर सकता।

अपनी उपयोगिता बनाये रखो

अपनी क्षमता का विकास होना चाहिए। इससे जुड़ी हुई बात है - अपनी उपयोगिता को बढ़ाना। प्रगति वही कर सकता है जो अपनी उपयोगिता को बढ़ाता है। जो अपनी उपयोगिता को नहीं बढ़ाता, वह पिछड़ जाता है, साथ में नहीं चल सकता। जहाँ प्रतियोगिताएँ होती हैं, आदपी यही सोचता है कि उसने मुझे पीछे छोड़ दिया। दुनिया में कोई किसी को पछाड़ने का प्रयत्न नहीं करता। जो उपयोगिता को अधिक सक्षम बना लेता है, जिसकी उपयोगिता अनिवार्य हो जाती है, वह आगे बढ़ जाता है। 'मुझे पीछे रख दिया गया' - यह शिकायत करने वाला पिछड़ जाता है। इसलिए प्रगति का महत्वपूर्ण सूत्र है - अपनी उपयोगिता को बढ़ाते रहो। देश-काल की उपयोगिता है। यदि उपयोगिता न हो तो व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता।

आचार्य तुलसीनिरन्तर उपयोगी बने रहे

मैंने अनुभव किया कि आचार्य तुलसी बहुत आगे बढ़ गये। धर्म के क्षेत्र में उनका नेतृत्व न केवल तेरापंथ समाज के लिए, न केवल जैन समाज के लिए अपितु समूचे धर्म व अध्यात्म जगत के लिए सर्वमान्य हो गया। प्रश्न होता है, यह क्यों हुआ? उन्होंने कभी कृपा की भीख नहीं माँगी। वे अपनी उपयोगिता बढ़ाते गये। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन कर एक उपयोगिता प्रमाणित कर दी। साहित्य सृजन का भगीरथ प्रयत्न किया। नये विचारों को, नये दर्शन को नये रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत कर दूसरी उपयोगिता प्रमाणित कर दी। ध्यान पद्धति को पुनरुज्जीवित कर तीसरी



जो व्यक्ति अपनी उपयोगिता को अनिवार्य बना देता है, वह स्वतः सर्वमान्य हो जाता है। कोई भी व्यक्ति उसे अस्वीकार नहीं कर सकता। यह दुनिया स्वार्थी है। इस स्वार्थी दुनिया में अपनी उपयोगिता रखे देने वाला कोई भी व्यक्ति अपना मूल्य बनाये नहीं स्वरूप सकता। हम प्रगति के इस सूत्र को समझें और अपनी उपयोगिता को बढ़ाते चलें, उपयोगिता को अनिवार्य बनादें।

उपयोगिता प्रमाणित कर दी। एक के बाद एक उपयोगिता आती गयी। अब उनकी उपयोगिता इतनी अनिवार्य बन गयी कि कोई भी व्यक्ति उसे अस्वीकार नहीं कर सकता था। उपयोगिता बढ़ी, यह दूसरों की कृपा का परिणाम नहीं था। युगप्रधान बने तो वह दूसरों की कृपा का अनुदान नहीं था। सर्वमान्य बनने के लिए किसी से याचना नहीं की। जो व्यक्ति अपनी उपयोगिता को अनिवार्य बना देता है, वह स्वतः सर्वमान्य हो जाता है। कोई भी व्यक्ति उसे अस्वीकार नहीं कर सकता। यह दुनिया स्वार्थी है। इस स्वार्थी दुनिया में अपनी उपयोगिता खो देने वाला कोई भी व्यक्ति अपना मूल्य बनाये नहीं रख सकता। हम प्रगति के इस सूत्र को समझें और अपनी उपयोगिता को बढ़ाते चलें, उपयोगिता को अनिवार्य बनादें।

सीमा-बोध

प्रगति का तीसरा सूत्र है - सीमा-बोध। व्यक्ति अपनी सीमाओं को समझे। इस संसार में शक्तिमान व्यक्ति होते हैं, पर ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं होता जो सर्वशक्ति सम्पन्न हो। शक्ति की सीमाएँ हैं। प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति की सीमा है। हर व्यक्ति के साथ सीमा जुड़ी हुई है। जो अपनी सीमा को नहीं जानता, वह प्रगति नहीं कर



सकता। सीमा-बोध अत्यन्त आवश्यक है। हमारी शक्ति की सीमा, हमारे आनन्द की सीमा, हमारे सुख की सीमा, सब कुछ सीमित है। इस सीमा-बोध की विस्मृति के कारण प्रगति का यह रथ उल्टा चलने लग सकता है।

एक आदमी को बुद्धि प्राप्त है। वह सोचता है मुझे बुद्धि प्राप्त है तो मैं जितना चाहूँ उतना धन इकट्ठा कर लूँ। व्यावसायिक बुद्धि से वह धनकुबेर बन सकता है। यदि वह इस सीमा को नहीं जानता कि एक आदमी ज्यादा धन इकट्ठा करता है तो दूसरों को उसका कितना कटु परिणाम भोगना पड़ता है, तो उसका धनकुबेर होना खतरे में पड़ जाता है। इस सीमा-बोध के अतिक्रमण का अर्थ होता है - क्रान्ति, युद्ध, संघर्ष और लड़ाइयाँ। यदि सभी लोग अपनी सीमा में होते तो आज प्रगति का चक्र बहुत तेजी से घूमने लग जाता। जब प्रगति दूसरों के लिए प्रतिगति बन जाती है, पिछड़ेपन का कारण बन जाती है, तब कठिनाइयाँ होती हैं।

कुछ राष्ट्रों को भौगोलिकता के कारण प्राकृतिक सम्पदा की प्रचुरता प्राप्त है। उन्हें प्रगति करने की अनेक सुविधाएँ प्राप्त हैं। बुद्धिमान और व्यावसायिक बुद्धि-कौशल से सम्पन्न लोगों को वैभव प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त है। एक आदमी एक दिन में दस लाख रुपये कमा लेता है। हिन्दुस्तान विकासशील देशों में एक है। किन्तु जो देश पूर्णस्पेषण विकसित है, वहाँ धन मानो ऊपर से बरस रहा है। वहाँ एक दिन में न जाने क्या से क्या हो जाता है। इतना होने पर भी इसका परिणाम क्या आ रहा है? अनुभव यही बताता है कि इसका परिणाम है - संघर्ष, लड़ाई और क्रान्ति।

आज सारा संसार एक प्रकार की क्रान्ति के कगार पर खड़ा है। किसलिए? इसीलिए कि बुद्धि का उपयोग सीमा से अतिक्रान्त होकर हो रहा है। प्रश्न होता है - उसकी सीमा क्या है? सीमा यह होनी चाहिए कि बुद्धि-शक्ति का उपयोग अपने सुख के लिए अवश्य हो, पर उससे दूसरों के सुख में कोई बाधा नहीं पहुँचनी चाहिए। जहाँ बुद्धि सीमा को पार कर आगे काम करती है, वहाँ लड़ाइयों और क्रान्तियों के लिए मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

अपनी प्रगति के लिए जरूरी है - सीमा का बोध। जब सीमा-बोध की चेतना स्पष्ट हो जाती है, तब प्रगति की बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं। यदि सीमा-बोध की चेतना नहीं जागती तब जो व्यक्ति अपनी शक्ति का उपयोग करता है, उसके प्रति दूसरे के मन में प्रतिहिंसा की भावना जागती है। हिंसा और प्रतिहिंसा, क्रिया और प्रतिक्रिया - यह सब सीमा के अतिक्रमण के परिणाम हैं। प्रगति के लिए सीमा-बोध को मूल्य देना आवश्यक है।

विलियम जेम्स ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आदतों को बदलने का कोर्स प्रस्तुत किया है। उसमें तीन बातें मुख्य हैं-

■ बदलने की तीव्र इच्छा ■ दृढ़ निश्चय ■ निरन्तरता

पहली बात है कि व्यक्ति के मन में तीव्र अभिप्सा जागे कि उसे अपनी आदतों को बदलना है। मान लें कि बदलने की इच्छा पैदा हो गयी, पर उससे भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा। इच्छा के साथ दृढ़

निश्चय भी होना चाहिए। निश्चय ऐसा हो कि मुझे बदलना ही है। बदले बिना चैन नहीं लूँगा। निश्चय दृढ़ होगा तो रूपान्तरण प्रारम्भ हो जाएगा। दृढ़ निश्चय के साथ-साथ निरन्तरता भी होनी चाहिए। एक दिन निश्चय किया, फिर दस दिन तक उसकी स्मृति ही नहीं रही तो कुछ भी रूपान्तरण घटित नहीं होगा। निरन्तरता से आदत अपने आप बदलने लग जाएगी।

रूपान्तरण के तीन उपाय

जयाचार्य के अनुसार बदलने के तीन मुख्य उपाय हैं-

- वर्तमान में पाप का व्युत्सर्ग करें - पाप न करने का निश्चय करें।
- अतीत का शोधन करें - प्रायश्चित्त के द्वारा, मिच्छामि दुक्कड़ के द्वारा पूर्वार्जित पापों का शोधन करें।
- भविष्य के लिए प्रत्याख्यान करें - भविष्य में पाप न करने का दृढ़ संकल्प करें - 'इयाणि णो जमहं पुव्वमकासी पमाणं' - अब मैं वैसा काम नहीं करूँगा जो मैंने पहले प्रमादवश कर लिया था।

ये तीनों उपाय जब एक साथ काम में लिये जाते हैं, तब रूपान्तरण घटित होने लग जाता है, प्रगति होने लग जाती है। ■■■

प्रार्थना निष्फल न होगी

■ भारती जैन दिव्यांशी-मुरैना ■

चक्रधारी की शरण में, प्रार्थना निष्फल न होगी। मन रमा पावन चरण में, याचना निष्फल न होगी॥

जिस तरह संवेदना की, उम्र घटती जा रही है। भावना की भावना से, डोर कटती जा रही है।। व्यर्थ रिश्तों को अगर तू चाहता है अर्थ देना। बह समय की धार के संग, कामना निष्फल न होगी॥

हो तिमिर चाहे सघन घन, हौसले की बात करना। नफरतों की बस्तियों में, प्यार की बरसात करना।। हर असंभव कर्म को, सत्कर्म से संभव बनाएं। दृढ़ रहे संकल्प तो ये, धारणा निष्फल न होगी॥

आस रख विश्वास रख मन, साथ फिर मधुमास होगा। जीत के उल्लास का, हर ध्वास में आभास होगा।। एक पल पर्यास है निज, इष्ट के गुण आचमन को। जगमगा बन दीप अविचल, साधना निष्फल न होगी।



अनुशासन में रहो

अनुशासन दूसरों के द्वारा भी होता है परन्तु आत्मानुशासन का विकास हो, ऐसा लक्ष्य रहना चाहिए। अनुशासन की बात बताना आवश्यक है, सुनना आवश्यक है, उससे भी ज्यादा आवश्यक है बताने वाले और सुनने वाले दोनों में अनुशासन का प्रभाव होना चाहिए। जिसमें स्वयं पर अनुशासन न हो, वह दूसरों को क्या शिक्षा देगा?

आ हंत् वाइमय के प्रतिष्ठित आगम उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

अप्पा चेव दमैयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होई, अस्स लोए परत्थय॥

आदमी अपनी आत्मा का संयम करे क्योंकि आत्मा का संयम मुश्किल काम है। दमितात्मा ही इहलोक और परलोक में सुखी होता है।

कुछ काम कठिन तो होते हैं, पर बड़े लाभदायी होते हैं। इसलिए आदमी को हितकर और कठिन काम करने का भी प्रयास करना चाहिए। आसान काम करना अच्छा है, पर आसान हो या कठिन, जो काम हितकर हो, उस पर आदमी को ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। जो अपनी आत्मा पर अनुशासन करता है, अपने आप पर अनुशासन करता है, वह व्यक्ति सुखी बनता है। वह इस लोक में भी सुखी होता है और अगले जीवन में भी सुखी बनता है। इसलिए मनुष्य को आत्मानुशासन का प्रयास करना चाहिए। चाहे विद्यालय हों, सामाजिक संस्थाएं हों, अन्य संगठन हों या व्यक्तिगत जीवन हो। यदि अनुशासन है तो सब ठीक है। लोकतंत्र में स्वातंत्र्य की बात है परन्तु वहाँ भी अनुशासन आवश्यक है। कोई

यह सोच ले कि लोकतंत्र में कोई कुछ भी करे तो लोकतंत्र ठीक कैसे रह पाएगा? अंग्रेजी में ठीक कहा गया -

Without duty and discipline the deity of democracy shall be hung to death and destruction.

अर्थात् कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के बिना प्रजातंत्र का देवता भी विनाश को प्राप्त हो सकता है।

आदमी के जीवन में कर्तव्यनिष्ठा एक महत्वपूर्ण तत्त्व होता है। जिसका जो कर्तव्य है, उसके प्रति जागरूक रहना चाहिए। विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में जो शिक्षक, प्राध्यापक, प्राचार्य आदि हैं, वे अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान हैं और विद्यार्थी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहते हैं तो विद्या संस्थान अच्छे रह सकेंगे। जहाँ शिक्षक अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान नहीं हैं और विद्यार्थी अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान नहीं हैं, फिर विद्या संस्थान भी स्वस्थ नहीं रह सकता। यही बात उद्योग के क्षेत्र में है। यदि मालिक अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक है और कर्मचारी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक है तो उद्योग की व्यवस्था ठीक रह सकेगी। जहाँ शोषण होता है, वहाँ व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। एक मजदूर पूरा काम करता है परन्तु मालिक





भाव्यवाद, नियतिवाद को जान लेने पर भी आदमी को पुरुषार्थवादी होना चाहिए। पुरुषार्थ नहीं छोड़ना चाहिए। अच्छा पुरुषार्थ किया जाता है तो समय आने पर उसका अच्छा फल मिलना भी संभव है। आदमी का काम है पुरुषार्थ करना। भाव्य को प्रधान मानकर पुरुषार्थ को छोड़ देना जीवन की ठार है।

उसे वेतन कम देने का प्रयास करता है तो मालिक के द्वारा मजदूर का शोषण होता है। एक मजदूर पैसा पूरा लेता है किन्तु काम करने से जी चुराता है तो फिर मजदूर के द्वारा मालिक का या उद्योग का शोषण हो जाता है। कोई एक-दूसरे का शोषण न करे। कर्तव्यनिष्ठापूर्वक कार्य किया जाये तो काम अच्छा हो सकता है। धार्मिक संगठनों में भी अनुशासन आवश्यक होता है। अनुशासन नहीं है तो वहां भी कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं। अनुशासन दूसरों के द्वारा भी होता है परन्तु आत्मानुशासन का विकास हो, ऐसा लक्ष्य रहना चाहिए। आत्मानुशासन विकसित हो जाता है फिर परानुशासन को अनपेक्षित होने का भी मौका मिल जाता है। वह व्यक्ति धन्य है जो परानुशासन को अपने आत्मानुशासन के द्वारा अनपेक्षित बना देता है।

अनुशासन की बात बताना आवश्यक है, सुनना आवश्यक है, उससे भी ज्यादा आवश्यक यह है कि बताने वाले और सुनने वाले दोनों में अनुशासन का प्रभाव होना चाहिए। जिसमें स्वयं पर अनुशासन न हो, वह दूसरों को क्या शिक्षा देगा? कई बार उसका प्रभाव गलत पढ़ सकता है। एक आदमी खुद नशा करने वाला है, ड्रिंकिंग करने वाला है, बीड़ी-सिगरेट पीने वाला है, वह सभा में जाकर उपदेश दे कि नशा छोड़ो तो उसकी बात का कितना क्या

प्रभाव पड़ेगा? क्योंकि लोग जानते हैं कि वक्ता खुद नशाखोर है। इसलिए स्वयं पर अनुशासन पहले करें। फिर दूसरों पर अनुशासन सार्थक और सफल हो सकेगा। संत लोग पहले स्वयं साधना करते हैं, कठोर नियमों का पालन करते हैं, फिर लोगों को छोटे-छोटे नियमों के बारे में बताते हैं। अनुशासन उनके जीवन में बोलता है, तब उनकी बात का कुछ अधिक प्रभाव पड़ने की संभावना बनती है।

आदमी को कार्य करना होता है, उसमें भी अगर आकांक्षा है तो आत्मानुशासन की कमी है। आदमी का कर्म करने में अधिकार है, पुरुषार्थ में अधिकार है। उसका फल क्या मिलेगा? उस पर आदमी का अधिकार नहीं हो सकता।

श्रीमद्भगवद्गीता में सुन्दर कहा गया-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गेऽस्त्वकर्मणि ॥

हे अर्जुन! तुम कर्मों के फल के हेतु मत बनो और तुम्हारी कर्मन करने में भी आसक्ति न हो।

दार्शनिक विचारधारा में पुरुषार्थ की यशोगाथा गायी गयी है, भाव्यवाद की अवधारणा भी बतायी गयी है और नियतिवाद की अवधारणा भी मान्य रही है। नियतिवाद दुनिया का एक सार्वभौम नियम है। उसके अनुसार यह दुनिया चलती है। नियति में जो होना निश्चित है, वह होता है। दुनिया की नियति में मृत्यु भी नियति है। मृत्यु का निश्चित नियम है कि जो जन्मा है एक दिन एक तो उसको जाना ही पड़ेगा। ऐसा नहीं हो सकता कि जन्म लेने वाला आदमी मृत्यु को प्राप्त न हो। मृत्यु आने के अनेक द्वार हैं। भले वह दुर्घटना से आ जाये, बीमारी से आ जाये, आयुष्य-काल पूरा होने से आ जाये, पर मृत्यु का आना निश्चित है।

भाव्यवाद, नियतिवाद को जान लेने पर भी आदमी को पुरुषार्थवादी होना चाहिए। पुरुषार्थ नहीं छोड़ना चाहिए। अच्छा पुरुषार्थ किया जाता है तो समय आने पर किसी रूप में उसका अच्छा फल मिलना भी संभव है। संस्कृत वाङ्मय में कहा गया - "उद्योगिनः पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः" उद्योगी पुरुष होता है, पुरुषार्थी होता है, लक्ष्मी उसका वरण करती है। रत्न आदमी की खोज नहीं करता, आदमी रत्नों की खोज करता है। आदमी का काम है पुरुषार्थ करना। भाव्य को प्रधान मानकर पुरुषार्थ को छोड़ देना जीवन की हार है। इसलिए कहा गया कि भाव्यवाद को जानो भले पर भाव्यवाद पर अड़े मत रहो, खड़े मत रहो, पुरुषार्थ करो। कदाचित् तुम्हें पुरुषार्थ करने के बाद तत्काल फल न मिले तो तुम्हारा कोई दोष नहीं। यह तो नियति का अपना नियम है।

विद्यार्थी पढ़ता है। यदि एक बार फेल हो जाये और पढ़ना ही बंद कर दे तो क्या वह पढ़ पाएगा? आदमी को असफलता मिलने पर निराश नहीं होना चाहिए। उसे सफलता का रास्ता खोजना चाहिए। विद्यार्थी के सामने लक्ष्य है - पढ़ना। शिक्षा प्राप्त करना जीवन के लिए बहुत आवश्यक है, परन्तु पढ़ने के साथ-साथ



अनुशासन परम तत्व है। वह जीवन में आ जाता है तो आदमी का जीवन विकासशील बन जाता है और वह अपने जीवन में शांति का अनुभव भी कर सकता है। गीता में आसक्ति को छोड़ने का उपदेश दिया गया है और उत्तराध्ययन सूत्र में भी हमें अनुशासन की बात मिलती है, आसक्ति को छोड़ने की बात मिलती है।

अपने जीवन को गढ़ना भी चाहिए। हम परिवार में कैसे रहें, कैसे सामंजस्य रहें, कैसे एक-दूसरे को सहन करें? इस प्रकार की शिक्षा और संस्कार भी जीवन में आने चाहिए। समझशक्ति बढ़ गयी और सहनशक्ति नहीं बढ़ी तो समझना चाहिए एक बड़ी कमी रह गयी।

आचार्य श्री तुलसी पाली में विराजमान थे। उस समय आचार्य श्री महाप्रज्ञजी युवाचार्य अवस्था में थे। कोलकाता के नोपानी स्कूल के प्रमुख लोग आये, वार्तालाप हुआ।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी - "आपका नोपानी स्कूल बहुत अच्छा है। आप अच्छी पढ़ाई करते हैं और फिर बच्चों को दुःखी बनने के लिए घर भेज देते हैं।"

आगन्तुक लोगों ने आश्र्य के साथ पूछा - "यह कैसे?"

युवाचार्यश्री - "आप बच्चों की समझशक्ति को तो बढ़ा देते हैं पर साथ में सहनशक्ति अगर नहीं बढ़ती है तो वे घर-परिवार में जाएंगे, अनेक बातों को देखेंगे। वे बातों को समझ तो लेंगे किन्तु सहन नहीं कर सकेंगे और दुःखी बन जाएंगे।"

आगन्तुक लोग - "आपकी यह बात ठीक है, ऐसा तो होता है।" युवाचार्यश्री - "हम यही कह रहे हैं कि समझशक्ति के साथ सहनशक्ति भी बढ़नी चाहिए। परिवार में सहिष्णुता हो, एक-दूसरे के प्रति हितैषिता हो और अनुशासन हो तो परिवार का माहौल अच्छा बनता है।"

अनुशासन परम तत्व है। वह जीवन में आ जाता है तो आदमी का जीवन विकासशील बन जाता है और वह अपने जीवन में शांति का अनुभव भी कर सकता है। गीताकार ने कहा कि तुम कर्म करने के अधिकारी हो, फलाशंसा मत रखो। पुरुषार्थ करने पर कभी सफलता न भी मिले तो मैं कर्म करूँगा ही नहीं, ऐसी भावना तुम्हारे मन में न आये, अकर्म के प्रति तुम्हारे मन में आसक्ति का भाव नहीं जागे। गीता में आसक्ति को छोड़ने का उपदेश दिया गया है और उत्तराध्ययन सूत्र में भी हमें अनुशासन की बात मिलती है, आसक्ति को छोड़ने की बात मिलती है। गीता और उत्तराध्ययन दोनों ऐसे महान ग्रन्थ हैं, जिनमें बड़े सुन्दर सूत्र प्राप्त होते हैं। इन सूत्रों को आधार बनाकर गति करने से आदमी विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है।



बापू की वाणी

- अहिंसा व्यापक वस्तु है। हम हिंसा की होली के बीच धिरे हुए पामर (अधम) प्राणी हैं। यह वाक्य गलत नहीं है कि 'जीव जीव पर जीता है'। मनुष्य एक क्षण के लिए भी बाह्य हिंसा के बिना जी नहीं सकता। खाते-पीते, उठते-बैठते, सभी क्रियाओं में इच्छा-अनिच्छा से वह कुछ न कुछ हिंसा तो करता ही है।
- यदि इस हिंसा से छूटने के लिए वह महाप्रयत्न करता है, उसकी भावना में केवल अनुकंपा होती है, वह सूक्ष्म से सूक्ष्म जंतु का भी नाश नहीं चाहता और यथाशक्ति उसे बचाने का प्रयत्न करता है, तो वह अहिंसा का पुजारी है। उसके कार्यों में निरंतर संयम की वृद्धि होगी; उसमें निरंतर करुणा बढ़ती रहेगी। किंतु कोई देहधारी बाह्य हिंसा से सर्वथा मुक्त नहीं हो सकता।
- अहिंसा की तह में ही अद्वैत भावना निहित है। और यदि प्राणी मात्र में अभेद है तो एक के पाप का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है, इस कारण भी मनुष्य हिंसा से बिल्कुल अछूता नहीं रह सकता। समाज में रहने वाला मनुष्य समाज के हिंसा में अनिच्छा से ही क्यों नहो, साझेदार बनता है।
- दो राष्ट्रों के बीच युद्ध छिड़ने पर अहिंसा में विश्वास रखने वाले व्यक्ति का धर्म है कि वह उस युद्ध को रोके। जो इस धर्म का पालन न कर सके, जिसमें विरोध करने की शक्ति न हो, जिसे विरोध करने का अधिकार प्राप्त न हुआ हो, वह युद्ध कार्य में सम्मिलित होते हुए भी उसमें से अपने को, अपने देश को और सारे संसार को उबारने का हार्दिक प्रयत्न करे।

(राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मकथा
'सत्य के प्रयोग' से साभार)



जय जय ज्योतिषदण्ड जय जय महाश्रगण

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस



हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वेलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें।

लाईफ इंश्योरेंस



कैशलेस मेडिक्लेम



इंश्योरेंस टिप्स

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे।

नो रुम कैटगरी वाली
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार हैं।

**Legacy of
39
Years**

**25000
HAPPY
CUSTOMERS
INDIA & ABROAD**

**11000
Claims
Solved**

**300
National &
International
Awards**

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए हैं जिसमें पॉलीसी है
ज्वेलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्श्युरेन्स, मेडिक्लेम, फायर एवं बर्गलरी।



Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A



One Stop Insurance Solution in India !

हम देश विदेश में सभी ग्राहकों को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते हैं।



Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

Contact Details :

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A. Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | Inter Com : 5050
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222



सात्त्विक प्रवृत्तियों से जीवन बनाएं सार्थक

सात्त्विक जीवनचर्या हमें अनंत प्रेम, करुणा, आरोग्य, निर्भयता, विनम्रता, मोद, मैत्री और सत्त्वे आनंद से भर देती है। गांधीजी के जीवन में ऐसी ही सात्त्विक प्रवृत्तियों का सुंदर संयोग देखने को मिलता है। हम प्रयासपूर्वक ऐसे जीवन को अपनाएं तो हमारा जीवन भी सुंदर, पवित्र, आनंदप्रद और सार्थक हो सकता है।

गाँधीजी अपने जीवन में इतने बड़े-बड़े कार्य कर पाये क्योंकि उनका जीवन अत्यंत सात्त्विक था। उन्होंने सात्त्विकता के रहस्य को समझ लिया था। दुनिया के महान संतों, पैगंबरों, ऋषियों और तीर्थकरों के जीवन में उन्हें एक बात समान लगी और वह थी उन सबकी सात्त्विकता। यहाँ तक कि दुनिया के जिस हिस्से में भी वे गये और वहाँ जिन गृहस्थों से वे प्रभावित हुए, उन सबका जीवन प्रायः सात्त्विक ही था।

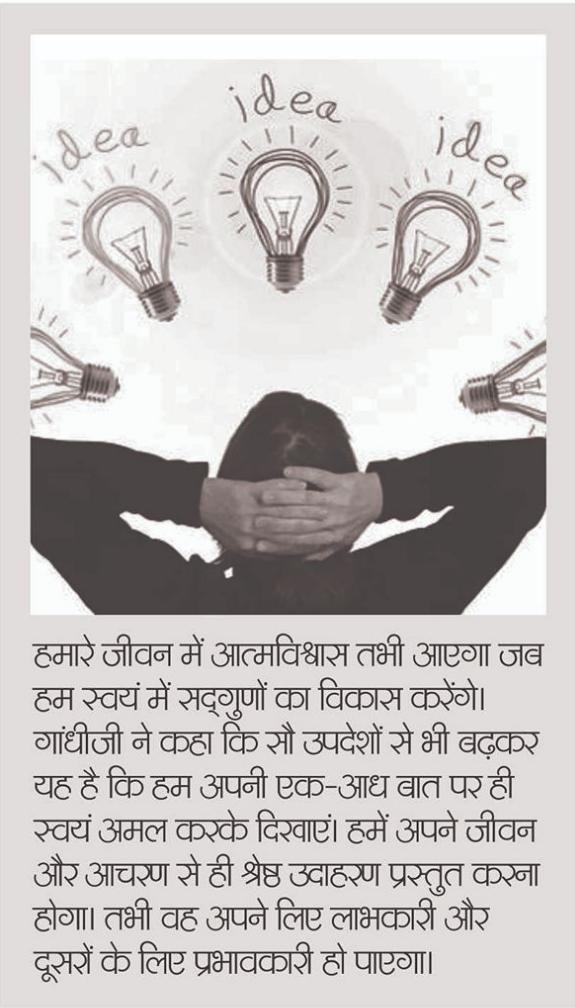
युवावस्था में लंदन में वेजिटरियन सोसाइटी के तत्कालीन सदस्यों और पूर्व सदस्यों के जीवन और लेखन ने भी गांधीजी को बहुत प्रभावित किया। यहाँ पर उन्हें बुद्ध के जीवन और उपदेशों के साथ-साथ श्रीमद्भगवद्गीता को भी गंभीरता से पढ़ने का प्रथम अवसर मिला। बाद में तो गीता उनके जीवन की पथ-प्रदर्शिका ही बन गयी। गीता में उन्हें विशेषकर सत, रज और तम रूपी तीनों गुणों के विज्ञान ने अत्यंत प्रभावित किया। उन्हें एक ऐसा सूत्र हाथ लग गया जिससे वे पूरी मानव जाति की प्रवृत्तियों का ठीक-ठीक अध्ययन करने और उनकी समस्याओं का समाधान सुझा पाने में समर्थ होते गये। सन् 1926 में जब गांधीजी गीता पर विस्तृत भाष्य कर रहे थे, तब 2 अक्टूबर को अपने 57वें जन्मदिवस पर उन्होंने लिखा - "हमें अधिक से अधिक सात्त्विक बनना चाहिए।"

लंदन से भारत वापस आने पर श्रीमद् राजचंद्र से जब गांधीजी की भेंट हुई तो श्रीमद् की सात्त्विक जीवनचर्या ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी श्रीमद् का जीवन इतना पवित्र और साधनामय था, यह देखकर वे अभिभूत हो गये। अन्य दो सत्पुरुषों जिनसे गांधीजी सर्वाधिक प्रभावित हुए, वे थे लियो टॉलस्टॉय और जॉन रस्किन। इन दोनों महापुरुषों का जीवन भी पवित्र और सात्त्विक था।

सात्त्विकता अर्थात् स्वयं को तमोगुण और रजोगुण की ऐसी प्रवृत्तियों से मुक्त करना जो हमारी उच्चतर चेतना के विकास में बाधक होती हैं। तमोगुण की प्रबलता में मनुष्य भ्रम, आलस्य, नशा, मांसाहार, निद्रा और जागते हुए भी बेहोश की तरह आचरण करता रहता है। रजोगुण की प्रबलता में मनुष्य अंतहीन कामनाओं और सांसारिक आकर्षणों के लिए अतृप्त महत्वाकांक्षाओं को बढ़ाता जाता है। इसमें मनुष्य रूप, पद, शरीर बल, धन, सत्ता, पुरस्कार, मान-बड़ाई, प्रचार और यश आदि के लिए व्याकुल रहता है और इसके लिए किसी भी हृद तक जाने को आमादा रहता है।

वहाँ सत्त्वगुण शांत स्वभाव, सदगुण और शुद्धता को चित्रित करता है। इसमें शाकाहार, सादगी, भीतर और बाहर की





स्वच्छता, निर्लोभता, उदारता, बिना प्रचार के परोपकार, संयम और श्रद्धा से भरा हुआ जीवन होता है। तमोगुण और रजोगुण का असंतुलन हमारे जीवन को आलस्य, जड़ता, अस्वच्छता, वासना, क्रोध, लोभ, अहंकार, भय, कलह-क्लेश, अशांति और रोग आदि से भर देता है। जबकि सात्त्विक जीवनचर्या हमें अनंत प्रेम, करुणा, आरोग्य, निर्भयता, विनम्रता, मोद, मैत्री और सच्च्ये आनंद से भर देती है। गांधीजी के जीवन में ऐसी ही सात्त्विक प्रवृत्तियों का सुंदर संयोग देखने को मिलता है। हम ऐसे जीवन को अपनाएं तो हमारा जीवन भी सुंदर, पवित्र, आनंदप्रद और सार्थक हो सकता है।

हीनताबोध से मुक्त हों

गांधीजी ने जब 'हिंद स्वराज' लिखी तो उसमें पहली बार किसी भारतीय ने पश्चिमी सभ्यता और जीवनशैली का एक कठोर मूल्यांकन मजबूती से प्रस्तुत किया। उस सभ्यता का एक हिंसक पक्ष दुनिया के सामने रखा। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने भारतीयों को मानसिक रूप से भी गुलाम बनाकर रखा है क्योंकि उन्होंने अपनी हिंसक, भोगवादी और युद्धवादी सभ्यता-संस्कृति का ऐसा आड़बर प्रस्तुत कर रखा है कि आम भारतीय उसके रौब और चकाचौंध को देखकर ही हीनता से ग्रसित हो जाते हैं। बल्कि उन्हें आधुनिक, सभ्य, उदार और उपकारी समझने की भूल करते हैं।

गांधीजी ने भारतीयों को इस हीनताबोध से निकल जाने को कहा। गांधीजी जानते थे कि सांस्कृतिक श्रेष्ठता-बोध को बहुत सूक्ष्म रूप से दूसरों के मन में बिठा देना भी गुलामी कायम रखने का एक प्रमुख औजार होता है।

कुछ हद तक राजनीतिक आजादी मिल जाने के बावजूद भारत का समाज सांस्कृतिक और मानसिक गुलामी से अब भी मुक्त नहीं हो पा रहा है। आज भी यहाँ भाषा, पहनावा, रूप, धन, पद, जाति, मजहब, त्वचा के रंग, नाक के आकार, क्षेत्र और लिंग आदि के आधार पर हीनता और श्रेष्ठता का भेद कायम रहता है। इनमें से किसी भी बात को आधार बनाकर दूसरों को हीनता का बोध कराया जाता है। यह स्थिति समाज और देश के लिए ठीक नहीं है। हीनताबोध से मनुष्यों के व्यक्तिगत जीवन में तो समस्याएँ पैदा होती ही हैं, साथ ही परिवार, समाज और देश भी भेड़चाल, अंधानुकरण और नकलची बनने की राह पर चल पड़ते हैं। इससे एक नये प्रकार की पतनशीलता और गुलामी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसलिए गांधीजी की यह सीख भी जीवन में अपना सकें तो बहुत-सी मानसिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान होगा। हमारे जीवन में आत्मविश्वास तभी आएगा जब हम स्वयं में सदृशुओं का विकास करेंगे। सादगी, संयम, शुचिता और सात्त्विकता का जीवन जीएंगे। फिर हम अपना आदर्श चुनने में भी सजग-सतर्क बनेंगे।

अपने आचरण से पेश करें मिसाल

गांधीजी ने जब कहा कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है, तब उन्होंने हमें यही समझाने की कोशिश की कि हम सबका जीवन ही हमारा वास्तविक संदेश होता है। हम मुँह से कुछ भी कहते रहें, बड़ी-बड़ी बातों से भरे लेख लिखते रहें, भाषण देते रहें, लेकिन यदि वे विचार हमारे स्वयं के जीवन में और आचरण में न हों तो उनका कोई फायदा न तो हमें स्वयं मिलेगा और न ही उनका कोई सकारात्मक प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा, बल्कि समाज में पाखंड और दोहरे चरित्र का संदेश ही जाएगा। परस्पर अविश्वास तथा उपहास और निराशा की स्थिति ही पैदा होगी। इसलिए गांधीजी ने कहा कि सौ उपदेशों से भी बढ़कर यह है कि हम अपनी एक-आध बात पर ही स्वयं अमल करके दिखाएं। हमें अपने जीवन और आचरण से ही श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। तभी वह अपने लिए लाभकारी और दूसरों के लिए प्रभावकारी हो पाएगा।

गांधीजी का विचार था कि 'स्व' को समझे बिना हम वास्तविक स्वराज की प्राप्ति नहीं कर सकते। 'स्व' को, शुद्ध चैतन्य आत्म को अथवा 'सत्य' को श्रद्धापूर्वक समझे बिना न तो हमें स्वयं अपने जीवन में कोई समाधान मिल पाएगा और न ही हम दूसरों के कल्याणमित्र बन सकेंगे।

नोएडा में रहने वाले लेखक 'महात्मा के महात्मा' और 'गांधी के श्रीमद्' जैसी बहुचर्चित पुस्तकों के रचयिता तथा श्रीमद् राजचंद्र, महात्मा गांधी और संत विनोबा के विचारों के प्रति समर्पित साधक, प्रबुद्ध चिंतक और समाज कर्मी हैं।



अहिंसा का अर्थ हिंसा की अनुपस्थिति !

अहिंसा मानव चेतना का गुणात्मक उत्कर्ष है। अहिंसा उदारता का परिणाम नहीं है। न अहिंसा का कोई पर्याय हो सकता है, शांति भी नहीं। शांति वलपूर्वक भी स्थापित की जा सकती है किन्तु अहिंसा में वल की कोई कल्पना नहीं है। अहिंसा प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और मैत्री उपजाती है। अहिंसा एक प्रकार की आत्मिक शक्ति है।

अहिंसा का अर्थ केवल किसी को मारना ही नहीं है, उससे प्रेम करना भी है। सक्रिय अहिंसा प्रेम से लबरेज होती है। वहाँ क्रोध के लिए कोई जगह नहीं होती। उसमें धैर्य का बड़ा महत्व होता है क्योंकि धैर्य छूटा कि अहिंसा टूटी। अपने दैनिक जीवन में ईमानदारी से सच्चाई, विनम्रता, सहिष्णुता और प्रेममय दयालुता के व्यवहार से मनुष्य अहिंसा के मार्ग पर चल सकता है। अहिंसा का अर्थ है हिंसा की अनुपस्थिति। अहिंसा इसलिए कोई कर्म नहीं है। यह एक धर्म है। महात्मा गांधी ने कहा था कि अहिंसा का धर्म केवल ऋषियों और संतों के लिए ही नहीं है। यह सामान्य लोगों के लिए भी है।

जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा की खोज की, वे किसी भी वैज्ञानिक से अधिक प्रतिभाशाली थे। वे सिकंदर जैसे सम्राटों से भी बड़े योद्धा थे। शस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान होने पर भी उन्होंने उसकी व्यर्थता को पहचाना और अशांत मानव को बताया कि उसकी मुक्ति हिंसा में नहीं अपितु अहिंसा में है। हिंसा केवल प्रत्यक्ष ही नहीं होती। जैसे युद्ध, आतंकवाद आदि। वह अप्रत्यक्ष रूप से हमारी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा परिवारिक संरचनाओं में भी व्याप हो सकती है। यहाँ तक कि हमारी आस्था और विश्वास तथा विचारों में भी अपस्थित हो सकती है।

वास्तव में हिंसा समाज में विषमता की उपज है। इसे जाति, लिंग, धर्म, भाषा, प्रांत, क्षेत्र, संस्कृति, सामाजिक स्थिति, शिक्षा, व्यवसाय, आय, संपत्ति और शक्ति के आधार पर देखा जा सकता है। इसी विषमता को दूर करने के लिए हिंसक क्रांतियां भी हुई हैं। उच्च चेता लोगों ने समता को मानवतावादी, प्रकृतिवादी तथा आदर्शवादी मूल्य माना है। इसीलिए समान अधिकार एवं कर्तव्य की लोकतान्त्रिक अवधारणा का विकास हुआ है।

दुनिया के किसी भी धर्म में अहिंसा का सिद्धांत इतनी गहराई से और व्यवस्थित रूप में नहीं मिलता है जितना जैन धर्म में मिलता है। वहाँ अहिंसा की अवधारणा का विस्तार न केवल मनुष्यों तक, बल्कि सभी जानवरों, पौधों, सूक्ष्म जीवों और सभी प्राणी जिनमें जीवन या जीवन की संभावना हो, तक है। इस धर्म की विलक्षण अवधारणा है कि प्रत्येक जीवन पवित्र है और हर किसी के पास अपनी अधिकतम क्षमता तक अभयपूर्वक जीने का अधिकार है।

"अहिंसा परमो धर्मः" शास्त्रीय वचन है। पतंजलि ने आत्मशुद्धि की साधना के पाँच यमों में अहिंसा को पहला स्थान दिया है। बौद्ध मत ने भी अहिंसा को अपने सम्यक् संकल्प का मुख्य अंग मानकर उसे स्वीकृति दी है। गोस्वामी तुलसीदासजी



अहिंसा



महात्मा गांधी ने व्यक्ति के अहं के विसर्जन तथा न्यासिता के जरिये एक अहिंसक समाज बनाने का प्रयत्न किया। उनकी दृष्टि में आदर्श समाज व्यवस्था वही हो सकती है जो पूर्णतः अहिंसक हो। वे मानते थे कि एक अहिंसक आदर्श समाज में किसी राजनीतिक शक्ति या राज्य की भी कोई आवश्यकता नहीं रहेगी।

'मानस' के उत्तरकाण्ड में "परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा" कहकर इसका अनुमोदन करते हैं। महात्मा गांधी ने व्यक्ति के अहं के विसर्जन तथा न्यासिता के जरिये एक अहिंसक समाज बनाने का प्रयत्न किया। उनकी दृष्टि में आदर्श समाज व्यवस्था वही हो सकती है जो पूर्णतः अहिंसक हो, जहाँ हिंसा का विचार ही लुप्त हो जाये। वे तो यहाँ तक मानते थे कि एक अहिंसक आदर्श समाज में किसी राजनीतिक शक्ति या राज्य की भी कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। बापू कहते थे एक अहिंसात्मक समाज राज्यविहीन होगा।

अहिंसा एक प्रकार की प्रतिबद्धता है। यह प्रतिबद्धता थोपी हुई नहीं हो सकती है। मनुष्य जैविक विकास का सर्वश्रेष्ठ स्तर है जिसमें भौतिक विकास ही नहीं है बल्कि चेतना का विकास भी हुआ है। चेतना का उच्च स्तर पाकर मानव ने अपने आपको एक ऐसा व्यापक जीवन दर्शन दिया जिसमें अहिंसा उसका दायित्व हो जाती है। हम कह सकते हैं कि अहिंसा मानव चेतना का गुणात्मक उत्कर्ष है। अहिंसा उदारता का परिणाम नहीं है। न अहिंसा का कोई पर्याय हो सकता है, शांति भी नहीं। शांति बलपूर्वक भी स्थापित की जा सकती है किन्तु अहिंसा में बल की कोई कल्पना नहीं है। अहिंसा प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और मैत्री उपजाती है। अहिंसा एक प्रकार की आत्मिक शक्ति है।

मनोविज्ञानी भी मानते हैं कि हिंसा के मूल में दूसरे को खुद से अलग मानना होता है। दूसरे के अस्तित्व को अपने ही जैसा मान लेने की भावना से संचालित व्यवहार ही हिंसा का तिरोहण है। सामने वाले की गरिमा को चोट पहुँचाना भी हिंसा है। भारतीय संविधान कानून के शासन से यह रास्ता प्रशस्त करता है।

विद्वान लेखक जैनेन्द्र का कहना था, "अहिंसा एक कला है। उसमें आत्यन्तिक अनाग्रह अपेक्षित होता है और अपने से अधिक अन्य की सत्ता को सम्मान में रखा जाता है। सत्य के आग्रह के विपक्ष में इस नितान्त अनाग्रह को अहिंसा कहेंगे।" उनके इन विचारों में 'अपने से अधिक अन्य की सत्ता के सम्मान' पर बल है। यदि अहिंसा परिपूर्ण हो और साथ ही सत्य के आग्रह को भी सम्पूर्ण रखा जा सके तो जैनेन्द्रजी का विश्वास है कि इसमें जीवन का समग्र आदर्श प्रस्तुत हो सकता है। दूसरे शब्दों में, यह अहिंसा की परमधर्मता की पुष्टि है।

बापू के लिए अहिंसा उसी प्रकार से मानव जाति का नियम है जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। उन्होंने इसे कुछ यूं समझाया था कि पशु की आत्मा सुसावस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति के नियम को ही जानती है, लेकिन मानव की चेतना उच्चतर होती है जिससे अहिंसा के नियम की पालना होती है।

गांधी ने अहिंसा का पाठ अपनी पत्नी से पढ़ा। उन्होंने लिखा, "जब मैंने उसे अपनी इच्छा के सामने झुकाने की कोशिश की। एक ओर, मेरी इच्छा के दृढ़ प्रतिरोध और दूसरी ओर मेरी मूर्खता को चुपचाप सहने की उसकी पीड़ा को देखकर अंततः मुझे अपने पर बड़ी लज्जा आयी और मुझे अपनी इस मूर्खतापूर्ण धारणा से मुक्ति मिली कि मैं उस पर शासन करने के लिए ही पैदा हुआ हूँ। अंत में, वह मेरी अहिंसा की शिक्षिका बन गयी।"

गांधीजी कहते थे कि आप अहिंसा का अनुगमन कर रहे हैं, उसका पता तब मिलता है जब चारों ओर हिंसा का नंगा नाच हो रहा हो। इसीलिए उन्होंने यह भी कहा कि इस मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है। क्या प्रत्येक के लिए ऐसा संभव है? इस पर गांधी ने बड़ी खूबसूरत बात कही कि "जीवन का आनंद लक्ष्य को प्राप्त करने में नहीं बल्कि उसके लिए सदैव प्रयत्न करते रहना है। हम उसके निकट पहुँच सकते हैं किन्तु उसे कभी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सकते।

अहिंसा का आदर्श गणितशास्त्र के उस बिन्दु के समान है जिसकी पूर्ण उपलब्धि तो संभव नहीं है, लेकिन यथार्थ जीवन में जिसके निकट हम अवश्य पहुँच सकते हैं।" अणुव्रत जैसे छोटे-छोटे प्रयास हमें अहिंसा के आदर्श को सम्पूर्ण अवस्था में पाने के निकट ले जाते हैं।

जयपुर में रहने वाले लेखक करीब 50 वर्ष से पत्रकार के रूप में संचार के सभी माध्यमों में सक्रिय रहे हैं। विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा कला जगत में वे विशेष रुचि रखते हैं।



फूल मुरझा जाते हैं!

देश को ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जो साधारण आदमियों की कठिनाइयों को समझें और अपने विशाल वैभव का कुछ अंश उन कठिनाइयों को कम करने के लिए नियोजित करें। अर्जन का आनंद विसर्जन से जुड़कर और विस्तृत हो जाता है। परार्थ से मिलने वाला सुख अधिक तृप्तिवायक होता है। सम्पन्नता की सार्थकता विपन्नता के कष्टों को हरने में है।

लगभग ढाई-तीन दशक पहले की बात है। कोलकाता के पोद्दार कोर्ट स्थित आयकर विभाग में हर दिन मेरे 2-4 घंटे बीतते। वहाँ एक बोर्ड पर सुन्दर अक्षरों में लिखा था - "जहाँ कहीं भद्रापन देखो, वहाँ सौंदर्य की सृष्टि करो"। उस वाक्य की पृष्ठभूमि में गुलाब का एक फूल अति कलापूर्ण रूप से चित्रित था।

मैं उस छोटे से वाक्य को रोज पढ़ता और धीरे-धीरे अपने अवचेतन में मानने लगा था कि यह बात उस गुलाब के फूल ने ही कही है। मगर अफसोस, 'भद्रापन' अब केवल शब्दकोश में लिखी परिभाषा में नहीं जीता। वह इतना पसर चुका है कि "जहाँ कहीं" वाली बात "हर कहीं" पहुँच चुकी है। भद्रापन अब हर कहीं है।

एक बार की बात है। मैं कहीं जा रहा था। रास्ता जाम था। गड़ी खड़ी हो गयी। मेरी नजर फुटपाथ पर गयी। वहाँ पेड़ से सहारा लिये एक महिला बैठी थी। पास में 2 वर्ष से लेकर 8-9 वर्ष तक के पाँच बच्चे खड़े थे। किसी के भी तन पर पूरे वस्त्र नहीं थे। मुझे वह दृश्य और उसके पीछे छुपी असमानता की खाई में भद्रापन नजर आया। फुटपाथों पर जन्म लेने व अड़ोस-पड़ोस की भर्तस्ना एवं प्रताड़ना के बीच वहाँ पलने वाले अधनंग और अथभूखे वे सारे

बच्चे अकस्मात मेरी आँखों में समा गये। मेरे मन में एक साथ वे सब दृश्य उभर रहे थे जो भद्रे थे, जिन्हें मैंने देखा था और जो मेरे मन में घर किये हुये थे, पर जैसे मुझे इस बात का भान नहीं था।

अपने गाँव में मकान बनवा रहा था। 10-11 साल का एक बच्चा भी काम पर आता था। एक दिन दोपहर को कुलपी बेचने वाला आया। गर्मी की छुट्टी चल रही थी। मेरे बच्चे घर पर थे। मैंने सबको बर्फ दिला दी। वह बाल मजदूर भी वहाँ आकर खड़ा हो गया और बर्फ खाते बच्चों की ओर ललचायी आँखों से एकटक देखता रहा। मैं उसे देख रहा था, पर मैंने उस बाल मजदूर को बर्फ नहीं दिलायी और सौंदर्य की जगह सदा-सदा के लिए मन को बोझिल बना देने वाले भद्रेपन की सृष्टि कर डाली।

मेरे एक सम्बन्धी के पुत्र की बरात मेरे गाँव में आयी। शाम को परिणय-स्थल की ओर जाते हुए वह मेरे घर के सामने रुकी। मैंने बरातियों के स्वागतार्थ अल्पाहार का आयोजन किया। अगले दिन सुबह मेरे घर में काम करने वाली नौकरानी की लड़की स्कूल जाने के लिए तैयार होकर नीचे आयी और सीधे उस हॉल में घुस गयी जिसमें कल बरात का आगमन हुआ था। कुछ समय तक वह बाहर नहीं निकली तो मैं अंदर गया। उससे पूछा - "स्कूल जाने में तुम्हें देरी हो रही है। तुम यहाँ क्या कर रही हो?"





अभाव के दयनीय दृश्यों को चित्रित करना सहज नहीं, पर इतना समझ लेना सहज है कि भूखे पेट, नंगे बदन, नंगी जमीन और खुला आकाश - गरीबी का अभिशाप यहीं समाप्त नहीं हो जाता, यहाँ से शुरू होता है। दरिद्रता से उपन्न भद्रापन बहुमुखी है और अंतीम भी। स्कूल जाने की जगह पेट पालने की चिंता से ग्रसित घरों, चाय की दुकानों, ढाबों, कारखानों आदि में डॉट-फटकार और शारीरिक सजाओं के बीच 12-15 घंटे कड़ा श्रम करने वाले अल्पवय बच्चे, किसी तरह दस-बीस रुपये पैदा करने का लक्ष्य लिए दुर्गम्भी भरे कूड़े के ढेर में से कागज, प्लास्टिक आदि बीनने वाले असहाय लोग और दूसरी तरफ सामान्य व्यापार, व्यवसाय व व्यवहार में बढ़ता छल-कपट और घटता पारस्परिक विश्वास समूची व्यवस्था के खोखलेपन के भव्य दृश्य हैं।

पीछे भागा। उसके मन में या तो यह शंका थी कि भाई अकेला ही पूरा केला खा लेगा या फिर वह अपने हिस्से का आधा केला खाने के लिए बहुत लालायित था। मैंने आवाज देकर उसे बुलाया और उसे भी एक केला दे दिया। उसकी आँखों में खजाना पा लेने जैसी खुशी थी। दोनों भाई खुशी में झूमते हुए घर चले गये, पर मैं खोया-सा अपने मन में कुछ खोज रहा था। वहाँ वह खुशी नहीं थी जो एक बच्चे को पुलकता देखकर होती है। वहाँ निर्धनता और अभाव के वे भव्य दृश्य थे जो हर कहीं हैं और भीतर ही भीतर सजा-सी देते रहते हैं।

अभाव के दयनीय दृश्यों को चित्रित करना सहज नहीं, पर इतना समझ लेना सहज है कि भूखे पेट, नंगे बदन, नंगी जमीन और खुला आकाश - गरीबी का अभिशाप यहीं समाप्त नहीं हो जाता, यहाँ से शुरू होता है। दरिद्रता से उत्पन्न भद्रापन बहुमुखी है और अंतीम भी। स्कूल जाने की जगह पेट पालने की चिंता से ग्रसित घरों, चाय की दुकानों, ढाबों, कारखानों आदि में डॉट-फटकार और शारीरिक सजाओं के बीच 12-15 घंटे कड़ा श्रम करने वाले अल्पवय बच्चे, किसी तरह दस-बीस रुपये पैदा करने का लक्ष्य लिए दुर्गम्भी भरे कूड़े के ढेर में से कागज, प्लास्टिक आदि बीनने वाले असहाय लोग और दूसरी तरफ सामान्य व्यापार, व्यवसाय व व्यवहार में बढ़ता छल-कपट और घटता पारस्परिक विश्वास समूची व्यवस्था के खोखलेपन के भव्य दृश्य हैं।

प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा से लंदन में एक पत्रकार ने मुम्बई स्थित विश्व के सबसे कीमती भवन के विषय में पूछा। टाटा ने कहा- "मुझे आश्वर्य है कि अरबों रुपये के भवन की भव्यता के बीच रहने की इच्छा कोई क्यों रखता है? चारों ओर जो दिखता है, उससे उसे चिन्तित होना चाहिए और वह क्या कुछ अन्तर ला सकता है, इस पर सोचना चाहिए। देश को ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जो साधारण आदमियों की कठिनाइयों को समझें और अपने विशाल वैभव के कुछ अंश को उन कठिनाइयों को कम करने के लिए नियोजित करें।

टाटा के ये उद्गार चिंतन हेतु एक बड़ा प्रश्न सामने रखते हैं। जिस प्रश्न पर मन को ठहरना चाहिए यह समझ लेने के लिए कि अर्जन का आनंद विसर्जन से जुड़कर और विस्तृत हो जाता है। सम्पन्नता की सार्थकता विपन्नता के कष्टों को हरने में है। अंधेरों के साथ कुछ इस तरह हमलोग रच-बस गये हैं कि प्रकाश की ओर बढ़ने की, भद्रापन मिटाने की, सौन्दर्य की सृष्टि करने की मन में कोई स्फुरण ही नहीं होती, कोई इच्छा ही नहीं जागती।

फूल अपनी बात कह देते हैं। उसे दोहरा भी देते हैं, पर आदमी फूलों की बात नहीं सुनता। सुन लेता है तो समझता नहीं। समझ लेता है तो अमल नहीं करता। कोमल, करुण-हृदय फूल यह सब देखते हैं और मुरझा जाते हैं।

कोलकाता निवासी लेखक कई दशकों से आयकर अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए साहित्य सूजन में संलग्न हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।



संस्कार बनाते हैं जीवन को सार्थक

संस्कार एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति में विद्यमान नकारात्मक प्रवृत्तियों का शोधन व उन्मूलन करने के साथ ही उसमें मानवीय मूल्यों का आत्मसात कराकर उसे एक ऐसे आदर्श और विशिष्ट व्यक्तित्व में परिवर्तित कर देती है, जो स्वयं के लिए तथा समाज के लिए अधिक विवेकशील, उत्तरदायी तथा कर्तव्यपरायण बनने की हेतु बन जाती है।

सं स्कार व्यक्ति की अन्तर्शेतना को शुद्ध, परिष्कृत, सुसंस्कृत व अलंकृत करते हैं। संस्कार वह सुगन्ध है जिससे जीवन रूपी गुलदस्ते को सुवासित बनाया जा सकता है। संस्कार रूपी पुष्प से जीवन की बगिया को महकाया जा सकता है। संस्कार वे छोटे-छोटे मील के पत्थर हैं जिनके द्वारा हम अपने गन्तव्य को प्राप्त कर सकते हैं।

संस्कार एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति में विद्यमान नकारात्मक प्रवृत्तियों का शोधन व उन्मूलन करने के साथ ही उसमें मानवीय मूल्यों को आत्मसात कराकर उसे एक ऐसे आदर्श और विशिष्ट व्यक्तित्व में परिवर्तित कर देती है, जो स्वयं के लिए तथा समाज के लिए अधिक विवेकशील, उत्तरदायी तथा कर्तव्यपरायण बनने की हेतु बन जाती है। संस्कार से ही भावशुद्धि, विचारशुद्धि एवं कर्मशुद्धि होती है और जीवन सार्थक होता है। अन्तःकरण शुद्ध होता है। संस्कार से संस्कृति बनती है और सामाजिक मूल्य विकसित होते हैं। संस्कार वह मुहर है जिससे जीवन रूपी सिक्के को बहुमूल्य बनाया जा सकता है।

मौजूदा दौर में हम सांस्कृतिक हलचल और मूल्यों के अकाल व अभाव के दौर से गुजर रहे हैं। आज लोग भौतिक सुख-सुविधाओं में इतने अधिक लिस हो गये हैं कि ऐसा लगता है जैसे

सामाजिक जीवन से सत्य-निष्ठा, नैतिकता, समाज के प्रति कर्तव्य भावना इत्यादि का लोप होता जा रहा है। इस चारित्रिक पतन का कारण बचपन से ही मानवीय मूल्यों का आत्मसात करने की प्रक्रिया का न होना है। यदि बचपन से ही समता, प्रेम, सत्यवादिता, सदाचार आदि गुणों का आरोपण हो जाये और सम्पूर्ण जीवन पर्यन्त इन मूल्यों और संस्कार का परिपालन स्वभाव का अंग बन जाये तो यह व्यक्ति को एक आदर्श रूप प्रदान कर सकता है।

आज हर माँ-बाप चाहते हैं कि उनका बच्चा अच्छी से अच्छी, उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करे। अपनी संतान में अच्छे संस्कारों के बीजारोपण के प्रति उनकी ललकनहीं दिखायी देती। वे भूल जाते हैं कि अच्छी शिक्षा एक अच्छा वकील, अच्छा डॉक्टर, अच्छा इंजीनियर आदि तो बना सकती है, लेकिन एक अच्छा और सुसंस्कारी व्यक्ति नहीं बना सकती।

आज समाज व राष्ट्र में अच्छे इंसानों का, जो सहदय हों, सेवाभावी हों, स्वार्थ से परे हों, शनैः-शनैः अभाव होता जा रहा है। ऐसे समय में समाज को अच्छी शिक्षा के साथ-साथ उच्च संस्कारों की बहुत जरूरत है। शिक्षा जीवन-निर्वाह की कला सिखाती है, जबकि संस्कार जीवन-निर्माण की कला सिखाते हैं।





राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, ‘‘संस्कारों की सीढ़ी से चढ़कर ही उन्नति के शिखर पर पहुँचा जा सकता है।’’ संस्कारों द्वारा ही चरित्र का निर्माण होता है। चरित्र मानवता का आधार है। जीवन में धन-सम्पदा विद्या, रूप से भी कहीं अधिक महत्व चरित्र का है। चरित्र जीवन की असली सम्पत्ति है।

संस्कार वही दे सकता है जिसने जीवन में स्वयं संस्कार अर्जित किये हैं। इसलिए संतान को यदि सद्गुरुवरण या सुसंस्कार देना है तो माता-पिता तथा अभिभावकों को आचरणवान और संस्कारवान होना अति आवश्यक है। बच्चे पान के कोमल पत्ते के समान होते हैं। पान सूखने के बाद मुड़ता नहीं है, उसी प्रकार एक निश्चित उम्र के बाद बच्चों को संस्कार दे पाना कठिन हो जाता है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों को बड़ों का सम्मान करना, लिहाज करना, अभिवादन करना सिखाएं। संत संस्कारों की जीवंत पाठशाला होते हैं। बच्चों को कभी-कभी संतों की संगति प्राप्त करने के अवसर भी मुहैया कराएं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, “संस्कारों की सीढ़ी से चढ़कर ही उन्नति के शिखर पर पहुँचा जा सकता है।” संस्कारों द्वारा ही चरित्र का निर्माण होता है। चरित्र मानवता का आधार है। जीवन में धन-सम्पदा विद्या, रूप से भी कहीं अधिक महत्व चरित्र का है। चरित्र जीवन की असली सम्पत्ति है।

लेखक सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय मुंबई स्थित के. के.
सोमैया इंस्टीट्यूट ऑफ धर्मा स्टडीज में जैन अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष हैं।

लघुकथा

कीमती चीज

■ अखिलेश श्रीवास्तव चमन - लखनऊ ■

गॉव के प्राइमरी स्कूल के मास्टर साहब केदारनाथजी का बेटा संजय दिल्ली में आयकर अधिकारी था। वह येन-केन-प्रकारेण अधिकाधिक पैसे कमाने में जुटा रहता था। उसने दिल्ली के पॉश इलाके में बंगला खरीदा था, विदेशी कार पर चलता था, उसकी पांच गहनों से लदी रहती थी। उसके घर में ऐशो-आराम की एक से बढ़कर एक आधुनिक चीजें मौजूद थीं।

वहीं, मास्टर साहब यह सोच-सोच कर दुःखी रहते थे कि उनके जैसे सच्चरित्र, संयमी और ईमानदार पिता का बेटा ऐसा भ्रष्ट और पैसों का लोभी कैसे हो गया। मन का बोझ जब हृद से अधिक बढ़ गया तो वे पांच के साथ दिल्ली चल दिये बेटे से मिलने।

मॉ-बाबूजी को अचानक आया देख संजय अचकचा गया। मास्टर साहब एकटक बेटे को देखे जा रहे थे। आयकर अधिकारी संजय के चेहरे में वे अपने सीधे-सादे बेटे मुन्नू को खोज रहे थे। वहां सादगी, संवेदनशीलता और भोलेपन का नामोनिशान नहीं था।

“क्या हुआ बाबूजी?” संजय ने टोका।

“बेटा! मेरी एक बहुत कीमती चीज खो गयी है। उसे ही ढूँढ़ रहा हूँ। सच कहो तो उसे ढूँढ़ने के लिए ही यहाँ आया हूँ।” मास्टर साहब ने जवाब दिया।

कीमती चीज? संजय सोच में पड़ गया। बाबूजी के पास तो घड़ी और चश्मा के अलावा कोई कीमती चीज कभी रही ही नहीं। फिर भला किस कीमती चीज के लिए परेशान होकर पिताजी गॉव से दिल्ली तक आ गये हैं।

“तो इसमें परेशान होने की क्या बात है?” आप खबर कर देते तो मैं पैसे भेज देता। कितनी कीमत है उस खोये हुए कीमती चीज की?” संजय बोला।

“मेरी वह चीज अनमोल है बेटा। वह पैसों से नहीं खरीदी जा सकती। दरअसल मैं अपने भोले-भाले बेटे मुन्नू को ढूँढ़ने आया हूँ जो दिल्ली की भीड़ में खो गया है।” यह सुनकर संजय ने आँखें नीची कर लीं। बाबूजी से नजरें मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी उसकी।



युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं

इतिहास की घटनाएं बताती हैं कि युद्ध समस्या का समाधान नहीं है क्योंकि हर युद्ध के बाद शांति का संचार समझौते के माध्यम से ही हो पाया है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद राष्ट्रसंघ की स्थापना से शांति हुई तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना से। ये समझौते अहिंसा, शांति, निर्माण और संरचना के प्रतीक हैं।

युद्ध प्रतीक है हिंसा का, तबाही का, बर्बादी का और शांति प्रतीक है अहिंसा का, सम्मान का एवं निर्माण का। आज समूचा विश्व संकट के दौर से गुजर रहा है। हिंसा के दावानल में विश्व का अधिकांश हिस्सा धू-धू कर जलता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। जब आम जनमानस शांति चाहता है तो विश्व में यह अशांति की स्थिति क्यों? यह समझ से परे है।

भगवान महावीर ने संपूर्ण मानवता को अहिंसा और शांति का संदेश दिया। उनका मानना था कि अहिंसा का पथ राजपथ है। यदि कोई इस पथ से भटक गया तो फिर उसका पतन निश्चित है।

एक बार भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने उनसे पूछा, "आप कहते हैं कि अहिंसा का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है तो हिंसा के मार्ग पर चलकर लोग अपने लक्ष्य तक क्यों पहुँचना चाहते हैं?" बुद्ध बोले- "जैसे एक कारीगर कई दिनों तक छेनी और हथौड़ी से प्रयास करता हुआ एक पत्थर के टुकड़े को भगवान का रूप दे देता है किंतु उसी पत्थर को यदि तोड़ना हो तो एक क्षण में ही उसे तोड़ा जा सकता है। संरचना कठिन है किंतु विध्वंस बहुत आसान है। वैसे ही अहिंसा का मार्ग जटिल है और हिंसा का मार्ग सरल है। लोग सरल मार्ग पर चलना चाहते हैं, इसलिए हिंसा को अपनाते हैं।" अतीत के पृष्ठों को पलटने से भी ज्ञात होता है कि युद्ध से कभी शांति

नहीं हुई है। कलिंग युद्ध का विजेता सम्राट अशोक युद्ध की विभीषिका देखकर द्रवित हो उठा था। इस युद्ध के बाद उसके जीवन की दिशा ही बदल गयी और वह युद्ध-यात्रा के स्थान पर धम्म-यात्रा करने लगा। कई युद्धों के विजेता नेपेलियन को भी उसके युद्धों के लिए नहीं, बल्कि उसके द्वारा दी गयी विधि-संहिता के लिए याद किया जाता है। विश्व विजय का सपना देखने वाला सिकंदर विश्व विजय तो दूर, शरीर पर अनगिनत घाव लिये अपने देश भी सही सलामत नहीं पहुँच सका, रास्ते में ही दम तोड़ दिया।

इतिहास की ये घटनाएं बताती हैं कि युद्ध समस्या का समाधान नहीं है क्योंकि हर युद्ध के बाद शांति का संचार समझौते के माध्यम से ही हो पाया है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद राष्ट्रसंघ की स्थापना से शांति हुई तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना से। ये समझौते अहिंसा, शांति, निर्माण और संरचना के प्रतीक हैं।

मौजूदा समय में यूक्रेन और रूस के बीच हो रहे युद्ध से विध्वंस और महाविनाश के अतिरिक्त कुछ मिलने वाला नहीं है। दोनों ही देशों को समझ लेना चाहिए कि शांति के लिए भगवान महावीर और बुद्ध द्वारा प्रदत्त अहिंसा, संवाद एवं समझौते के मार्ग पर चलना ही होगा। ■■■



The Yoga-Educated Person

The yoga-educated person can guide such a society and can help it in its attempt towards a better way of living. His approach is based on the ancient system of Yoga, formulated after much thinking. His beliefs come from Patanjali who assures us that human progress proceeds step by step through different stages, from limitedness of material objects to unlimited states of pure consciousness.

At the very outset it would not be out of place to understand who really a yoga-educated person is. Is he one who has learnt Yoga to conquer his physical and mental illness, and weakness; or who has learnt Yoga to obtain occult powers; or who has learnt Yoga, like philosophers to keep alive this philosophy, because without the practice of Yoga, the teachings of any philosophy and Vedanta are like lifeless body; or is he one who has practised methods of Yoga to perceive Truth in the scriptural statements, because without the practice of Yoga, all scriptures are nothing but figurative statements; or is he one who has learnt Yoga in the form of hypnotism (a distorted form of Yoga) to become a professional hypnotist; or who has learnt Yoga merely for the sake of sensational magical powers.

In fact, a yoga-educated student is a person who has learnt yoga as a way of life impelled by an irresistible urge to become one with that mode of life by thought, word and deed. He is a person who knows how to sublimate his lower desire to higher desire and also how to lead his mind from untruth to truth, from darkness to light, from ignorance to knowledge, from pain, suffering, diseases and death to peace, happiness and eternity, from unreality to reality. He is a person who knows how to control the mighty waves of the mind and to subdue them completely to the primordial consciousness. In much simpler words, the yoga-educated person, who applies this education in his life, in fact, makes it his life, stands out in society as one with mental stability, one who understands the causes of the common problems of the society, also as





Through individual practice the yoga-educated person can show and inspire others to fill the gap between the body and the mind, through psychosomatic training with a view to controlling the external and internal senses which affect the equanimity and peace of mind.

one who has a will of his own and follows a code of values which are based on logical humanitarian beliefs which enable him to live peacefully by guiding his decisions in life.

The yoga-educated person can guide such a society and can help it in its attempt towards a better way of living. His approach is based on the ancient system of Yoga, formulated after much thinking. His beliefs come from Patanjali who assures us that human progress proceeds step by step through different stages, from limitedness of material objects to unlimited states of pure consciousness. The immediate should not be the goal, instead we must identify ourselves with higher objects. He draws his inspiration from Patanjali who suggests a new look at the problems of human suffering and human endeavours. Patanjali's message is more far reaching. He speaks of re-organising our values. He even mentions mastering the

external world, and shows us techniques to this effect. It is thus that the yogi, being a full master of the material world, performing as efficiently as any materialist, rejects the belief that the material world is the only final reality. He shifts his value reality to a more idealistic level, as it is only this that can satisfy man's deepest urges. He lays down a principle for disciplining oneself since his aim is not just a partial adjustment or the removal of a few psychosomatic symptoms but rather a total change of the whole personality (chitta).

As the yoga-educated person aims at the change of personality in the individual, it is possible through a particular education which is a process of evolution. As a matter of fact, the personality emerges from a coordinated development of body, mind and soul. The body constitutes the physical exterior or the enveloping sheath. The mind or the intellect is a live instrument useful as a conscious agency to understand the outside world by its contact through the organs of knowledge. The impact of the outside world propels the body into the world of action on the one hand, and on the other generates an emotional force. The force of emotions brings about the development of the individuality from within. Emotions collapse when the body and the intellect break down.

Thus the body, intellect and the emotions should simultaneously merge into a process of synthesis that ultimately flowers into the individuality of man. This process is simultaneous; this is the process of total education. The yoga-educated person is an individual who has undergone such a kind of education as underline the basic principles that by the manipulations of bodily postures, by the aggravation of mental concentration and by the process of introspection, there is a permeation of finer emotions ultimately blossoming into a serene consciousness of peace of joy. Such a person knows that Yoga has the potentiality of enabling human life, and universal sublimation can elevate human society with a gradual annihilation of



emotional tensions. Thus, the yoga-educated person believes in the holistic approach and shuns the disintegrated form of Yoga. For him, in the words of Shri Yogendraji, "Integrated yoga is simply a technology of holistic education of man and through him of the society towards self-evolution and human good. The ultimate achievements of yoga is the transformation of personality from the disintegrated into the integrated one and, from the ignoble to the noble in being."

A yoga-educated person, thus, is not a self individual or an escapist who always thinks of his own development but he also thinks of universal development. From the smaller unit he expects to perfect the bigger unit. From individual development he proposes to do social development. For the development of individual personality the integrated approach has to be undertaken. The change must be at all levels - physical, mental, moral, emotional and spiritual. The yoga-educated person can be a model for others to follow. He can emit vibrations that can create a favourable climate in society. The technique, study and Sadhana which he himself has done, can inspire people in society. Even by his very way of life he can attract people towards him. When people suffering from tensions and diseases come to notice his very happy, contended and sublime life, they will also like to emulate his special way of life. This is how he can help society in its search for health and happiness.

Along with his own personal development, he must also propagate yogic ideals and beliefs and see that others in society receive benefits through his education. This is, of course, a very difficult task because society is not made up of all like-minded people. There may be people who are allergic to Yoga, and again there are those who are blissfully ignorant of the best in Yoga and the yoga-educated person must be prepared to face such odd circumstances and surroundings. He must, however, try to do his

best in society. Serving the society may, perhaps, be a very vague word and as such he must initially begin at home where he has comparatively much understanding with the members of family, it is just possible that he might have some difficulty here also but persistent efforts would help him in maintaining a rapport with his own people. It is easier to prevail upon them rather than on others in society. So in the first instance he must educate his own family and thereby his neighbourhood, his social circle and so forth.

For the purpose of educating people in the science of self-culture, the yoga-educated person must follow the essence of the eightfold path of Yoga as enunciated by Patanjali. This will represent the way of life which endows perfect health - physical, mental, moral and spiritual - so that what is ignoble in man is sublimated to what is most noble in him.

Briefly, it is only the yoga-educated person who can guide the misguided humanity in the modern times by his extraordinary philosophy of life which is based on the eternal values of human life. Apart from his own individual development he can help others in society in their search for a meaning in their earthly existence. He can pave a path for the better understanding between man and man thereby helping in the realization of the dream of a world-family. By perfecting himself and others around him he can put society on a firmer footing aiming at further evolution. Finally, it must be undoubtedly understood that a yoga-educated person will never shirk his duties to society since his interest is in his personal evolution as well as of others.

The author lives in Jaipur and he is a renowned professor having deep knowledge of Yoga. He is associated with Anuvrat Movement and was national convenor of Anuvrat Lekhak Manch.





कहानी

ਬਸ ਥੋੜਾ-ਸਾ ਘਾਰ...

■ एस. भाग्यम शर्मा ■

बुजुर्गों के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि वे जो कर रहे हैं या कह रहे हैं, उसे स्वीकार किया जाये, उनकी वातें ध्यान से सुनी जाएं और उन पर अमल भी किया जाये। इससे उन्हें आत्मीय खुशी मिलती है। वे सोचते हैं कि इस ढलती उम्र में परिवार के लिए उनकी उपयोगिता है, स्वीकार्यता है।

सु बह आँखें खोलते ही मुझे याद आया कि आज चंदाबाई काम पर नहीं आएगी और एक लंबी सांस छोड़ते हुए मैं बिस्तर से उठ गयी।

पहले से ही तैयार हो रहा बेटा राजू बोला, "मम्मी जल्दी से मुझे चाय बनाकर दो। 6:30 से 8:30 बजे तक गणित की कोचिंग है। इसलिए एक घंटा ज्यादा क्लास होगी।" ...और वह अपना बैग जमाने लगा।

"नम्रता, दो दिन से दाल की पकड़ी खाने की बड़ी इच्छा हो रही है। शाम को बना देना।" पति नरेंद्र फरमाइश करते हुए मॉर्निंग वॉक के लिए रवाना हो गये।

मेरे ऑफिस में आज 10 बजे एक जरूरी मीटिंग थी। वहाँ कल शाम को ही सामने वाले घर में रहने वाली शोभना ने भी मेरे साथ ही चलने की बात कही थी। उसकी बात भी मुझे याद आयी। मैंने गैस चूल्हा जलाकर खाना बनाने की तैयारी शुरू कर दी।

"नम्रता..." कहते हुए सासू माँ रसोईघर में मेरे बगल में आकर खड़ी हो गयीं। उधर ससुरजी भी बिस्तर से उठकर बाथरूम की तरफ बढ़ गये।

"ममी जी, आज चंदाबाई छुट्टी पर है। चाय बनाने में थोड़ी देर लगेगी। कई बार सब कुछ एक साथ हो जाता है।" न चाहते हुए भी मेरी आवाज में थोड़ी तल्खी आ गयी थी।

"अरे! ऐसा है तो मैं तुम्हारी मदद कर देती हूँ। सब्जी निकाल दो, मैं काट दूँ।" कहकर चाकू लेने के लिए मेज की तरफ जा रही सासू माँ का हाथ पकड़कर मैंने मना किया - "आप बैठिए, मम्मी जी। मैं सब देख लूँगी। पिछले हफ्ते ही तो पालक काटते समय आपकी अंगुली कट गयी थी।"

"ठीक है। फिर मैं दूध गर्म कर देती हूँ। चार पैकेट दूध ऐसे ही रखा है।"

"अरे बापरे! नहीं मम्मी जी। दो दिन पहले ही दूध उबल कर गिर गया था और आपको पता भी नहीं चला था...। दूध नीचे फैल गया और बर्नर में बुरी तरह चिपक गया था। बाद में उसे छुड़ाने में मुझे कितनी मुश्किल हुई थी।"

"सही बात है बेटी। मुझे आँखों से कम दिखता है और कानों से भी कम सुनायी देता है। चलो छोड़ो... मैं झाड़-पोंछा आराम से कर देती हूँ। ठीक है?" सासू माँ बोलीं।

"अरे! आप रहने दीजिए। एक दिन झाड़-पोंछा नहीं लगेगा तो कोई पहाड़ नहीं टूट पड़ेगा। गीला फर्श पूरी तरह से सूख जाये, ऐसा निचोड़-निचोड़ कर पोंछा लगाना पड़ता है। पिछली बार गीले फर्श पर फिसलकर पापाजी गिर गये थे। वह तो अच्छा हुआ कि उन्हें फ्रैक्चर नहीं हुआ। याद है, उस दिन आपके बेटे ने मुझे काफी डांटा था कि मम्मी से ऐसे काम क्यों करवाती हो।"

यह सुनने के बाद सासू माँ उतरा हुआ चेहरा लेकर अपने कमरे में चली गयीं।

क्या करूँ? मैंने तो सही बात ही कही थी? सास-ससुर दोनों की ही उम्र 80-85 साल के करीब है। उनका शरीर कमजोर हो गया है। उन्हें कई सारी बीमारियां भी हैं। ऐसे में वे कोई भी काम करते हैं तो गलत-सलत हो जाता है। ...और यदि वे गिर-पड़ जाएं या हाथ-पैर जल जाये तो फिर समस्या हो जाएगी न?

"चाय तैयार है मम्मी जी, ले लीजिए।" मैंने उन्हें कप पकड़ाया।

उन्होंने मेरी ओर देखे बिना ही कप ले लिया। शायद मेरी बातों से उन्हें दुःख पहुँचा है या फिर वे गुस्से में हैं। मेरे मन में ऐसी आशंका हुई तो मैं पूछने से खुद को नहीं रोक पायी - "क्या हुआ मम्मी जी?"

"कुछ नहीं..."

"ठीक है। आप आराम कीजिए। पापाजी को खांसी हो रही है। मैंने अदरक और तुलसी डालकर चाय बनायी है। उन्हें गरम-गरम पीने को कहिएगा।"

इस बीच मैंने किचन का सारा काम पूरा किया और स्नान करने चली गयी, मगर मेरा मन भारी हो गया था। मम्मी जी का उदास चेहरा जैसे मेरी आँखों में खटक रहा था।

कई बहुएं बुजुर्ग सास-ससुर की परेशानी नहीं समझतीं और उनसे घर के सारे काम करवाती हैं। वीणा को ही देख लो? अपने

"वहां कर्कश? मैंने तो सही बात ही कही थी? सास-ससुर दोनों की ही उम्र 80-85 साल के करीब है। उनका शरीर कमजोर हो गया है। उन्हें कई सारी बीमारियां भी हैं। ऐसे में वे कोई भी काम करते हैं तो गलत-सलत हो जाता है। ...और यदि वे गिर-पड़ जाएं तो फिर समस्या हो जाएगी न?"

कपड़े तह करने के लिए भी सास को ही कहकर जाती है। किराणे का सामान, साण-सब्जी, दूध सब कुछ ससुर जी को ही लाने के लिए कहती है। मैं तो मम्मी जी को बस आराम से ही रहने के लिए कह देती हूँ। क्या उनके प्रति स्नेह और सम्मान के बिना मैं ऐसा कहती हूँ? फिर इन्होंने क्यों इस तरह मुँह सूजा रखा है...?

इसी सोच-विचार में ढूबी मैं साथ-साथ तैयार भी हो रही थी कि बाहर से शोभना की आवाज आयी - "नम्रता, मैं तैयार हूँ। बस पांच मिनट और...ओके!" मीठी हँसी की खनक बाली उसकी आवाज सुनाकर मैंने कहा - "हाँ शोभना, मैं भी तैयार हूँ।"

...और पकड़ी बनाने के लिए दाल भिगोकर मैं घर से निकली। सैंडिल पहनते समय सामने के घर से शोभना की आवाज साफ सुनायी दे रही थी - "अम्मा, आज तो आपका ही राज है। कहूँ की सब्जी के साथ ही साबुत बैंगन की भी सब्जी और दाल बना दीजिएगा। मैं छाँट-छाँटकर छोटे-छोटे बैंगन लेकर आयी हूँ। ध्यान से बनाइएगा। ओके?"

"अच्छा बेटी। कहूँ की सब्जी साबुत कैरी डालकर बनाऊं या अमचूर डालूं?" उसकी सास ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

"जैसी आपकी इच्छा हो अम्मा। यह तो आपकी 'सिनेचर डिश' है! मुझे तो बस आराम से पेट भरकर खाना ही आता है। ...और पापाजी! आपके लिए भी एक काम है। बहुत जरूरी काम।"

"बोलो बेटी...!" यह ससुर जी की आवाज थी।

"अम्मा खाना बनाएंगी तब आपको उसका वीडियो बनाना है। मैं अम्मा की तरह सब्जी क्यों नहीं बना पाती...यह भी तो पता चले मुझे।"

"ओके बेटा। पक्का वीडियो बनाऊँगा। पिछली बार जब तुम्हारी अम्मा रंगोली बना रही थीं तो मैंने वीडियो बनाया था।" बड़े उत्साहित होकर उसके ससुर बोले।

"ओके पापाजी। वेजिटेबल उपमा और मूँगफली की चटनी मैंने बना दी है जो चिंटू को पसंद है। अच्छा टेक केयर। बाय-बाय...।" यह कहते हुए शोभना बाहर आयी और मुझसे मुख्यातिब होकर बोली - "अरे नम्रता। तुम आ गयी? चलो, चलते हैं।" यह



सब कहते हुए जब उसने मेरी ओर देखा तो मेरे चेहरे पर छाया उजाड़ देखकर पूछ बैठी - "क्या बात है?"

"कुछ समझ नहीं आ रहा शोभना। सिर घूम रहा है।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"मैं अपने सास-ससुर को सिर-आँखों पर रखती हूँ...उन्हें हमेशा यही कहती हूँ कि आप आराम कीजिए। फिर भी वे हमेशा उदास रहते हैं। वहीं तुम अपने सास-ससुर को इतना सब कह रही हो, यह कर देना, वह कर देना, फिर भी दोनों कितने उत्साह और विश्वास के साथ हामी भरते जा रहे हैं। कितनी ऊर्जा और उमंग भरा है दोनों में! कैसे इतना खुश रखती हो तुम उन दोनों को?"

शोभना बोली - "यह कोई बहुत बड़ा सीक्रेट नहीं है नम्रता। बुजुर्गों के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि वे जो कर रहे हैं या कह रहे हैं, उसे स्वीकार किया जाये, उनकी बातें ध्यान से सुनी जाएं और उन पर अमल भी किया जाये। इससे उन्हें आत्मीय खुशी मिलती है, उनके मन में तृप्ति का एहसास होता है। वे सोचते हैं कि इस ढलती उम्र में वे बेकार नहीं हुए हैं, परिवार के लिए आज भी उनकी उपयोगिता है, स्वीकार्यता है...इस सोच से उनका मन हमेशा तृप्ति के भाव से भरा रहता है। उन्हें एक तरह की संतुष्टि मिलती है। ठीक है?"

इस बीच मैंने स्टीयरिंग संभाल ली और इनीशन ऑन कर दिया। नम्रता ने मेरी बगल वाली सीट पर बैठते हुए कहा, "मैं बस यही कर रही हूँ अपने सास-ससुर के लिए। कहूँ की सब्जी और साबुत बैंगन बनाना मुझे अच्छी तरह आता है; अम्मा से भी

अच्छा। परंतु जब उनके द्वारा बनायी गयी डिश को हम सभी रुचि के साथ खाते हैं और उसकी तारीफ करते हैं तो उनके चेहरे पर जो खुशी झलकती है, वह देखने लायक होती है। और पापा...उनकी आँखों की रोशनी सही नहीं है, फिर भी मैंने उन्हें बीड़ियों बनाने के लिए कहा। इससे उन्हें लगेगा कि वे इतने भी बेकार नहीं हैं। वे सोचेंगे कि बीड़ियों बनाने लायक अपटूटेट तो हैं...। ये दोनों काम उन्हें कई दिनों तक खुशी और उत्साह देते रहेंगे। वहीं, यदि हम उनसे कहें कि आपसे कोई काम सही तरीके से नहीं होता तो यह उनको और भी गड्ढे में धकेलने जैसा होगा। अपनी युवावस्था में उन्होंने भाग-दौड़ कर हमारे लिए बहुत कुछ किया है। अब हमें उनके हाथ-पैरों की आराम देना है, मगर यह आराम उनके मन को तोड़ने वाला नहीं होना चाहिए। वह उनकी खुद की मर्जी से लेने वाला आराम होना चाहिए।"

शोभना की बातें सुनते हुए ये दो पंक्तियां जो मैंने काफी पहले कहीं पढ़ी थीं, अवचेतन से निकलकर मेरे दिलो-दिमाग पर दस्तक देने लगीं -

मुझको कुछ नहीं चाहिए, मेरे श्रवणकुमार।

बस थोड़ी-सी दोस्ती, बस थोड़ा-सा प्यार।।

...और मैंने शोभना की कही हुई बातों पर अमल करने का मानस बना लिया।

दक्षिण भारतीय लेखिका जयपुर में रहती हैं। इन्होंने कई तमिल उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया है तथा उपन्यास भी लिखे हैं।



आपका स्कूल शैक्षिक भ्रमण पर जाने की योजना बना रहा है?
इसे मूल्यपरक, उपलब्धिपरक और यादगार बनाने के लिए प्रस्तुत है... ↴

'बालोदय एजुटूर'



BALODAYA EDUTOUR

सर्वांगीण बाल विकास के प्रति कृतसंकल्पित विद्यालयों को
राजस्थान के मेवाड़ अंचल के शैक्षिक भ्रमण का उत्कृष्ट अवसर
प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण का मौका



बालोदय एजुटूर की विशेषताएं

- राजसमन्द झील के निकट एक पहाड़ी पर प्राकृतिक दृश्यावलियों के बीच 'चिल्डन' स पीस पैलेस' में बेस कैम्प
- योगा सत्र, चित्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी, फिल्म शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
- पीस पैलेस में सादगीपूर्ण आवास व सुरुचिपूर्ण भोजन की श्रेष्ठ व्यवस्था
- बस सुविधा उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
अभिषेक कोठारी, संयोजक +917727867624
राजसमन्द कार्यालय-
+91 91166 34513 ◎ head.office@anuvibha.org



अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी

<https://anuvibha.org>



अनुव्रत | अक्टूबर 2023 | 33



अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

प्रत्येक मंगलवार : संयम दिवस

प्रत्येक मंगलवार अर्थात् "संयम दिवस" संयम के अभ्यास का दिन है। मुख्यतः तीन संकल्प इस दिन के लिए निर्धारित हैं। संयम के प्रति हमारी यह जागरूकता हमारे आचार, विचार और व्यवहार में संयम को अभिन्न हिस्से के रूप में शामिल करने में मददगार सिद्ध होगी। संयम दिवस के ये तीन संकल्प हैं -

1. एक घण्टा मौन साधना करूँगा/करूँगी।
2. नशे से मुक्त रहूँगा/रहूँगी।
3. मांसाहार नहीं करूँगा/करूँगी।

संयम अभ्यास के सुझाव

संयम को हमारे दैनंदिन जीवन का हिस्सा बनाने के लिए हम अपने विवेक से, अपनी रुचि अनुरूप छोटे-छोटे व्रत संयम दिवस के लिए निर्धारित कर सकते हैं। ये व्रत हमारे जीवन को श्रेष्ठता के नये पायदान चढ़ने का आधार बन सकते हैं। सुझाव स्वरूप प्रस्तुत हैं कुछ सूत्र -

- किसी प्राणी को अपने आमोद-प्रमोद के लिए न सताना।
- प्राणियों का वध करके बनायी गयी प्रसाधन सामग्री का उपयोग न करना।
- संयंत भाषा में बात करना, गाली-गलौज या अपशब्दों का प्रयोग न करना।
- गुस्सा न करना। गुस्सा आये तो कुछ क्षणों के लिए मौन का अभ्यास करना।
- सुबह उठने के बाद और रात्रि को सोने से पहले महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करना।
- किसी के साथ दुर्व्यवहार न करना, हो जाये तो क्षमा माँगना।
- कम से कम 15 मिनट ध्यान का अभ्यास करना।
- सुबह या रात को सोने से पहले कम से कम 15 मिनट सत्साहित्य पढ़ना।
- वीडियो गेम्स न खेलना।
- सोशल मीडिया पर सक्रिय न रहना।
- झूट बोलने से बचना।
- स्नान, ब्रश और शोविंग आदि करते समय पानी का उपयोग कम से कम करना।
- एक किलोमीटर की दूरी के लिए वाहन का उपयोग न करना।
- भोजन जूठा न छोड़ना।
- फास्ट फूड न खाना।

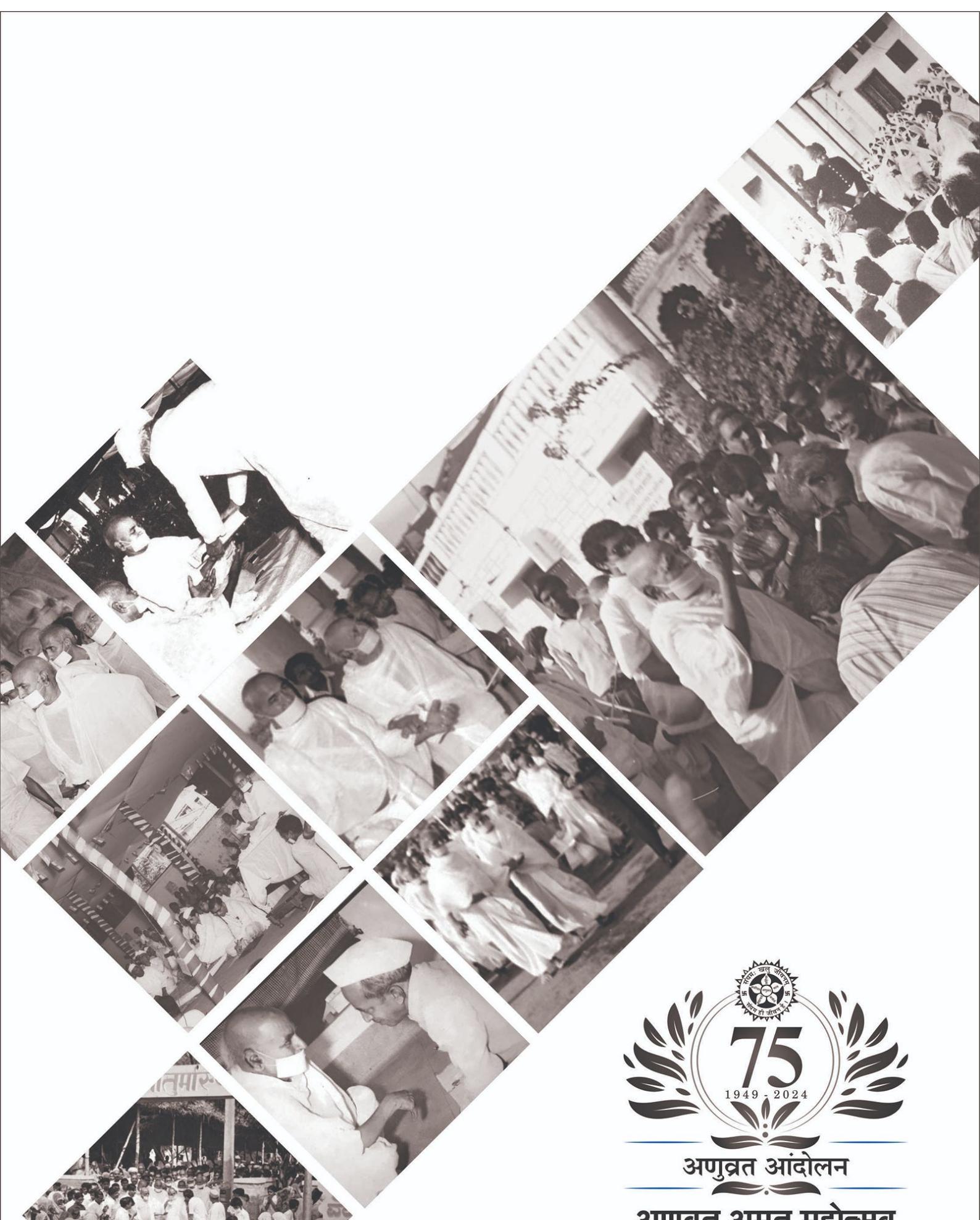


गौरवशाली अतीत के झरोखे से...

‘ अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"। **’**





अनुग्रह आंदोलन
अनुग्रह अमृत महोत्सव



उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में अणुव्रत प्रस्ताव

देश के विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं और विधान परिषदों में अणुव्रत आंदोलन की चर्चा इसके व्यापक स्वरूप और महत्व को मुख्यरित करती है। उत्तर प्रदेश के दोनों सदनों में अणुव्रत पर चर्चा एक विशिष्ट घटना रही है। 17 फरवरी 1959 को उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में माननीय सदस्य शुगनचन्द्र ने एक संकल्प प्रस्तुत किया जो इस प्रकार था - "यह सदन निश्चय करता है कि उत्तर प्रदेश सरकार देश में आचार्य श्री तुलसी द्वारा चलाये गये अणुव्रत आंदोलन में यथोचित सहयोग तथा सहायता दे।" उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में इस अणुव्रत संकल्प पत्र पर तीन दिन तक (17, 26, 27 फरवरी 1959) मुक्त चर्चाएं हुईं। आंदोलन को भावनात्मक समर्थन मिला। तीन दिनों की चर्चा के पश्चात् संकल्प शब्द रूप में वापस लिया गया और भावनात्मक रूप से पारित किया गया। यह संकल्प श्री शुगनचन्द्र प्रभृति 28 विधायकों के हस्ताक्षरों से रखा गया था। उन दिनों डॉ. सम्पूर्णनंद उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री तथा श्री रघुनाथ विनायक धुलंकर विधान परिषद् के अध्यक्ष थे। मुनिश्री महेन्द्रकुमार प्रथम इस उपक्रम के प्रेरक थे।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के माननीय सदस्य श्री सकटूमल, श्रीमती शिवराजवती नेहरू, श्री गिरधारीलाल, श्रीमती शकुंतला श्रीवास्तव, श्री जयबहादुर सिंह, श्री राजाराम शास्त्री, श्री हयातुल्ला अंसारी, श्री लालताप्रसाद सोनकर, श्री शिवनारायण, श्री निजामुद्दीन, श्री पूर्णचंद्र विद्यालंकार, श्री अब्दुल रज़फ, श्री लक्ष्मीनारायण दीक्षित, श्री पीताम्बर दास, श्री मुहम्मद शाहिद फाखरी, श्री लक्ष्मीरमण आचार्य (सामाजिक सुरक्षा तथा समाज कल्याण राज्यमंत्री) तथा श्री शुगनचन्द्र सहित पन्द्रह सदस्यों ने अणुव्रत संकल्प पत्र पर अपने विचार प्रकट किये।

पंजाब विधानसभा भवन में आचार्य श्री तुलसी

उन दिनों श्री जयसुखलाल हाथी पंजाब के राज्यपाल थे। उनकी तीव्र भावना थी कि पंजाब विधानसभा में आचार्य श्री तुलसी का एक कार्यक्रम हो। उनके अनुरोध का सम्मान करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने वहाँ का कार्यक्रम बनाया। आचार्य श्री 2 मई 1979 को प्रातः सेक्टर नम्बर 26 से चलकर सेक्टर नम्बर 11 में पहुँचे तथा वहाँ से दोपहर की तपती गर्मी में सवा बारह बजे विहार किया। लगभग चार किलोमीटर का रास्ता तय करके आचार्यश्री ठीक एक बजे विधानसभा भवन पहुँच गये। कार्यक्रम प्रारंभ होने में कुछ विलम्ब था। अतः आचार्य श्री तुलसी एक कक्ष में बैठ गये। कुछ समय बाद ही पंजाब के मुख्यमंत्री श्री प्रकाशसिंह बादल और उद्योगमंत्री श्री बलरामदास टण्डन वहाँ आये। उनके साथ आचार्य श्री तुलसी का यह पहला मिलन प्रसंग था। प्रारंभिक वार्तालाप में उन्हें जानकारी मिली कि आचार्य श्री तुलसी मध्याह्न की कड़ी धूप में नंगे पाँव पैदल चलकर यहाँ आये हैं। इस अवगति से अभिभूत होकर मुख्यमंत्री बोले- "आचार्यजी! आपने हम लोगों पर बड़ी कृपा की है।"

मुख्यमंत्रीजी की बात सुनकर आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "हम आप पर कृपा करने के लिए नहीं, अपना कर्तव्य निभाने के लिए यहाँ आये हैं। श्रमनिष्ठा और त्याग-भावना सन्तों का आदर्श है। सन्त ही इस आदर्श पर नहीं चलेंगे तो औरों को क्या प्रेरणा मिलेगी?" आचार्यश्री के इस कथन का समर्थन करते हुए मुख्यमंत्रीजी बोले- "आप में और हम में यहीं तो अन्तर है। आप अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थिति में आनन्द का अनुभव करते हैं। अन्यथा ऐसी कड़ी धूप में इतनी दूर चलकर आने का कष्ट क्यों करते? हम तो इस एहसान को कभी भूल नहीं सकेंगे।"

विधानसभा भवन के सभागार में विधायक पहुँच चुके थे। कार्यक्रम का समय होते ही आचार्य श्री तुलसी वहाँ चले गये। विधायक प्रो. विजयनाथ ने परिचयात्मक भाषण दिया। उद्योग मंत्री श्री बलराज टण्डन ने पंजाब सरकार की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित की। मुख्यमंत्री श्री प्रकाशसिंह बादल ने आचार्य श्री तुलसी के साथ हुई बातचीत को उद्धृत करते हुए अणुव्रत की चर्चा की। उन्होंने अपनी ओर से, हाउस की ओर से तथा पंजाब की जनता की ओर से आचार्यश्री का भावपूर्ण स्वागत किया।



जीवन मूल्यों की सीख

पंजाब के राज्यपाल श्री जयसुखलाल हाथी की इच्छा से आचार्य श्री तुलसी का विधानसभा का कार्यक्रम बना था। राज्यपाल महोदय स्वयं इस कार्यक्रम में उपस्थित रहना चाहते थे, किन्तु कोई आकस्मिक कारण ऐसा हुआ कि वे नहीं आ पाये। उन्होंने अपने विचार लिखित रूप में प्रेषित किये- "आचार्य श्री तुलसी ने बड़ी कृपा की। मैंने इस कार्यक्रम के लिए उनके पास विनती का पत्र भेजा था, पर मैं स्वयं नहीं आ सका। मेरी ओर से आचार्यश्री के प्रति आभार ज्ञापित करें।"

अपने प्रवचन के प्रारम्भ में आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "मैं चाहता था कि अपनी पंजाब यात्रा के प्रथम चरण में पंजाब के हृदय विधानसभा में कुछ बातें कहूँ। चण्डीगढ़ आने पर मुझे बताया गया कि 2 मई को विधानसभा को सम्बोधित करना है। लगता है कि विचारों का संप्रेषण हो गया।" आचार्यश्री ने विधायकों की सभा में जीवन मूल्यों की चर्चा करते हुए कहा- "त्याग, तपस्या, संयम, संतोष, अनुशासन आदि हमारे देश के जीवन मूल्य थे। आज इनके स्थान पर सत्ता, सम्पदा, विलासिता, सुविधावाद आदि हावी होते जा रहे हैं। इनको बदलने की जिम्मेदारी मुख्यतः दो वर्गों पर है - विधायकों और साधु-संन्यासियों पर। आप अपने प्रान्त के नुमाइंदे हैं। लाखों व्यक्तियों ने आपको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा है। साधु-संन्यासियों का जनता पर सर्वाधिक प्रभाव होता है। इसलिए आपका और हमारा दायित्व है कि हम देशवासियों को सही मूल्यों का पथदर्शन दें।" राष्ट्रीय चरित्र को समुन्नत बनाने की दिशा में अणुव्रत की भूमिका पर आचार्य श्री तुलसी ने विशद चर्चा की। कार्यक्रम प्रभावी रहा। आचार्य श्री तुलसी ने उस कक्ष का भी निरीक्षण किया, जहाँ विधानसभा चलती है। मुख्यमंत्री श्री बादल एवं विधायक श्री विश्वनाथ ने आचार्यश्री को एसेम्बली कक्ष में चलने वाली गतिविधियों की जानकारी दी।

एक नया उपक्रम

आचार्य श्री तुलसी 30 दिसम्बर 1982 को राजसमंद विराज रहे थे। उसी दिन राजसमंद झील के किनारे एक पहाड़ी पर स्थित तुलसी साधना शिखर के निकट 'अणुव्रत भारती' का शिलान्यास किया जाना था। प्रातःकालीन बेला में राजनगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय से विहार कर आचार्य श्री तुलसी बिना किसी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के कुछ संतों और श्रावकों के साथ संकड़ी पगड़ण्डी से होते हुए शिलान्यास स्थल पर पहुँचे। इस अवसर पर आचार्यश्री ने कहा- "शिखर तक पहुँचने वाले व्यक्तियों का जीवन प्रायोगिक होना चाहिए। यहाँ से अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान की जो आवाज उठेगी, उसका प्रभाव होगा, ऐसा विश्वास है।" उन्होंने आगे कहा- "अणुव्रत भारती का शिलान्यास जहाँ हुआ है, उस पर्वतीय स्थल की रमणीयता देखने योग्य है। भारतीय संस्कार निर्माण समिति के संयोजक मोहनजी जैन (सरदारशहर) ने अपना जीवन अणुव्रत भारती के लिए समर्पित कर दिया है। उन्होंने यहाँ रहकर अणुव्रत का काम करने का मानस बनाया है। उनकी लगन और कार्यनिष्ठा को देखते हुए अणुव्रत भारती को विकसित करने का दायित्व उन्हें ही सौंप दिया गया है। अणुव्रत का काम आगे बढ़ता रहे, यह अपेक्षित है।"

अणुविभा को आशीर्वाद

सन 1986 में आचार्य श्री तुलसी का अणुव्रत विश्व भारती की स्थापना के बाद दूसरी बार यहाँ पद्धारना हुआ। राजसमंद में साधना और संस्कार निर्माण के दो विशिष्ट केन्द्र - तुलसी साधना शिखर व अणुव्रत विश्व भारती के रूप में उभर रहे थे। 23 अप्रैल 1986 को वहाँ पत्रकार सम्मेलन का आयोजन था। दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक विनोद मिश्र, दैनिक नवभारत टाइम्स के समाचार सम्पादक पारसदास जैन, जयपुर के वरिष्ठ पत्रकार भंवर सुराणा आदि पत्रकार विशेष रूप से उपस्थित थे। अणुव्रत विश्व भारती में कार्यरत शिक्षार्थी मजदूरों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साधीप्रमुखा कनकप्रभाजी और युवाचार्य महाप्रज्ञाजी के वक्तव्य हुए। अणुव्रत



प्रवक्ता श्री जैनेन्द्र कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा - "भारतीय संस्कृति के केन्द्र में तीन तत्त्व प्रमुख हैं- 'वैतन्य, निर्गन्धता और अकिञ्चनता। सत्ता और सम्पदा को कभी उसकी धुरी नहीं बनाया जा सकता। वर्तमान के मोहासक्त जनजीवन को आप त्याग, संयम व अनुशासन का रास्ता दिखा रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि इस कार्य को भारत और विश्व के मानचित्र पर प्रतिष्ठा मिले क्योंकि यह किसी व्यक्ति की नहीं, आदर्शों की प्रतिष्ठा है।"

पत्रकारों को अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान की विशद जानकारी देने के बाद अणुविभा के सन्दर्भ में आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "अणुव्रत विश्व भारती भावी पीढ़ी के संस्कार-निर्माण की प्रयोगशाला बन रही है। उसमें आदर्श परिवार, गाँव और नगर के चित्र आलेखित करने की कल्पना संजोयी गयी है। इन सबकी पृष्ठभूमि में अणुव्रत के आदर्शों को व्यवहार के धरातल पर उतारने का अनथक प्रयत्न किया गया है। जब यह कार्य विकास की दिशा में आगे बढ़ेगा तो बड़ की भाँति विशाल होगा। इस कार्य में अनेक व्यक्ति जुड़े हुए हैं। उन्हें सबका सहयोग भी मिल रहा है।"

अणुविभा के तीन कार्यकर्ता

दिल्ली में 27 जनवरी 1988 के कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती के कार्यकर्ता विशेष रूप से उपस्थित थे। श्री सोहनलाल गांधी, श्री मोहनलाल जैन और तेरापंथ प्रवक्ता श्री मोतीलाल रांका के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में वक्तव्य हुए। अणुव्रत विश्व भारती के प्रसंग में अपने विचार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "सोहनजी गांधी एक कर्मठ एवं निष्ठाशील श्रावक हैं। वक्ता और लेखक भी हैं। इन्होंने अंग्रेजी में अणुव्रत पर पुस्तकें लिखी हैं। विदेशी लोग उन पुस्तकों की माँग कर रहे हैं। अणुव्रत के प्रति इनमें अच्छा आकर्षण पैदा हो गया। ये अच्छा काम कर रहे हैं।"

श्री मोहनलाल जैन का उल्लेख करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "मोहनजी जैन धुन के धनी हैं। ये अधिक पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं हैं, फिर भी इन्होंने अणुव्रत विश्व भारती का ऐसा नक्शा बनाया है कि लोग आश्र्य कर रहे हैं। ये तन, मन, धन से अणुव्रत विश्व भारती की योजना को पूर्ण बनाने में लगे हुए हैं।"

श्री मोतीलाल एच. रांका के सम्बन्ध में उद्गार प्रकट करते हुए आचार्यश्री ने कहा- "अणुविभा के तीसरे कार्यकर्ता मोतीलालजी रांका हैं। रांकाजी प्रखर वक्ता तो हैं ही, सूझबूझ के धनी भी हैं। ये तेरापंथ प्रवक्ता हैं। इन्होंने अन्य सम्प्रदाय के आचार्यों के साथ चर्चा की है और चर्चा में विजयी भी हुए हैं। रांकाजी ने संघ का नाम ऊँचा किया है। अणुव्रत विश्व भारती के साथ ये पूरी निष्ठा के साथ जुड़े हुए हैं।"

अणुव्रत प्रचेता शिविर

1 जून, 1997 से पाँच दिवसीय अणुव्रत प्रचेता प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। तीन दिन पूर्व ही प्रेक्षाध्यान शिविर की शुरुआत हुई थी। इस शिविर में एक सौ पच्चीस भाई-बहनों की संभागिता रही। दोनों शिविरों के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "अभी यहाँ अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान दोनों के शिविर चल रहे हैं। अणुव्रत नैतिक मूल्यों के प्रति विश्वास जगाता है और प्रेक्षाध्यान उन्हें प्रयोग पद्धति से अनुभव के स्तर पर ले जाता है। एक-एक दो मिलकर शक्ति बन जाते हैं। दोनों का उद्देश्य अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करना है। शिविर में आने का उद्देश्य स्वास्थ्य-सुविधा तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। अणुव्रत प्रचेता की अर्हता यह होनी चाहिए कि वह अणुव्रत को गहराई से समझे और परिस्थिति के साथ सामंजस्य व सन्तुलन बिठाकर उसे नैतिक मूल्यों के अनुकूल बनाये। इन माध्यमों से हम सबको नैतिक बना ही देंगे, यह अतिकल्पना है। ऐसे कार्यक्रमों से वातावरण बनता है और नैतिक तथा आध्यात्मिक कदमों को गति मिलती है, यह मूल्यों के विकास का संकेत है।" प्रासांगिक रूप में राजनीति में हो रहे मूल्यों के क्षरण की चर्चा करते हुए आचार्यश्री ने कहा, "हम यह भी



चाहते हैं कि राजनीति में मूल्यों का प्रवेश हो जाये तो उसका चेहरा भी साफ-सुथरा रह सकेगा। इस क्षेत्र में कार्यरत अधिकारी और कर्मचारी रिश्वत नहीं लेंगे, धोखाधड़ी नहीं करेंगे तो जनता में उनके प्रति विश्वास बढ़ेगा। अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान ऐसे उपक्रम हैं, जो व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र सबके लिए कल्याणकारी हैं।"

पुलिस अधिकारियों के साथ संवाद

आचार्य श्री तुलसी के दर्शन के लिए 2 जून को पुलिस महानिदेशक श्री देवेन्द्र सिंह, उपमहानिदेशक श्री हरीश मीणा तथा जिला पुलिस अधीक्षक श्री नरेन्द्र पाटनी आये। पुलिस महानिदेशक ने आचार्य श्री तुलसी के गंगाशहर-प्रवास के लिए प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा- "आचार्यजी! आपके आगमन से गंगाशहर पुलिस स्टेशन व्यसनमुक्त बन गया, यह उल्लेखनीय बात है।" देश में बढ़ते हुए अपराधों की चर्चा करते हुए श्री सिंह ने कहा- "छोटी-छोटी बातों को लेकर आवेश इतना बढ़ जाता है कि झगड़े तो क्या, हत्याएं भी हो जाती हैं। धर्म करने के बावजूद पता नहीं मनुष्य में परिवर्तन क्यों नहीं आ रहा है?"

श्री सिंह की जिज्ञासा को समाहित करने के लिए आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने कहा- "व्यक्ति किसी भी महकमे का हो, सबसे पहले उसे परिवर्तन का लक्ष्य बनाना होगा। बिना लक्ष्य के कोई काम पूरा नहीं हो सकता। हमने बहुत वर्षों पहले पुलिस अकादमी, जयपुर में अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान के शिविर लगाये थे। पाँच दिनों के प्रयोग से जो परिवर्तन आये, सबको आश्र्य में डालने वाले थे। जिन लोगों ने शिविर में भाग लिया, उनका शिविर से पहले और शिविर के बाद में भी विधिवत परीक्षण किया गया। शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रिपोर्ट वास्तव में ही प्रगति की सूचक थी। उस शिविर में भाग लेने वाले कई पुलिस अधिकारी आज भी मिलते हैं तो कहते हैं- "आपने हमारी दिशा बदल दी और हम सदा-सदा के लिए व्यसनमुक्त हो गये।" आचार्य श्री तुलसी ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- "यद्यपि मानव-मस्तिष्क को बदलना एक चुनौतीभरा काम है, क्योंकि सारे अपराध मानव-मस्तिष्क की ही उपज होते हैं, जिन्हें बदलने का पुरुषार्थ करना हमारा दायित्व है। प्रसन्नता की बात है हमें अच्छी सफलता मिल रही है। साधारण जनता से लेकर विद्यार्थियों, अध्यापकों, पुलिसकर्मियों और सेना के जवानों तक को प्रशिक्षित करने का हमारा प्रयास चालू है।"

अणुव्रत प्रचेता की तीन श्रेणियां

5 जून को प्रातः पंच दिवसीय अणुव्रत प्रचेता शिविर का समापन समारोह आयोजित था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत प्रचेता के मूल आधार अध्यात्म और नैतिकता की चर्चा करते हुए प्रचेता की तीन श्रेणियां निर्धारित कीं-

1. अणुव्रत के क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने वाले।
2. अणुव्रत के सिद्धान्त और दर्शन को जीवन की प्रयोगशाला में उतारकर अपने अनुभवों से दूसरों को लाभान्वित करने वाले।
3. यथावश्यक रूप में अहिंसात्मक प्रतिरोध में अपनी क्षमता का उपयोग करने वाले।

आचार्य श्री तुलसी ने अपने उद्घोषण में कहा- "अणुव्रत प्रचेता की अर्हता निर्धारित की गयी है। उसके पाँच सूत्र हैं- प्रबुद्धता, प्रवक्तृता, प्रयोक्तृता, प्रतिरोध क्षमता और प्रभावकता। ये पाँच विशेषताएं जिसमें होंगी, वही प्रचेता बन सकेगा। इस आधार पर अणुव्रत प्रचेता का संकल्प स्वीकार करने वालों का दायित्व है कि वे निरन्तर इस दिशा में आगे बढ़ने का लक्ष्य बनाएं। प्रचेताओं को अनवरत पुरुषार्थ करते रहना है, जिससे हिंसा आदि बुराइयां मनुष्य पर हावी न हों। बुरा व्यक्ति जब अपनी बुराई नहीं छोड़ रहा है तो अच्छा व्यक्ति अपनी अच्छाई क्यों छोड़े। मूल्यों के प्रति निराश या हताश होना अच्छी स्थिति नहीं है। सूर्य प्रतिदिन उदित होता है और अपना प्रकाश फैलाता है। इसी प्रकार अंधेरा भी हमेशा आता है। अंधेरा आता है, इसलिए सूर्य प्रकाश न फैलाये, इसका कोई औचित्य नहीं है। सूर्य की तरह हमें भी नैतिक मूल्यों का प्रकाश निरन्तर फैलाते रहना है।"



कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था,
अणुव्रत चरित्र निर्माण का
आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार
की स्थापना को पीछे उद्देश्य है
उन लोगों का आदर जो चरित्र
निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं।

अणुव्रत के आदर्शों के प्रति
जिनके मन में गहरी निष्ठा है।
ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से
समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति
आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था,
"सत्य की खोज करना बड़ी बात
है और उससे भी बड़ी बात है
सत्य को क्रियान्वित करना।
अणुव्रत पुरस्कार सत्य को
क्रियान्वित करने वालों को
मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ
कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

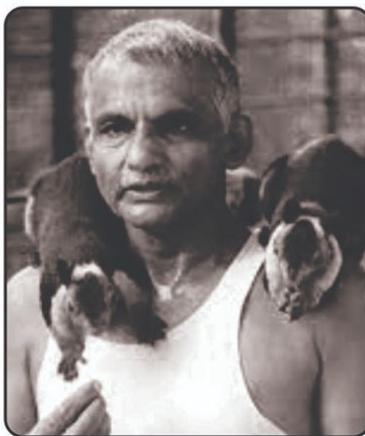
आचार्य महाश्रमण कहते हैं,
"भारत के नागरिकों में नैतिकता
के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत
इसी दिशा में कार्यशील है।
अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के
महत्व को प्रतिपादित करने वाला
अभिक्रम है।"

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की
शुरुआत की गयी। तब से 28
विभूतियों को इस पुरस्कार से
सम्मानित किया जा चुका है।
अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत
प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और
एक लाख इक्यावन हजार रुपये
की राशि प्रदान की जाती है।

अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने
वालों की जीवन गाथा से
परिचित होना मानवीय मूल्यों से
साक्षात् करना है। आने वाली
पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा
लेकर स्वस्थ समाज की संरचना
की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी
उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से
सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का
परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित
किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

डॉ. प्रकाश आमटे पीड़ित मानवता और निरीह पथुओं की सेवा में समर्पित



डॉ. प्रकाश आमटे का जन्म 26 दिसम्बर, 1948 को महाराष्ट्र के चंद्रपुर के वरोरा में हुआ। आपके पिता स्व. बाबा आमटे सुप्रसिद्ध समाजसेवी थे। सेवा के संस्कार आपको विरासत में प्राप्त हुए हैं। एम.बी.बी.एस. एवं एम.एस. की डिग्री हासिल करके आप कुशल चिकित्सक बने। डॉ. मंदाकिनी के साथ 1972 में आपका विवाह हुआ। एक कुशल चिकित्सक होते हुए भी कष्टपूर्ण जीवन जीकर आपने पीड़ित मानवता की सेवा का लक्ष्य बनाया।

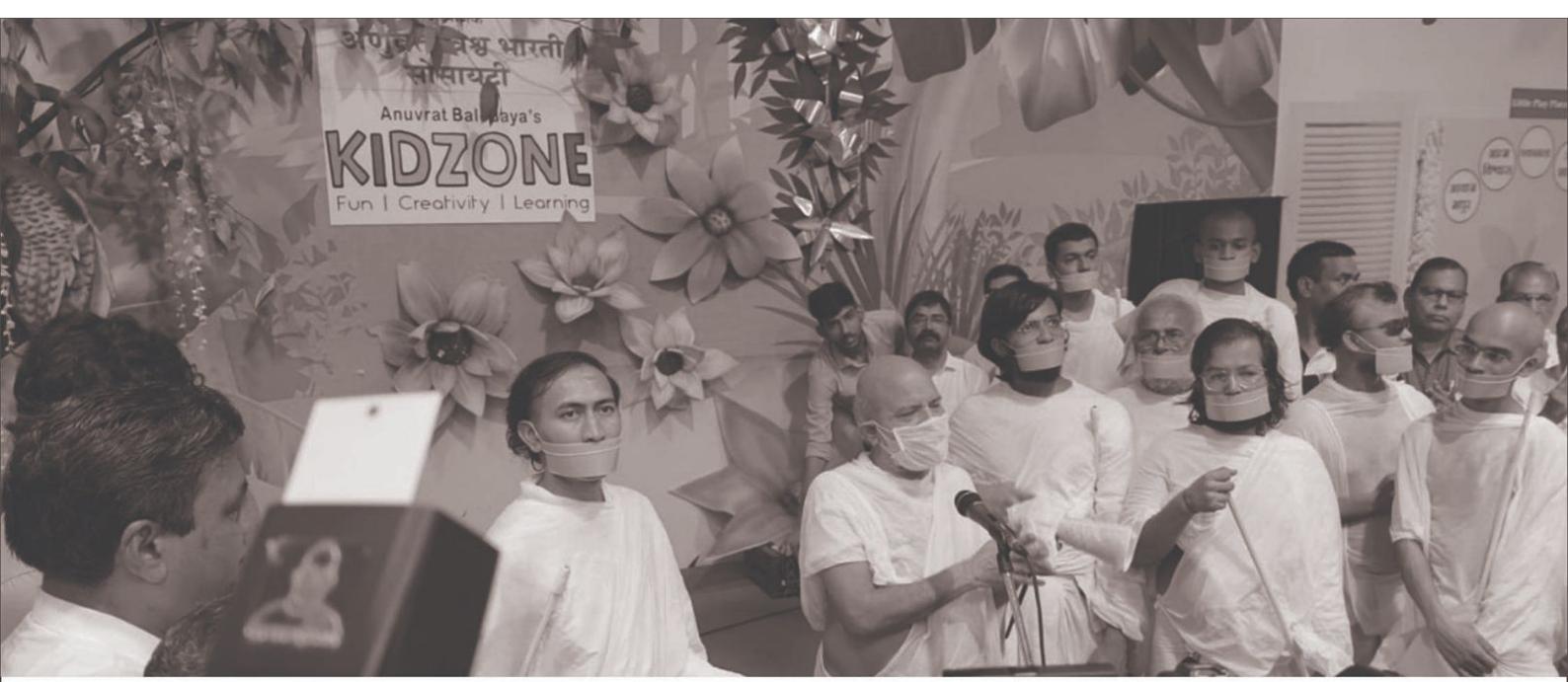
महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित इलाके में घने जंगलों में आप 20 साल रहे तथा आदिवासियों की समस्याओं को गहराई से समझा एवं उनका समाधान प्रस्तुत किया। आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं को विकसित करते हुए अस्तपाल का निर्माण करवाया, जहां प्रतिवर्ष 40 हजार रोगियों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। आपने आवासीय विद्यालय की स्थापना की जहाँ लगभग 600 विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

डॉ. प्रकाश आमटे ने पशु चिकित्सा के क्षेत्र में भी अतुलनीय कार्य किया। लोगों द्वारा मारे गये जंगली जानवरों के बच्चों के लिए आपने अपने घर के आँगन में रहने का स्थान बनाया है। यहाँ भालू, तेंदुए, मगरमच्छ समेत 60 से भी अधिक जानवर पल रहे हैं। समाज की भलाई के लिए किये गये निःस्वार्थ कार्यों ने डॉ. आमटे को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलायी है। कुष्ट उन्मूलन और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में उनके प्रयासों की दुनिया भर के संगठनों, सरकारों और व्यक्तियों ने सराहना की है। 2008 में कुष्ट रोग से प्रभावित लोगों के कल्याण में योगदान के लिए उन्हें संयुक्त राष्ट्र के मानवतावादी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

आपको प्राप्त पुरस्कारों की लम्बी शृंखला है। इनमें प्रमुख हैं - वर्ष 1984 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा आदिवासी सेवक पुरस्कार, वर्ष 2002 में भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सम्मान, वर्ष 2006 में भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा वन्यजीवन संरक्षण पुरस्कार, वर्ष 2008 में पत्नी डॉ. मंदाकिनी के साथ संयुक्त रूप से रेमन मैगसेसे पुरस्कार, वर्ष 2009 में गॉडफ्रेफिलिप्स लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, वर्ष 2012 में लोकमान्य तिलक तथा पत्रा धाय पुरस्कार, वर्ष 2014 में मदर टेरेसा पुरस्कार, वर्ष 2015 में भगवान महावीर मानवर्धम अहिंसा पुरस्कार, वर्ष 2016 में ग्रामीण विकास पुरस्कार।

डॉ. आमटे को नैतिकता, अहिंसक चेतना एवं मानवीय मूल्यों के उन्नयन में रचनात्मक योगदान के लिए 'अणुव्रत पुरस्कार-2018' से सम्मानित किया गया।





अणुव्रत अनुशास्ता ने किया अणुव्रत बालोदय किडजोन का अवलोकन किडजोन में बच्चों को मिलती है अणुव्रत के नियमों की सीख - आचार्य महाश्रमण

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के चतुर्मास प्रवास, मुंबई में अणुव्रत विश्व भारती का प्रकल्प अणुव्रत बालोदय किडजोन अभिभावकों और बच्चों के बीच आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण 29 अगस्त को किडजोन में पथारे और यहाँ की गतिविधियों का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मुंबई का किड जोन अब तक के सभी क्षेत्र की अपेक्षा विस्तार रूप लगता है, जहाँ जैन, जैनेतर सभी बच्चे आकर अणुव्रत के नियमों को जान सकते हैं और नैतिक मूल्यों को पहचान सकते हैं। मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार तथा अन्य चारित्रात्माओं ने भी किडजोन का अवलोकन किया। इस अवसर पर अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने आचार्य प्रवर को किडजोन में विकसित की गयी विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी प्रदान की। इस मौके पर अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, प्रकाशन मंत्री देवेन्द्र डागलिया, अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशन मेहता सहित अणुविभा व अणुव्रत समिति के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

किडजोन की संयोजिका सुमन चपलोत एवं सह संयोजिका मीना बड़ाला के संयोजकत्व में समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम यहाँ आने वाले बच्चों को नैतिक मूल्यों पर आधारित शॉर्ट मूवीज दिखाने के साथ ही साथ खेल-खेल में उन्हें मानवीय मूल्यों से परिचित कराती है। पानी-बिजली बचाने तथा गेम्स के द्वारा पर्यावरण को प्लास्टिक से होने वाले खतरे व मोबाइल एडिक्शन से होने वाले नुकसान से अवगत कराया जाता है।

अणुविभा के उपाध्यक्ष व किडजोन प्रभारी विनोद कोठारी ने बताया कि मुंबई अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रोशन मेहता एवं उनकी टीम का पूरा-पूरा सहयोग इस प्रकल्प को मिल रहा है। अणुविभा के केंद्रीय कार्यालय के कार्यकर्ताओं के साथ ही अनेक भाई-बहन किडजोन में निरंतर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। प्रत्येक रविवार को किडजोन में लगभग 350 बच्चों की उपस्थिति रहती है। अब तक लगभग 6000 बच्चे और लगभग 1500 अभिभावक किडजोन की विजिट कर चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि अणुविभा द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता के चतुर्मास स्थल नंदनवन में स्व. कमला देवी - शुभकरण कठोतिया की स्मृति में राकेश कठोतिया एवं आरती कठोतिया के सहयोग से किडजोन सुचारू रूप से संचालित हो रहा है।



असम के राज्यपाल ने किया किडजोन का अवलोकन



असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, उनकी धर्मपत्नी अनिता कटारिया और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री नसीम खान किडजोन का अवलोकन करने पहुँचे। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, अणुव्रत समिति, मुंबई के अध्यक्ष रोशन मेहता एवं अन्य पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया।

एलिवेट : एक्सपेरियंस द रियल हाई की संगोष्ठी



मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में संचालित नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत "एलिवेट : एक्सपेरियंस द रियल हाई" की संगोष्ठी नंदनवन में आयोजित हुई। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर व एलिवेट टीम ने अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। संगोष्ठी में एलिवेट कार्यक्रम के संयोजक द्वय अशोक कोठारी व डॉ. गौतम भंसाली, सह संयोजक मुदित भंसाली, जितेन्द्र सेठिया, चिराग पामेचा, अभिषेक बाफना ने अणुव्रत अनुशास्ता को अब तक हुए कार्यों एवं आगामी दिनों में किये जाने वाले कार्योंकी जानकारी निवेदित की।

मुंबई में अणुव्रत संकल्प यात्रा का आगाज



मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के मंगल आशीर्वाद के साथ अणुव्रत संकल्प यात्रा की मंगल शुरुआत हुई। इस अवसर पर मुंबई अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रोशन मेहता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय संचेती, उपाध्यक्ष चंद्रप्रकाश बोहरा, मंत्री राजेश चौधरी, सहमंत्री मनोहर कछारा, कोषाध्यक्ष खयाली लाल कोठारी, अणुव्रत वाहिनी संयोजक बसंत कुमठ, किरण परमार, ओमप्रकाश चोराडिया, कमलेश शिशोदिया, देवेंद्र लोढ़ा, चतुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री महेश बापना, मनोहर गोखरु, सुरेश राठौड़, सुरेश बापना आदि उपस्थित थे। इससे पहले आचार्य प्रवर के सान्निध्य में अणुव्रत संकल्प यात्रा के बैनर का अनावरण किया गया। सहमंत्री प्रियंका सिंधवी ने बताया कि अणुव्रत वाहिनी के माध्यम से मुंबई के विभिन्न उपनगरों में नैतिकता, सद्व्यवहार, नशामुक्ति एवं अणुव्रत के संकल्पों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। अणुव्रत कार्यकर्ताओं के दल फिल्म प्रदर्शन, संकल्प पत्र भरवाने सहित विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हुए जन जागरण का कार्य कर रहे हैं।

नैतिकता, अहिंसा और नशामुक्ति का प्रचार-प्रसार हो : आचार्य श्री महाश्रमण

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 16 सितम्बर को नंदनवन में अणुव्रत चेतना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने फरमाया कि अणुव्रत है, नशामुक्ति की बात है, नैतिकता की बात है, सबके साथ मैत्री, विभिन्न जातियां, विभिन्न सम्प्रदाय - फिर भी आपस में सद्व्यवहार रहे। दंगा-फसाद, मार-काट, हिंसा आदि न हो। तो इस प्रकार यह अणुव्रत आंदोलन की बात है। परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की और इसे आगे बढ़ाया। आज वह अणुव्रत आंदोलन 75वें वर्ष में चल रहा है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी जो मुख्य संस्था है, इधर अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास भी है, जो कि अणुव्रत के नाम से ही है, तो कुल मिलाकर नैतिकता, अहिंसा, नशामुक्ति - इन चीजों का प्रचार-प्रसार हो और हम अच्छा काम करते रहें। हमारे साधु-साधियां भी जितना संभव हो, जितनी अनुकूलता हो, अणुव्रत का उपदेश देने का प्रयास कर सकते हैं।



अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में अणुव्रत गीत महासंगान अभियान की घोषणा



मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में 18 जनवरी 2024 को देश-विदेश में वृहद् स्तर पर अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन किया जाएगा। महासंगान के बैनर का अनावरण यहाँ नंदनकन में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में किया गया। इस मौके पर गुरुदेव ने महती कृपा करते हुए अणुव्रत गीत "संयममय जीवन

हो" का संगान भी किया। इस अवसर पर अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष पंकज डागा, जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा, मंत्री संजय बोथरा एवं अन्य विशिष्ट महानुभाव उपस्थित रहे।

सूरत में अणुव्रत गीत महासंगान के कंट्रोल रूम का शुभारंभ

सूरत। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में 18 जनवरी 2024 को देशभर में होने वाले अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम के कंट्रोल रूम का शुभारंभ 28 अगस्त को यहाँ तेरापंथ भवन में साध्वीश्री त्रिशलाकुमारी के मंगलपाठ के साथ हुआ। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने फीता खोलकर कार्यालय का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, अणुविभा सदस्य अनिल समदड़ीया, राकेश चोरडिया, अणुव्रत





समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढा, मंत्री संजय बोथरा, महासंगान कंट्रोल रूम के संयोजक दिलीप सेठिया, गणपत भंसाली आदि उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि अणुविभा द्वारा वृहद् स्तर पर आयोजित होने वाले इस महत्वपूर्ण प्रकल्प के सफल संचालन का दायित्व अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत को दिया गया है। समिति द्वारा इस हेतु सक्रिय कार्यकर्ताओं की टीम बनाकर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के तत्त्वावधान में आयोजित

अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी (पूर्वाधिल)

08 अक्टूबर, 2023 एविवार | सिलीगुड़ी

आयोजक : **अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी**

महत्वपूर्ण सूचना : देश के विभिन्न भागों में आंचलिक स्तर पर अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इसकी पहल गुजरात की चलथान अणुव्रत समिति और राजस्थान की गंगाशहर अणुव्रत समिति ने की है, जो बधाई और धन्यवाद की पात्र हैं। अन्य समितियाँ अपने क्षेत्र में "अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी" के आयोजन हेतु अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा 9810155861 अथवा अपने अंचल के संगठन मंत्री से सम्पर्क कर सकती हैं।



चलथान में पश्चिमांचल अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी

चलथान। अणुव्रत समिति की ओर से 27 अगस्त को पश्चिमांचल अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी का आयोजन होटल द्राएंगल में किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुविभा अंतरराष्ट्रीय सामाजिक संस्था है। 50 से भी अधिक देशों में अणुव्रत की गूँज हो रही है। अणुव्रत को संयुक्त राष्ट्र संघ की भी सदस्यता प्राप्त है। उन्होंने अणुव्रत पत्रिका, बच्चों का देश के अधिकार्यिक ग्राहक बनाने का आह्वान करते हुए बालोदय, किड जोन आदि की जानकारी दी।

अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने अणुव्रत के लक्ष्य, अणुव्रत साधना, अणुव्रत के निदेशक तत्त्वों आदि की जानकारी दी। उन्होंने प्रत्येक मंगलवार को संयम दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया। उद्घाटन सत्र एवं प्रथम सत्र का संचालन अणुविभा पश्चिमांचल संगठन मंत्री पायल चौरड़िया ने किया। मुख्य अतिथि जाने-माने समाज सेवक प्रवीण भालाला ने अणुव्रत के नशामुक्त अभियान के साथ जुड़कर कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। इससे पहले अणुव्रत समिति चलथान के अध्यक्ष बाबूलाल नौलखा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

द्वितीय सत्र में अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कार्यकर्ताओं को नैतिकता के प्रति समर्पित रहने एवं आर्थिक शुचिता के प्रति प्रतिबद्ध रहने की प्रेरणा दी। सत्र का संचालन महाराष्ट्र राज्य प्रभारी रमेश धोका ने किया।

तृतीय सत्र में अणुविभा महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने संस्था संचालन, वैधानिक अपेक्षाएं, सदस्यता, बैठक संचालन व पदाधिकारियों की जिम्मेदारियों के संदर्भ में मार्गदर्शन दिया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विनोद कोठारी ने 18, 19, 20 नवंबर 2023 को मुंबई में होने वाले अधिवेशन में हिस्सा लेने का आह्वान करते हुए अधिवेशन के उद्देश्यों और कार्यकर्ताओं के दायित्व के संदर्भ में जानकारी दी।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने संगठन को मजबूत बनाने हेतु मार्गदर्शन दिया। सत्र का संचालन गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेडतवाल ने किया।

अंतिम व चतुर्थ सत्र में खुला मंच का आयोजन किया गया। इसमें कार्यकर्ताओं की जिज्ञासाओं का समाधान अणुविभा के केन्द्रीय पदाधिकारियों ने किया। कार्यशाला में गुजरात एवं महाराष्ट्र की 10 अणुव्रत समितियों के 81 कार्यकर्ताओं ने सहभागिता दर्ज करवायी। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति चलथान की मंत्री रश्मिबोहरा ने किया।



जीवन विज्ञान कार्यक्रम आयोजित



सूरत। भगवान महावीर इंटरनेशनल स्कूल वेसु, सूरत में 28 अगस्त को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर

ने कहा कि जीवन विज्ञान बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए श्रेष्ठ उपक्रम है। बचपन से ही बच्चों में सत्संस्कारों का सिंचन किया जाता है तो भविष्य में स्वस्थ समाज एवं उन्नत राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। जीवन विज्ञान का यही उद्देश्य है। यहाँ बच्चों को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के पाठ पढ़ाये जाते हैं। अणुव्रत गीत का संगान भी प्रार्थना के रूप में करवाया जाता है। अणुव्रत गीत के साथ उसका भावार्थ भी बच्चों को बताया जाये ताकि अणुव्रत की भावना को बच्चे सरलता से समझ पाएंगे।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने संवाद शैली में बच्चों से बात करते हुए औपचारिक पढ़ाई के साथ जीवन की सफलता में सहायक बातों को जानने, समझने और जीवन में उत्तरने की आवश्यकता पर बल दिया।

स्कूल संचालिका हर्षिता जैन ने कहा कि जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण लेने के बाद हमारे बच्चों की प्रतिभा में काफी सुधार हुआ है। कार्यक्रम का संचालन जीवन विज्ञान प्रशिक्षिका रेणु नाहटा ने किया। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, गुजरात प्रभारी अर्जुन मेडतवाल, भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के संचालक संजय जैन, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा, मंत्री संजय बोथरा, गणपत भंसाली समेत अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

डोंबिवली में अणुव्रत संकल्प यात्रा



मुंबई। अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा डोंबिवली में दो स्थानों पर अणुव्रत वाहिनी के माध्यम से अणुव्रत दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से नैतिकता, नशामुक्ति एवं सद्व्यवहार का प्रचार-प्रचार करने के लिए संकल्प यात्रा की गयी। डोंबिवली के संयोजक अनिल

चंडालिया ने सभी का स्वागत किया। अणुविभा के सहमंत्री मनोज सिंघवी और अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता ने नशे के दुष्परिणामों के बारे में जानकारी दी। इस दौरान अनेक लोगों ने नशा नहीं करने का संकल्प लिया और नशामुक्ति के फॉर्म भरे।

अणुव्रत संकल्प यात्रा में अणुविभा से महावीर बड़ाला, ख्यालीलाल कोठारी, चंद्रप्रकाश बोहरा, कामगार नेता लक्ष्मण मिसाल, विराज मधुमालती, अर्जुन सिंघवी, घाटकोपर संयोजक श्रवण, डोंबिवली सहसंयोजक श्रीपाल मेहता, विकास मेहता, तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता, मंत्री राहुल कोठारी, जीवन सिंघवी, दिनेश श्रीश्रीमाल, विश्वजीत सोलंकी, धर्मेश कोठारी, मुकेश बड़ाला, अशोक बड़ाला, पंकज पगारिया, दिलीप बड़ाला, प्रकाश कच्छारा, अशोक परमार, ललित पुनमिया, राकेश परमार, पिंकी परमार, पूनम कच्छारा, मीना धाकड़ आदि की उपस्थिति रही।





गंगाशहर में बीकानेर संभाग स्तरीय अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी



गंगाशहर। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में बीकानेर संभाग स्तरीय अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी का आयोजन 23-24 सितम्बर को आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान में हुआ। संगोष्ठी के केंद्रीय संयोजक धर्मेन्द्र डाकलिया ने बताया कि इसमें 19 समितियों के माध्यम से 177 अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

प्रथम सत्र में मंगल पाथेय प्रदान करते हुए शासनश्री साध्वीश्री शशि रेखा ने कहा कि आज सांप्रदायिकता के कारण जीवन बिखरने लगा है, अणुव्रत का आकाश इन विकृतियों को दूर कर सकता है। साध्वीश्री ललितकला ने कहा, "गुरुदेव तुलसी का उद्देश्य था कि अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से नैतिक व्यक्ति के निर्माण से राष्ट्र का निर्माण हो।"

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत का कार्यकर्ता स्वयं का नैतिक विकास कर राष्ट्र को

नयी दिशा देने में योगभूत बन सकता है। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत एक मानव धर्म और जीवनशैली है। अतः गुरुदेव तुलसी के इस अवदान को जन-जन तक पहुँचाया जाना चाहिए।

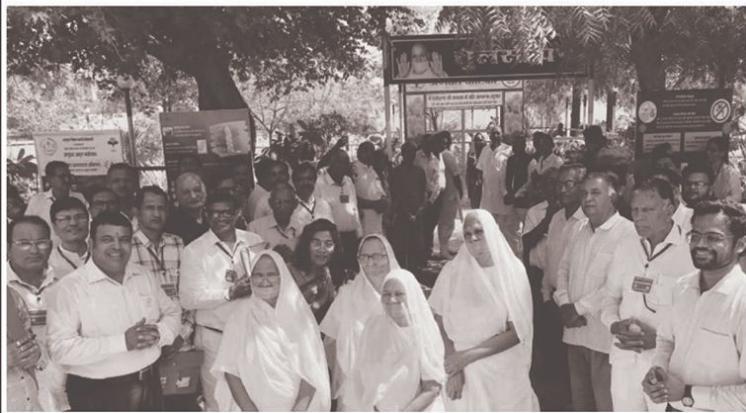
अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री भीखम सुराणा ने समिति प्रबंधन के सूत्रों के बारे में बताने के साथ ही अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी दी। उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने कहा कि अणुव्रत का संदेश है – जीवन में नैतिकता और पारदर्शिता। हम चाहे आस्तिक हों या नास्तिक हों, पर वास्तविक हों। संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया ने नवम्बर में होने वाले 74वें राष्ट्रीय अधिवेशन की जानकारी दी। अणुविभा के परमर्शक राजेंद्र सेठिया ने कहा कि जीवन सहज, सरल और खुली किताब की तरह होना चाहिए। इससे पहले गंगाशहर समिति के अध्यक्ष भंवरलाल सेठिया ने स्वागत वक्तव्य दिया।

सत्र के अंतिम चरण में राष्ट्रीय टीम और गंगाशहर समिति की टीम ने मुख्य अतिथि बसंत नैलखा तथा हंसराज डागा का मोमेंटो भेंट कर और पटका पहना कर अभिनंदन किया।

विभिन्न सत्रों का संचालन धर्मेन्द्र डाकलिया, डॉ. नीलम जैन और अशोक चौरड़िया ने किया। आभार ज्ञापन समिति उपाध्यक्ष मनोज सेठिया तथा मंत्री मनीष बाफना ने किया। कार्यक्रम में पूर्व महापौर नारायण चोपड़ा, जतन दुगड़, विनोद बाफना, मेघराज बोथरा, पूनमचंद बोथरा, ईश्वरचंद बोथरा, पुखराज चोपड़ा, माणकचंद सामसुखा, नारायण गुलगुलिया, राजेंद्र नाहटा, संजू लालानी, मीनाक्षी आंचलिया, बिंदु छाजेड़ आदि की उपस्थिति रही।

अणुव्रत वाटिका अभियान का शुभारंभ

■■ संयोजक डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■



अणुविभा के पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत स्थान-स्थान पर अणुव्रत वाटिका के निर्माण का निर्णय लिया गया। इसकी शुरुआत गंगाशहर-बीकानेर क्षेत्र से 23 सितम्बर को हुई। अणुव्रत समितियों के सहयोग से देश के विभिन्न क्षेत्रों में अणुव्रत वाटिका के निर्माण के माध्यम से पर्यावरण के प्रति जन-जन को जागरूक करने का यह अभियान गतिशील होगा, यह आशा है।

नैतिकता का शक्तिपीठ

गंगाशहर स्थित नैतिकता के शक्तिपीठ (आचार्य तुलसी समाधि स्थल) के प्रांगण में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान व अणुव्रत समिति गंगाशहर के सहयोग से 23 सितम्बर को अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में 'अणुव्रत वाटिका' का शुभारंभ हुआ। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के पर्यावरण जागरूकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजक डॉ. नीलम जैन ने बताया कि साध्वीश्री शशिरेखा तथा साध्वीश्री ललितकला सहित साध्वीवृदं के पावन सात्रिध्य में अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने 'अणुव्रत वाटिका' का उद्घाटन किया।

हीरालाल सोभागमल रामपुरिया स्कूल

23 सितम्बर को अणुव्रत समिति बीकानेर के सहयोग से हीरालाल सोभागमल रामपुरिया स्कूल में भी अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर के कर-कमलों से हुआ। यह एक संयोग है कि श्री नाहर की प्राथमिक शिक्षा इसी विद्यालय में हुई थी। वाटिका उद्घाटन के पश्चात् विद्यालय के बालक-बालिकाओं की उपस्थिति में एक सुंदर कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें विद्यालय के संचालक, प्रधानाध्यापिका व शिक्षकों ने श्री नाहर को सम्मानित किया। बच्चों ने अणुव्रत गीत की सुंदर प्रस्तुति की। इन कार्यक्रमों में अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, सहमंत्री उमेन्द्र गोयल, संगठन मंत्री डॉ. कुमुम लुनिया, विनोद बाफना, हंसराज डागा, दीपक आंचलिया, बसंत नौलखा, अणुव्रत समिति गंगाशहर के अध्यक्ष भंवरलाल सेठिया व उनकी पूरी टीम, बीकानेर समिति के अध्यक्ष झंवरलाल गोलछा व उनकी पूरी टीम, पूर्व महापौर नारायण चौपड़ा, धर्मेन्द्र डाकलिया, जयंत सेठिया, इशरचंद बोथरा, भंवरलाल सेठिया, राजेंद्र सेठिया, सुरजाराम इंदरचंद सेठिया, सौजन्यकर्ता पुनमचंद, आशकरण, कमलचंद बोथरा सहित अन्य गणमान्यजन मौजूद रहे।



चाड़वास में किड्जोन का शुभारंभ

■■ संयोजक चमन दुधोड़िया की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्मि स्थानों पर अणुव्रत समितियों के सहयोग से अणुव्रत बालोदय किड्जोन संचालित करने का कार्यक्रम हाथ में लिया गया है। इसकी शुरुआत हुई राजस्थान के छोटे से कस्बे चाड़वास से। अणुव्रत समिति की ओर से यहाँ 22 सितम्बर को अणुव्रत बालोदय किड्जोन का शुभारंभ किया गया। मुनिश्री जम्मू स्वामी ने मंगल पाठ सुनाया। इस अवसर पर राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा, अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, अणुव्रत बालोदय किड्जोन के राष्ट्रीय संयोजक चमन दुधोड़िया व चाड़वास के पोस्टमास्टर रघुवीर ढाका ने अपने विचार खेले। सभी महानुभावों ने इस कार्य की सराहना की। इससे पहले चाड़वास अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विनोद बच्छावत व मंत्री जगदीश ज्याणी ने अतिथियों का अणुव्रत दुपट्टा पहना कर स्वागत किया। कार्यक्रम में विद्यास्थली शिक्षण संस्थान माध्यमिक विद्यालय चाड़वास के बच्चों ने अणुव्रत गीत का गायन किया।

Anuvrat Balodaya's
KIDZONE
Fun | Creativity | Learning



अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन

■ ■ संयोजक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की रिपोर्ट ■ ■

मालिबा फार्मेसी कॉलेज में अणुव्रत व्याख्यानमाला बारडोली। अणुव्रत समिति की ओर से मालिबा फार्मेसी कॉलेज में 6 सितम्बर को 'सामाजिक विकास में मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता का महत्व' विषय पर अणुव्रत व्याख्यानमाला का



आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात प्रभारी अर्जुन मेडिटेवाल ने कहा कि किसी भी समाज या देश की प्रगति का आधार है उस समाज या देश की जनता का चरित्र। समाज की सबसे छोटी इकाई है व्यक्ति। यदि समाज का विकास करना है तो उस समाज के हर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास आवश्यक है।

मालिबा फार्मेसी कॉलेज के प्राचार्य आशीष मिश्रा ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में प्रोफेसर राहुल भाई का भी सहयोग प्राप्त हुआ। अणुव्रत समिति, सूरत के पूर्व अध्यक्ष जयंतीलाल कोठारी ने छात्रों को हास्य के प्रयोग करवाये। इस अवसर पर अणुविभा पश्चिमांचल संगठन मंत्री पायल चोरडिया, अणुव्रत समिति बारडोली के अध्यक्ष राजेश चौरडिया, मंत्री सुभाष हिंगड़, संगठन मंत्री संजय बडोला, तेरापंथ महिला मंडल बारडोली की अध्यक्ष धर्मिष्ठ मेहता आदि उपस्थित रहे।

अणुव्रत व्याख्यानमाला में बताया सद्भावना का महत्व चूरू। अणुव्रत समिति की ओर 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष में व्याख्यानमाला का आयोजन जाकिर हुसैन सी. सै. स्कूल में किया गया। सद्भावना विषयक व्याख्यानमाला के मुख्य अतिथि थे प्रसिद्ध संगीतकार सरदारशहर निवासी आमिर बियानी तथा अध्यक्षता की देवकिशन सैनी ने। मुख्य वक्ता एडवोकेट हकीम अहमद खान ने बच्चों को बताया कि किस तरह

से सद्भावना को अपने जीवन में उतार कर देश में सांप्रदायिक सौहार्द कायम किया जा सकता है। डॉ. एस. एच. गौरी, सत्यनारायण सैनी, स्कूल प्राचार्य इदरीश खत्री समेत सभी वक्ताओं ने विचार रखे।



समिति अध्यक्ष रचना कोठारी ने अणुव्रत के नियमों के बारे में बताने के साथ ही बच्चों को सद्भावना का महत्व बताया। कार्यक्रम में सर्व समाज के करीब 300 बच्चों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन एडवोकेट रमेश सोनी ने किया। अंत में समिति मंत्री एडवोकेट ताहिर खान ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर छत्तर सिंह कोठारी, मदनलाल राजपुरोहित, लक्ष्मी कोठारी, मुत्री डागा, देवेंद्र सिंह, आरिफ खान, अफजल भाटी, रमीज खान, फुरकान अहमद, असलम खान, अब्दुर्रहमान, रफीक खान, रुबीना खान, नसीम बानो, योगिता आदि उपस्थित थे।

ईमानदारी एक ईश्वरीय गुण

कांकरोली। अणुव्रत समिति राजसमन्द द्वारा प्रज्ञा विहार में 24 अगस्त को शासनश्री मुनिश्री रविन्द्र कुमार एवं सहवर्ती मुनिश्री अतुल कुमार के सान्निध्य में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री अतुलकुमार ने कहा कि ईमानदारी एक ईश्वरीय गुण है। यह गुण जिसके अंदर आ गया, उस व्यक्ति का जीवन बड़ा ही सुखमय होता है। जिस व्यक्ति के आचरण में उच्च कोटि के नैतिक मूल्यों का समावेश नहीं है, वह श्रेष्ठ व्यक्तित्व का स्वामी नहीं बन सकता। बेदाग छवि से ही उत्तम व्यक्तित्व का स्वामी बना जा सकता है। अणुव्रत समिति अध्यक्ष अचल धर्मावत ने स्वागत वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि राजसमन्द विधायक दीसि किरण माहेश्वरी, मुख्य वक्ता शिक्षाविद् अणुव्रत सेवी गणपत लाल धर्मावत, विशिष्ट अतिथि तेरापंथी सभा अध्यक्ष प्रकाश चंद्र सैनी, शिक्षाविद् चतुर कोठारी, ट्रस्टी अणुविभा अशोक दुंगरवाल ने भी विचार रखे। अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष रमेश मांडोत ने कार्यक्रम का संचालन किया।





अणुव्रत आंदोलन की उत्कृष्ट पत्रिकाओं "अणुव्रत" एवं "बच्चों का देश" से स्वयं जुड़िए और परिचितों को भी जोड़िए



अणुव्रत समितियों व अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए
पत्रिका सदस्यता के निर्धारित लक्ष्य पूर्ण करने पर

स्टार परफॉर्मर समिति

महानगर श्रेणी 500 सदस्य
शहर श्रेणी 200 सदस्य
कस्बा श्रेणी 100 सदस्य

15 नवम्बर 2023 तक

विशेष
योजना

स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ता

महानगर श्रेणी
एक माह में 30 सदस्य तथा
15 नवम्बर 2023 तक 100 सदस्य

शहर श्रेणी
एक माह में 20 सदस्य तथा
15 नवम्बर 2023 तक 50 सदस्य

कस्बा श्रेणी
एक माह में 10 सदस्य तथा
15 नवम्बर तक 25 सदस्य

- ❖ 15 नवम्बर 2023 तक का लक्ष्य पूरा करने पर अणुव्रत समिति व कार्यकर्ता को अणुव्रत अधिवेशन में सम्मानित किया जाएगा।
- ❖ मासिक लक्ष्य पूरा करने पर कार्यकर्ता का फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। ❖ स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ताओं को पत्रिका प्रतिनिधि मनोनीत किया जाएगा एवं उनका नाम, मोबाइल नंबर व क्षेत्र की जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी। ❖ स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ता की जानकारी सम्बंधित अणुव्रत समिति द्वारा अधिकृत रूप से देनी होगी। ❖ अपने क्षेत्र के विशिष्टजनों को निःशुल्क पत्रिका प्रेषण हेतु सौजन्य प्राप्त किया जा सकता है। 21 हजार या अधिक की सौजन्य राशि पर सौजन्यकर्ता की जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी। यह योजना "अणुव्रत" और "बच्चों का देश" दोनों पत्रिकाओं पर लागू होगी। ❖ स्टार परफॉर्मर समितियों को मूल्यांकन में अतिरिक्त अंक मिलेंगे।

+91 98994 45249, 91166 34512

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी





शिविर में बच्चे सीखते हैं लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों का पाठ

अणुविभा मुख्यालय में तीन दिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविर का आयोजन

■■ संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया की रिपोर्ट ■■



राजसमंद। कक्षा पाँच से सात तक के बालक-बालिकाओं को तीन दिन प्रकृति के सुरम्य वातावरण में किलकारियां भरने, घेरलू माहौल के बीच विद्यार्थी जीवन के सुन्दर पल जीने और छोटी-छोटी मनोरंजक क्रियाओं के द्वारा कुछ सीखने, कुछ करने और कुछ पाने के एहसास का नाम है अणुव्रत बालोदय शिविर।

अणुव्रत विश्व भारती मुख्यालय परिसर में तीन दिन के आवासीय शिविरों की शृंखला में 8 से 10 सितम्बर तक आयोजित शिविर में इस बार मेहमान थे ज्ञानोदय सीनियर सेकंडरी स्कूल आमेट, सविता इंटरनेशनल स्कूल राज्यावास और सुभाष सीनियर सेकंडरी स्कूल धोइन्दा के 114 बच्चे।

शिविर की संकल्पना से परिचित कराते हुए अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने कहा कि बच्चों का मन एक विशाल आसमान है जहाँ ढेर सारी जिज्ञासाएं, ज्ञान और कल्पनाएं होती हैं। उन्मुक्त वातावरण में उन्हें अनेक एकिटविटीज द्वारा मौका मिलता है तो वे भाव और बुद्धि के स्तर पर एक स्वतः स्फुरित प्रकाश पाते हैं। साथ ही लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों का पाठ सहज ही सीख जाते हैं। जरूरत है बस अवसर दिये जाने की। यहीं से स्कूल की एक अभिनव भूमिका विकसित होती है जिसे "स्कूल विद ए डिफरेंस" कहा जाता है। अणुव्रत बालोदय शिविर इस दृष्टि से स्कूली शिक्षा का एक अनौपचारिक और भावनात्मक पक्ष उजागर करता है।

जिसकी आज की औपचारिक शिक्षा में नितांत जरूरत है।

निश्छल मुस्कान और थोड़ी-थोड़ी चंचलता लिये इन बच्चों ने अणुविभा की बालोपयोगी भाव जागरण गुफा, गुड़िया घर, तुलसी दर्शन कक्ष, बाल संसद कक्ष, बाल फिल्म प्रदर्शन कक्ष, वाचनालय कक्ष, खेल मैदान पर तीन दिन तक मनोवैज्ञानिक तरीकों से बहुत कुछ सीखा, जो इनके जीवन की अमूल्य धरोहर बन गया।

शिविर के समापन दिवस पर बच्चों के चेहरे पर मुखरित हो रही थी घर लौटने की बाल सुलभ उदासी और जिज्ञासा कि हम दुबारा कब यहाँ आएंगे। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, अणुव्रत बालोदय की राष्ट्रीय संयोजक डॉ. सीमा कावड़िया, स्कूल विद ए डिफरेंस के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राकेश तैलंग, प्रशिक्षक मैनिका बापना और मौनिका राठौड़ के साथ ही प्रतिभा जैन, देवेन्द्र आचार्य, विमल मुशरफ, जगदीश बैरवा आदि के साथ बच्चों ने अपने अनुभव साझा किये और अपने स्कूल जाकर शिविर में सीखी गयी बातों पर चर्चा करने का वादा किया।



अणुव्रत गीत महासंगान

प्रथम चरण : अन्तिम तिथि 31 अक्टूबर 2023

- समितियों व मंचों द्वारा स्थानीय संयोजक का मनोनयन
- स्कूलों, कॉलेजों, सामाजिक संस्थाओं, औद्योगिक संस्थानों, समाज की सहयोगी संस्थाओं से सम्पर्क कर आयोजन में अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित करना
- अधिक से अधिक आयोजन स्थलों का निर्धारण कर उनके लिए प्रभारी का मनोनयन करना
- अणुव्रत समितियों व मंचों द्वारा उनके आसपास के गाँवों, शहरों में आयोजन की संभावना तलाशना व उनकी सूची अणुविभा को प्रेषित कर संयोजक के मनोनयन में सहयोग करना
- गूगल फॉर्म के माध्यम से आयोजन स्थलवार संभावित संख्या की जानकारी देते हुए प्री-रजिस्ट्रेशन
- आवश्यकता अनुरूप केन्द्रीय कार्यालय से प्रचार सामग्री मंगवाना
- स्थानीय स्तर पर यथासम्भव चारित्रात्माओं के सान्निध्य व प्रतिष्ठित गणमान्यजनों की उपस्थिति में 'अणुव्रत गीत महासंगान' कार्यक्रम की सार्वजनिक घोषणा करना

द्वितीय चरण : अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर 2023

- आयोजन स्थलों पर मेजबान संस्था के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर 18 जनवरी 2024 के कार्यक्रम की रूपरेखा को अन्तिम रूप देना
- प्रत्येक आयोजन स्थल पर संभावित संभागियों के साथ रिहर्सल आयोजित करना
- रिहर्सल कार्यक्रम में अणुव्रत गीत की व्याख्या कर जागरूकता पैदा करना
- अणुव्रत यात्रा के त्रिसूत्रीय संकल्पों से परिचित कराना ताकि 18 जनवरी 2024 के कार्यक्रम में सभी संभागी सामूहिक रूप से ये संकल्प स्वीकार करें
- प्रत्येक संभागी को अणुव्रत गीत की प्रति (प्रिटेड अथवा डिजिटल) उपलब्ध कराना
- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को समाचार प्रेषित करना

तृतीय चरण : 18 जनवरी 2024

- यथासमय कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियां तय करना और टीम से साथ नियमित बैठकें आयोजित कर 18 जनवरी 2024 के मुख्य कार्यक्रम की व्यवस्थाओं को अन्तिम रूप देना
- पहले दिन आयोजन स्थल पर व्यक्तिशः जाकर व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करना
- एक-दो दिन पूर्व प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को समाचार प्रेषित करना व कार्यक्रम में संपादकों व संवाददाताओं को आमंत्रित करना
- कार्यक्रम में क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित करना
- प्रत्येक आयोजन स्थल पर कार्यकर्ता की उपस्थिति सुनिश्चित कर निर्धारित प्रारूप में कार्यक्रम की आयोजना करना
- महासंगान में संभागी बच्चे व बड़े निर्धारित फॉर्म में संकल्प स्वीकार करें, यह व्यवस्था करना
- केन्द्रीय स्तर पर निर्धारित गाइडलाइन के अनुरूप महासंगान कार्यक्रम की फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी करना
- निर्धारित प्रारूप में कार्यक्रम आयोजन की सूचना व डाटा अणुविभा टीम को कार्यक्रम के 2 घण्टे के अन्दर उपलब्ध कराना
- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को फोटो सहित समाचार प्रेषित करना
- फोटो सहित समाचार की एक प्रति अणुविभा टीम को प्रेषित करना

अणुव्रत गीत महासंगान



एक विश्व
एक स्वर
मानव धर्म मुखर

18 जनवरी 2024

एक दिन देश-दुनिया में लाखों लोगों द्वारा
"अणुव्रत गीत" का समूह संगान

केन्द्रीय समन्वय केन्द्र
व संयोजकीय सम्पर्क सूत्र

अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत

- 97372 80171 ■ 93746 13000
- 98254 04433 ■ 93747 26946



श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन

ग्रेटर सूरत। अणुव्रत समिति और जिला शिक्षा विभाग की ओर से 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के उपलक्ष में श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान समारोह व जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन



उधना में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री उदित कुमार ने अपने उद्घोषन में फरमाया कि शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों का विकास किस प्रकार हो, इस पर हमें सोचना चाहिए। बच्चों को पाठ्ययुस्तक के साथ-साथ नैतिकता, सद्व्यवहार व नशामुक्ति के बारे में भी जागृत करना चाहिए।

समारोह में कलेक्टर आयुष ओक, जिला विकास अधिकारी वी. के. वसावा और जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. डी. आर. दरजी ने इस वर्ष सूरत जिला व तालुक स्तर पर चयनित नौ शिक्षकों का सम्मान किया। अणुव्रत समिति ने भी सभी शिक्षकों का मोमेन्टो देकर सम्मानित किया।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल लोढा ने अतिथियों का स्वागत किया व अणुव्रत समिति की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने जीवन विज्ञान व श्वास क्रिया के बारे में बताया।

कार्यक्रम के आयोजन के लिए जिला शिक्षा विभाग की ओर से अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल लोढा, मंत्री संजय बोथरा, अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा व वरिष्ठ श्रावक लक्ष्मीलाल बाफना का साहित्य व शॉल से सम्मान किया। अणुव्रत समिति ने सभी अतिथियों को साहित्य व खेस भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन गुजरात निजी स्कूल संगठन के अध्यक्ष दीपक राजगुरु ने किया। इस अवसर पर 650 शिक्षकों के अलावा महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया, उपसभा प्रभारी लक्ष्मीलाल बाफना, तेरापंथ सभा उधना अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, सूरत सभा अध्यक्ष राजेश मादरेचा, तेयुप अध्यक्ष सचिन जैन, टीपीएफ अध्यक्ष कैलाश झाबक व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

शिक्षक सम्मान समारोह

भिलाई। अणुव्रत समिति एवं पोरवाल चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानंद सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय कैलाश नगर में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता एवं विशेष योगदान के लिए विद्यालय की प्रधानाचार्या शैल तिवारी तथा अन्य श्रेष्ठ शिक्षकों को सम्मानित किया गया। वहाँ 13 विद्यालयों के शिक्षकों का जीवन विज्ञान से संबंधित गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मान किया गया। समारोह में शिक्षकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मोटू चंदा ने किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति की अध्यक्ष रश्मि जैन, कोषाध्यक्ष विजय जैन, महावीर बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष दानमल पोरवाल, सचिव सुरेन्द्र सिंह केम्बो, सहसचिव शम्भूनाथ शाह, कोषाध्यक्ष रामजी साहू तथा संरक्षक भवानी दत्ता उपस्थित रहे।

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

सिलीगुड़ी। अणुव्रत समिति की ओर को मुनिश्री प्रशांत कुमार और मुनिश्री कुमुद कुमार के सान्निध्य में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जूनियर ग्रुप में श्रद्धा महनोत ने पहला, प्रिया



डागा ने दूसरा तथा गोयम बोथरा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। सीनियर ग्रुप में प्रथम स्थान प्रवीणा बंसल, द्वितीय मनीषा डागा और तृतीय स्थान सुरेन्द्र छाजेड़ ने प्राप्त किया। प्रोत्साहन पुरस्कार पूनम कोठारी ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर मुनिश्री कुमुद कुमार ने कहा कि हर व्यक्ति की अपनी-अपनी क्षमता होती है। अपने व्यक्तित्व को और विकसित करने के लिए अपने भीतर की क्षमता को उजागर करें। अपनी कला को निखार देने के लिए उसका अभ्यास करते रहें, प्रयास करते रहें। बोलना बड़ी बात नहीं है। कब, कहाँ, कैसे एवं किस रूप में बोलना है, इसका महत्व होता है। आज आप सभी ने जिन भावनाओं की अभिव्यक्ति दी है, उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करें। प्रतियोगिता की जज विदिशा अग्रवाल ने प्रतिभागियों को साधुवाद दिया। इससे पहले अणुव्रत



समिति अध्यक्ष डिम्पल बोथरा ने विषय के बारे में बताया। प्रतियोगिता का संचालन समिति की कोषाध्यक्ष उमा नौलखा ने किया। समिति की मंत्री सुनीता बैद ने आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने के लिए लगायी प्रदर्शनी

अहमदाबाद। अणुव्रत समिति द्वारा 12 सितंबर को पर्युषण के प्रथम दिन अणुव्रत प्रदर्शनी का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। जन-जन तक अणुव्रत के प्रचार-प्रसार के लिए अणुव्रत के



11 नियमों पर आधारित इस प्रदर्शनी के मुख्य विषय थे - नशामुक्ति, पर्यावरण, सांप्रदायिक सौहार्द, अहिंसा आदि। मुनिश्री कृलदीप कुमार एवं मुनिश्री मुकुल कुमार के मंगलपाठ से प्रदर्शनी की शुरुआत हुई। मुनिश्री मुकुल कुमार ने कहा कि अणुव्रत समिति अहमदाबाद ने भव्य प्रदर्शनी का आयोजन कर अणुव्रत की गूँज को चहुं आयामी बना दिया है। सभी समितियां इसी सक्रियता के साथ कार्य करेंगी तो निश्चित रूप से आचार्य तुलसी का स्वप्न साकार हो जाएगा।

इस अवसर पर अणुव्रत प्रदर्शनी के राष्ट्रीय संयोजक सुरेश बागरेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश धींग, मंत्री डिम्पल श्रीमाल, परामर्शक मोहन कोठारी, अणुव्रत समिति के कार्यकर्ता तथा सैकड़ों श्रावक उपस्थित थे।

अणुव्रत प्रदर्शनी दो दिन शाहीबाग में लगायी गयी, जिसे हजारों लोगों ने देखा। संयोजक विजय छाजेड एवं सागर सालेचा ने इसमें सेवाएं दीं। प्रदर्शनी को सफल बनाने में सह मंत्री अंजू हिरण, संगठन मंत्री मुकेश पोखरणा, सभा सहमंत्री लाड़जी बाफना, महेंद्र एन. चौपड़ा, भावेश हिरण, सागर कोठारी, मनीषा दक, रमेश तलेसरा, ओमप्रकाश बाँठिया, दिनेश बागरेचा आदि का विशेष सहयोग रहा। आभार ज्ञापन पूर्व अध्यक्ष विमल बोरदिया ने किया।

अणुव्रत समिति अहमदाबाद द्वारा 14 सितंबर को पर्युषण के तीसरे दिन अणुव्रत प्रदर्शनी का आयोजन कलतीर्थ प्रीमियम सोसायटी मोटरा कोटेश्वर अहमदाबाद के प्रांगण में किया गया। समणी डॉ. मंजुप्रज्ञा एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा के मंगलपाठ से प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश धींग, मंत्री

डिम्पल श्रीमाल, कोषाध्यक्ष प्रकाश बैद, सहमंत्री अंजू हिरण, अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं व श्रावकों की उपस्थिति में प्रदर्शनी के चित्रों का लोकार्पण किया गया। एलईडी पर अणुव्रत दर्शन के वीडियो के माध्यम से अणुव्रत की संपूर्ण जानकारी प्रदान की गयी। अणुव्रत प्रदर्शनी दो दिन मोटेरा कोटेश्वर में लगायी गयी जिसे हजारों लोगों ने देखा। यहाँ अणुव्रत का एक काउंटर भी लगाया गया जिसमें अणुव्रत मासिक पत्रिका एवम् बच्चों का देश 50 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध करायी गयी तथा आजीवन सदस्यता फॉर्म भरवाये गये।

अणुव्रत समाज के नैतिक उत्थान का उपक्रम : कटारिया

गुवाहाटी। असम के राज्यपाल गुलाबचन्द कटारिया ने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन समाज के चारित्रिक विकास का पथ प्रशस्त



करता है। यह समाज के नैतिक उत्थान का उपक्रम है। राज्यपाल 13 सितंबर को अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया के नेतृत्व में राजभवन पहुँचे प्रतिनिधिमंडल से मुख्यतिब थे। उन्होंने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह तथा अणुव्रत काव्यधारा के बैनर का विमोचन भी किया। डॉ. कुसुम लुनिया ने राज्यपाल को अपनी पुस्तक 'सीक्रेट्स ऑफ हेल्प - द वेजिटरियन वे' भेंट की। प्रतिनिधिमंडल में अणुविभा के असम राज्य प्रभारी छत्तरसिंह चोरडिया, अणुव्रत काव्यधारा के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. धनपत लुनिया, अणुव्रत समिति गुवाहाटी के पूर्व अध्यक्ष बजरंग डोसी आदि शामिल थे।

महिला अधिकारियों को अणुव्रत पत्रिका भेंट

बीकानेर। अभियांत्रिकी महाविद्यालय बीकानेर में विमेन सेल एण्ड इनोवेशन सेल द्वारा आयोजित "विमेन इन एक्शन" कार्यक्रम में बीकानेर की पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम ने कहा कि महिलाएं जागरूक रहकर साइबर क्राइम से बचें। जहाँ तक संभव हो, कानून का सदुपयोग करें। बीएसएफ की प्रथम महिला कॉम्बैट अधिकारी तनुश्री पारीक ने कहा कि समाज लिंगभेद करने के अपने नजरिये को बदले। महिलाएं अब हर क्षेत्र में अग्रणी हैं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के पर्यावरण

जागरूकता अभियान प्रकल्प की राष्ट्रीय संयोजक डॉ. नीलम जैन ने कहा कि नारी ममता, समता व क्षमता का त्रिवेणी संगम है। डॉ. नीलम जैन ने तेजस्विनी गौतम, तनुश्री पारीक व प्रिंसिपल डॉ. मनोज कुरी को 'अणुव्रत' मासिक पत्रिका भेंट की। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ. इन्दू भूरिया, डॉ. रणजीत सिंह, डॉ. चंचल कच्छावा, रजिस्ट्रार डॉ. राजेंद्र सिंह शेखावत, डॉ. रिचा यादव, डॉ. राधा माथुर, डॉ. शिवांगी बिस्सा, डॉ. निशा श्रीवास्तव, डॉ. राखी पारीक आदि उपस्थित थीं।

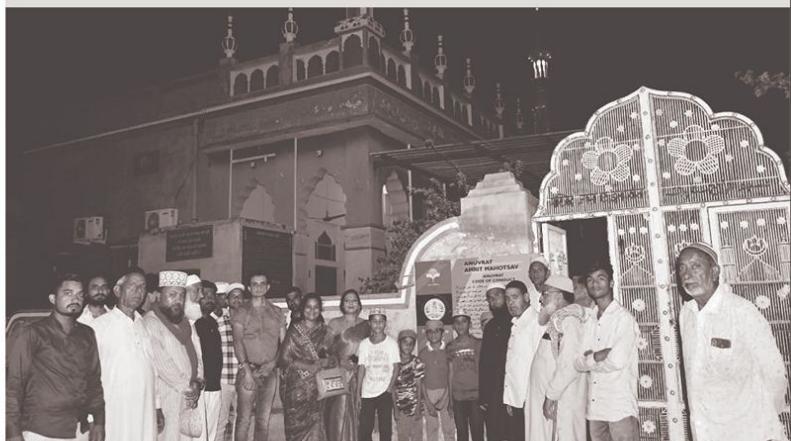
पौधे लगाये, पर्यावरण शुद्धि का लिया संकल्प

चिकमंगलूर। अणुव्रत समिति की ओर से जूनियर कॉमर्स इंटरनेशनल के संयुक्त तत्त्वावधान में तेरापंथ सभा, महिला



मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सहयोग से तालुका ऑफिस से आम्बेडकर भवन तक बॉक्स्थन का आयोजन किया गया। आम्बेडकर भवन पर अणुव्रत समिति की ओर से भरत बरलोटा ने लोगों को पर्यावरण शुद्धि एवं भोजन जूठा न छोड़ने जैसे छोटे-छोटे संकल्प दिलाये। बाद में सबने मिलकर पौधरोपण किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष लालचंद भंसाली, मंत्री गौतम आच्छा, उपाध्यक्ष गौतम नाहर, जैन संघ अध्यक्ष कांतिलाल खिवेंसरा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष ताराचंद सेठिया, महिला मण्डल अध्यक्ष गुणियाबाई नाहर, युवक परिषद् मंत्री राकेश कावड़िया, टीपीएफ अध्यक्ष रक्षा आच्छा आदि उपस्थित थे। पूर्व अध्यक्ष लालचंद भंसाली ने अध्यक्ष मंजूबाई भंसाली की ओर से सबका स्वागत किया।

मस्जिद परिसर में सुशोभित हुई अणुव्रत आचार संहिता



चूरू। अणुव्रत समिति की ओर से 4 सितंबर को उस्मानाबाद कॉलोनी स्थित मस्जिद जामिया इनायत में अणुव्रत आचार संहिता का उर्दू में लिखा बोर्ड लगाकर सभी को अमन-चैन, सौहार्द और भाईचारे का संदेश दिया गया। मस्जिद के इमाम जनाब अख्तर जमील ने बताया कि अणुव्रत के संदेश हर धर्म और संप्रदाय के लिए समान हैं तथा दुनिया में मोहब्बत और एक-दूसरे के प्रति सौहार्द कायम करने के लिए बहुत उपयोगी हैं। इन्हें अपनाकर दुनिया में व्यास बुराइयों को कम किया जा सकता है। उन्होंने अणुव्रत के नियमों को सर्वजन समाज के लिए बहुत उपयोगी बताया। इस मौके पर मस्जिद कमेटी ने अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया एवं अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर मस्जिद कमेटी के असलम खान, गफ्फार खान मेहरी, बाबू खान बिनासर, बाबू खान चौहान, मांगीलाल, बाबू खान रिसालदार, लियाकत खान, आमीन खान, मुबारिक मनियार, सादिक मनियार, यूसुफ भाटी, हाजी अहमद हुसैन, हाजी अल्लादीन खान व मोहम्मद हुसैन उपस्थित थे। समिति अध्यक्ष रचना कोठरी, मंत्री ताहिर खान एडवोकेट ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत लेखक सम्मेलन मुम्बई में

अणुव्रत लेखक मंच की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति अणुव्रत लेखक सम्मेलन का आयोजन 16-17 नवम्बर 2023 को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में नंदनवन, मुम्बई में होगा। सम्मेलन की अधिक जानकारी मंच संयोजक +91 94131 79329 से प्राप्त की जा सकती है।



अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

सर, मैं सांवला हूँ... मेरे सारे साथी
मुझे कालू-कालू कह कर चिढ़ाते हैं।



अगर ये एक ही रंग का होता तो
इतना आकर्षक नहीं लगता।



हम समझ गए सर ,
हम सभी एक इंद्रधनुष की तरह हैं।
हमें रंग और जाति का भेदभाव
नहीं रखना चाहिए।



Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional



International



Akash Ganga®

— *Integrity at work* —

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahmedabad • Bangalore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguri • Surat



ANUVRAT
RNI No. 7013/57
October, 2023

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/09/2023
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month



सादर आमंत्रण

74^{वां}
अणुव्रत
अधिवेशन

सान्निध्य
अणुव्रत अनुशास्ता
आचार्य श्री महाश्रमण

18, 19 व 20 नवम्बर, 2023 | नंदनवन-मुंबई

सम्पर्क सूत्र :

+91 98101 55861, 98921 08601, 9116634512



अणुविभा

आयोजक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - संचय जैन